



अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति की त्रैमासिक मुख पत्रिका

विश्वा

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति सदस्यता शुल्क International Hindi Association Membership Fee

- नियमित आजीवन Regular Life Member:
\$250 USD Rs 16000 INR in Indian subcontinent
- नियमित वार्षिक Regular Annual Member:
\$35 USD Rs 2300 INR in Indian subcontinent
- संबद्ध आजीवन Associate Life Member:
\$150 USD Rs 9500 INR in Indian subcontinent
- संबद्ध वार्षिक Associate Annual Member:
\$25 USD Rs 1600 INR in Indian subcontinent
- संस्था वार्षिक Annual Institutional:
\$50 USD Rs 3300 INR in Indian subcontinent

रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, जिनके लिये विश्वा उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिये मानदेय का कोई प्रावधान नहीं है।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, अमेरिका के लिये
अनुज्ञा बुक्स

1/10206, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032
ई-मेल-anuugyabooks@gmail.com फोन : 09350809192 द्वारा मुद्रित

सभी देशों के लिए विज्ञापन की दरें

सामान्य पूरा पेज (श्वेत-श्याम)	\$ 300 प्रति अंक
सामान्य आधा पेज (श्वेत-श्याम)	\$ 200 प्रति अंक
सामान्य चौथाया पेज (श्वेत-श्याम)	\$ 100 प्रति अंक
भीतरी कवर पेज दो या तीन रंगीन	\$ 500 प्रति अंक
अंतिम (बैक) कवर पेज रंगीन	\$ 600 प्रति अंक

प्रकाशन
Vishwa

— जनवरी, अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर
— The International Hindi Association's
quarterly Publication published in
January, April, July, October.

प्रबन्ध सम्पादक
Managing Editor
निवास

— श्रीमती सुशीला मोहनका
— Mrs. Sushila Mohanka
— 4902 Foote Road, Unit # 37 Medina,
OH 44256

दूरभाष
ईमेल

— 330-598-0642
— managing.editor@hindi.org

प्रधान सम्पादक
Chief Editor

— श्री रमेश जोशी, ओहायो
— Mr. Ramesh Joshi 10046, Parkland
Drive, Twinsburg, OH., USA 44087
— editor@hindi.org

Email
दूरभाष

— (330) 688-4927/91-946-015-5700

उपसम्पादक
Sub-Editor
Email
दूरभाष

— डॉ. सरोज अग्रवाल, ओहायो
— Dr. Saroj Agrawal, OH
— saroj_a@yahoo.com
— (937) 886-9460

उपसम्पादक
Sub-Editor
Email
दूरभाष

— श्रीमती प्रतिभा खंडेलवाल, ओहायो
— Mrs. Pratibha Khandelwal, OH
— prtbha@yahoo.com
— 330-475-7024

उपसम्पादक
Sub-Editor
Email
दूरभाष

— श्री अनिल पुरोहित, कनाडा
— Mr. Anil Purohit, Canada
— pakere@gmail.com
— 1-416-274-6531

उपसम्पादक
Sub-Editor
Email
दूरभाष

— डॉ. जूही समर्पिता, झारखण्ड, भारत
— Dr. Joohee Samarpita
— jooheesamarpita1@gmail.com
— 0657-6642107, 91-94311 11437

अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति International Hindi Association

संस्थापक – डॉ. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह
Founder – Dr. Kunwar Chandraprakash Singh

न्यासी समिति / Board of Trustees, IHA

श्री आलोक मिश्रा (NH) Mr. Alok Misra, Chairperson	603-262-0340	alok.iha@gmail.com
डॉ. रवि प्रकाश सिंह (TN) Dr. Ravi Prakash Singh, Vice-Chairperson	615-785-7888	ngdsdg@aol.com
सुश्री अपर्णा दवे, (MD) Mrs. Aparna Dave	240-401-8166	aparnadave@immigration2us.com
सुश्री सुशीला मोहनका (OH) Mrs. Sushila Mohanka	330-598-0642	sushilam33@hotmail.com
श्री पंकज कुमार (TX) Mr. Pankaj Kumar	+1 972 831 7401	Pankaj@pmam-Corp.com

कार्य समिति / Executive Committee

अध्यक्ष श्री स्वपन धैर्यवान (TX) President Mr. Swapan Dhairyawan	281-382-0348	president@hindi.org
आगामी अध्यक्ष मेजर शेर बहादुर सिंह (NY) President-elect Major Sher Bahadur Singh	718-300-5188	president.elect@hindi.org
सचिव श्री संजीव शर्मा (PA) Secretary Mr. Sanjeev Sharma	724-452-4563	secretary@hindi.org
कोषाध्यक्ष सुश्री किरण खेतान (OH) Treasurer Mrs. Kiran Khaitan	330-622-1377	treasurer@hindi.org
प्रबंध संपादक 'विश्व' सुश्री सुशीला मोहनका (OH) Managing Editor, 'Vishwa' Mrs. Sushila Mohanka	330-598-0642	managing.editor@hindi.org
संयोजिका अ. हि. स. शाखा श्री सुशीला मोहनका (OH) Coordinator IHA Chapter Mrs. Sushila Mohanka	330-598-0642	sushilam33@hotmail.com

निदेशक मंडल के अन्य सदस्य / Other Directors

डॉ. सतीश मिश्र, निवर्तमान अध्यक्ष (MD) Dr. Satish Misra, Imm. Past President	240-252-8244	satish_misra@hotmail.com
सुश्री संगीता पसरीजा (TX) Mrs. Sangeeta Pasrija	281-788-9750	geetap@sbcglobal.net
डॉ. सुमन वरदान (VA) Dr. Suman Vardan	703-581-2410	sumvard@yahoo.com
श्री अशोक सिंह (NY) Mr. Ashok Singh	516-695-5544	ashokgsingh@gmail.com
श्री देव प्रकाश सिंह (TX) Mr. Deo Prakash Singh	972-603-6382	deo.p.singh@gmail.com
श्री संजीव अग्रवाल (GA) Mr. Sanjeev Agarwal	203-442-3120	imsanjeevagarwal@hotmail.com

समितियाँ एवं संयोजन / Committees and Chairs

डॉ. नंदलाल सिंह (TX) Dr. Nandlal Singh	संविधान समिति Constitution & By Laws Committee	972-529-4868	nandlalsingh@msn.com
सुश्री किरण खेतान (OH) Mrs. Kiran Khaitan	हिन्दी शिक्षण Hindi Education	330-622-1377	kirankhaitan@yahoo.com
श्री आलोक मिश्रा (NH) Mr. Alok Misra, Chairperson	कवि-सम्मेलन Kavi Sammelan	603-262-0340	alok.iha@gmail.com

श्री अशोक सिंह (NY) Mr. Ashok Singh	ई-विश्व Electronic Publ. E-Vishwa 516-695-5544	ashokgsingh@gmail.com
.....	वेब साइट Website

सुश्री दिव्या मिश्र (MD) Mrs. Divya Misra	युवा समिति Youth Committee	917-379-7051	divyamishra66@gmail.com
मेजर शेर बहादुर सिंह (NY) Major Sher Bahadur Singh	सदस्यता समिति Membership Committee	718-300-5188	indiagems@aol.com

शाखा संयोजक, Chapter President USA – Phone No - Chapter

डॉ. शैल जैन Dr. Shail Jain	NE, OH	330-421-7528	shailj53@hotmail.com
सुश्री पुष्पा अडवानी Mrs. Pushpa Adwani	Nashville, TN	615-896-0555	nickadvani@yahoo.com
डॉ. राजीव कुमार Dr. Rajiv Kumar	Washington, DC	301-926-2985	kumarrajiv00@gmail.com
सुश्री अनीता सिंघल Mrs. Anita Singhal	Dallas, TX	817-261-9174	anitasinghal@gmail.com
डॉ. के. डी. उपाध्याय Dr. K.D. Upadhyaya	Houston, TX	832-607-3021	drkd@hotmail.com
श्री धर्मपाल सिंह Mr. Dharmपाल Singh	New York, NY	718-795-7758	shiva410@aol.com
डॉ. कल्पना शुक्ला Dr. Kalpana Shukla	New Jersey, NJ	551-697-8703	kalpana_shukla@hotmail.com
डॉ. नीरजा वाजपेयी Dr. Neerja Vajpayee	Syracuse NY	315-445-0713	neerjajeet@gmail.com
.....	Raleigh, NC
.....	Boston, MA
.....	New England
.....	Los Angeles, CA
.....	Austin, TX
.....	Berkeley, CA
.....	Chicago, IL
.....	Columbus, OH
.....	Philadelphia, PA
.....	Rochester, NY

शाखा संयोजक, Chapter President India – Phone No - Chapter

श्रीमती ज्योति नारायण Mrs. Jyoti Narain	Hyderabad	91-9490425534	narainjyoti@gmail.com
डॉ. प्रदीप दीक्षित Dr. Pradeep Dikshit	Kanpur	Uttar Pradesh 91-9415133062	utkarshacademy@gmail.com
डॉ. (प्रो.) रानी श्रीवास्तव Dr. (Prof.) Rani Srivastava	Patna	91-9934836793	dr.rani.srivastava@gmail.com
श्री अशोक लव Mr. Ashok 'Lav'	New Delhi-	Delhi NCR 91-9971010063	kumar1641@gmail.com

अनुक्रम

संपादकीय	लोगन राम खिलौना जाना	5
शाश्वती	अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा – महापंडित राहुल सांकृत्यायन	6
वातायन	काबुलीवाला – रवींद्रनाथ टैगोर	10
कहानी	एक अचम्भा प्रेम – कुसुम खेमानी	14
कविताएँ/गीत/गज़ल	शान्ति से मरूँगा मैं – डॉ. रणजीत	18
	मासूम का सवाल – डॉ. सरिता मेहता	19
	मेरे हिस्से के सन्नाटे – डॉ. हरेन्द्र चाहर	19
	लकड़ी का पालना – सेलिना चौबे	20
	विज्ञान व्रत की गज़लें	22
	गाँधी-दर्शन का वैश्विक विस्तार – संकलन और सौजन्य स्व. उमाकांत मालवीय	23
गुलाब की पंखुड़ियाँ बच्चों का कोना	गुलाब खंडेलवाल	21
	प्रतिभा खंडेलवाल की दो कविताएँ	41
	देश को सजा देंगे – मनजीत सिंह	24
	मेरी भारत माता – श्रुति केसरी	24
आलेख	मानवीय संदर्भों के कवि : संत रैदास – अम्बरीन आफताब	27
	बंधनहीनता : एक नई सोच – मदनलाल शर्मा	29
	दिवाली जैसे त्योहार के स्वरूप को बदलने की जरूरत है – अनिल प्रकाश जोशी	32
	शिक्षा का माध्यम : मातृभाषा – मोहनदास करमचंद गाँधी (अनुवादक : संजीव निगम)	25
	हिंदी के इस्तेमाल के पीछे का सच – उमेश चतुर्वेदी	31
	विश्व साहित्य में दूसरी परंपरा को स्वीकृति – डॉ. नागेन्द्र	34
पुस्तक समीक्षा	गीतों का गज़रा : तुम्हारी अर्चना / लेखकी : अशोक सेकसरिया समीक्षक- मदनलाल शर्मा	38
एकांकी	भाषा बहता नीर – प्रतिभा खंडेलवाल	35
मञ्जे-मञ्जे में	यथार्थ जी घर पर नहीं हैं – सुधीश पचौरी	46
सांस्कृतिक-साहित्यिक हलचल	कानपुर शाखा द्वारा कविगोष्ठी और सम्मान समारोह	45
	बिहार झारखण्ड शाखा में पुस्तक विमोचन	42
	नार्थ ईस्ट ओहायो शाखा में हिंदी दिवस समारोह	44
	ओवल कार्यालय में दिवाली का पहला दिया	47
विविध	संयुक्त राष्ट्र संघ में दिवाली / 45	जीवन की पाठशाला / 30	
	बंगलुरु से बर्मिंघम / 13	पराए देश-परिवेश में अपनी भाषा / 33	
	सबसे बड़ी पत्ता गोभी / 28	हमारे गौरव / 40	
	सबसे सुन्दर लिखावट / 41	अस्तित्व खोती भाषाएँ / 40	
	कुछ हल्का फुल्का / 46	आपने लिखा है / 37	
	अद्भुत लगन / 9	भारतवंशियों का जलवा / 9	
	भारत मूल के किशोर वैज्ञानिक / 43	कानपुर शाखा द्वारा कवि गोष्ठी और सम्मान समारोह / 45	
	एक उत्साहवर्द्धक शुरुआत / 26	एक लगन का नाम / 31	
	कहकशाँ पुरस्कृत / 33	श्रद्धांजलि – बेकल उत्साही / 20	
अध्यक्ष का सन्देश		48



अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति

International Hindi Association

A NON-PROFIT ORGANIZATION • 2129 Stratford Road, Murfreesboro, TN 37129
• TAXID 58-1988753 • Founded by Late Dr. Kunwar Chandraprakash Singh in 1980

MEMBERSHIP FORM सदस्यता आवेदन-पत्र

(PLEASE PRINT IN CAPITAL LETTERS)

PASSPORT SIZE
PHOTOGRAPH

उपनाम नाम Last Name

प्रथम नाम First Name

जीवनसाथी उपनाम Spouse's Last Name:

प्रथम नाम First

पता Address:

शहर City:प्रांत State:कोड Postal Code:

राष्ट्र Country:

दूरभाष Home Phone : Work Phone: Mobile Phone:

ई-मेल E-mail:

Introduced by: Name.....Phone.....Email.....

कृपया कोई एक विकल्प चुनें Please check one of the following :

नियमित आजीवन Regular Life Member:	<input type="checkbox"/> \$250 USD	<input type="checkbox"/> Rs 16000 INR in Indian subcontinent
नियमित वार्षिक Regular Annual Member:	<input type="checkbox"/> \$35 USD	<input type="checkbox"/> Rs 2300 INR in Indian subcontinent
संबद्ध आजीवन Associate Life Member:	<input type="checkbox"/> \$150 USD	<input type="checkbox"/> Rs 9500 INR in Indian subcontinent
संबद्ध वार्षिक Associate Annual Member:	<input type="checkbox"/> \$25 USD	<input type="checkbox"/> Rs 1600 INR in Indian subcontinent
संस्था वार्षिक Annual Institutional:	<input type="checkbox"/> \$50 USD	<input type="checkbox"/> Rs 3300 INR in Indian subcontinent

Please make check or bank draft payable to '**International Hindi Association**' in USD and mail to:

Kiran Khaitan, 203 Cheltenham Lane, Munroe Falls, OH 44262, USA; Phone: (330) 622-1377; Email:treasurer@hindi.org

In India, please make check or bank draft payable to '**International Hindi Association, India chapter**' and mail to:

Mr. Shiv Kumar Meharia, S.K. Agencies, E5 City Center, Bokaro Steel City, Jharkhand 827004; Phone:+919431127573;

Email: treasurerindia@hindi.org

Bank Name:Check / Draft No.....Date

The membership provides the following benefits:

1. A subscription of widely acclaimed quarterly literary magazine Vishwa published from the U.S. in Jan, April, July and Oct.
2. Discounts on IHA products and services such as Hindi CDs, Kavi Sammelan, Seminars, Conferences, and Youth-Clubs.
3. Rewarding volunteer opportunities in many valuable programs in the USA and India.
4. Access to Member's-only information, and prior notification of events.
5. **Regular Membership** provides right to vote on matters of the Association after a waiting period of sixty days.
6. **Associate Membership** provides all the benefit except the voting right. For details, go to the www.hindi.org.

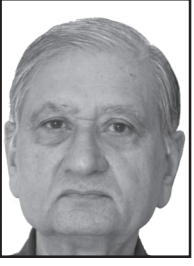
The Board of Directors maintain the right to deny, suspend or cancel membership of any individuals who fail to abide by the Articles of Incorporation or the Bylaws or whose activities are deemed detrimental to the proper functioning of the Association. The Board is not obligated to refund any unused portion of the membership dues for cancelled membership.

'Vishwa' welcomes original writings in Hindi from all quarters. Writings dealing with immigrant experiences are especially welcome. For further information, or to submit your writings for consideration, please contact: The Editor, Mr. Ramesh Joshi, 10046 Parkland Drive, Twinsburg, OH 44087, USA. Phone USA +1 (330) 688-4927, India +91 94601 55700; Email: editor@hindi.org

Visit www.hindi.org to contact us or for additional information.

For Official Use only:

Assigned Member Id:SignatureREV JULY2016



संपादकीय

लोगन राम खिलौना जाना

कोई भी रचनाकार अपनी रचना का सन्देश या कविता का मंतव्य लिख कर नहीं जाता। यह भी ठीक है कि उस पर अपने काल और परिवेश की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं का प्रभाव भी रहता है लेकिन वह अपनी कल्पना और बिम्ब विधान से जिस मानव-मन की असीमित और नित नूतन किन्तु साथ ही पुरातन दुनिया में भी पाठक को ले जाता है। इसलिए हर पाठक उसमें अपने अनुसार कल्पना की गुंजाइश पा जाता है और अपने अनुसार उसके अर्थ से साक्षात्कार करता है और आनंदित होता है। इसी अर्थ में हर श्रेष्ठ रचना किसी काल विशेष की होते हुए ही कालजयी और कालातीत भी होती है।

हो सकता है कि हम अपने प्राचीन ग्रंथों के काल निर्धारण में कुछ भूल कर जाएँ या उससे संबंधित विवाद में उलझ जाएँ लेकिन यह भी सच है कि बहुत समय तक उन्होंने हमारे मन को गढ़ा है, रचा है और आज भी किसी न किसी रूप में हमारे अवचेतन को साहित्य और सृजन के वे रूप प्रभावित करते हैं। हम यहाँ उस सृजन और उसके पठन की उस वर्ग की दृष्टि से बात कर रहे हैं जो निरपेक्ष और निःस्वार्थ है, किसी भी पूर्वाग्रह को लेकर नहीं चलता है। पढ़ते और उसका आनंद लेते समय उसके मन में कहीं भी, किसी भी प्रकार का ओछापन नहीं होता। वह विशाल हृदय और विराट चिंतन के साथ सृजन के इस अतल जल में उतरता है।

आज इस दृष्टि से न तो लोग उस प्राचीन सृजन को पढ़ रहे हैं और न ही उसका आनंद ले रहे हैं। आज तो अधिकतर तथाकथित पाठक पहले से कोई न कोई बहुत ओछी अवधारणा लेकर उन्हें पढ़ना शुरू करते हैं और आनंद और मानव-मन के विचित्र लोक में उतरने की बजाय कोई न कोई पूर्व नियोजित अर्थ या निष्कर्ष लेकर आते हैं। जब धर्म और राजनीति का गठजोड़ हो जाता है जो कि प्रायः हो ही जाता है, तो फिर उसकी जद में सभी धर्म ही नहीं, धर्म, नीति, मानव-जीवन और चिंतन का सभी पुराना सृजन भी जाता है।

आजकल ऐसे लोगों द्वारा कोई नया सृजन कर सकने की कमी को पुराने सृजन के साथ छेड़छाड़ करके पूरा किया जाता है। अभी किसी अक्षत वर्मा की महाभारत के पात्रों को प्राचीन वेशभूषा में दिखाते हुए द्रौपदी के बँटवारे के द्वंद्व को बड़े फूहड़ और मजाकिया ढंग से दिखाया गया है जो किसी भी रूप में हमें उस समस्या की गहराई तक नहीं ले जा सकता। वह युधिष्ठिर को मात्र एक घटिया जुआरी तक दिखाने में ही विश्वास करता है। खैरियत है कि इसमें कृष्ण नहीं है अन्यथा उसकी भी दुर्गति कर दी जाती। बहुत कुछ ऐसा है जो पढ़ने और कल्पना का ही विषय हो सकता है और कुछ मात्र दिखाने का ही। इन दोनों विधाओं का अपना महत्त्व है और अपनी-

अपनी सीमाएँ भी। लगता है, आजकल दोनों विधाएँ अपनी-अपनी क्षमताओं का सदुपयोग करने की बजाय एक दूसरे का अतिक्रमण करने में अपना विकास और वर्चस्व खोज रही हैं।

अभी एक और चुनावी विज्ञापन आया है जिसमें वामन जयंती पर लोगों को बधाई देते हुए एक पोस्टर प्रकाशित किया है जिसमें वामन को बलि के सिर पर पैर रखे हुए दिखाया गया है और साथ में खुद का फोटो भी है इन दोनों से बड़ा। मतलब यह इन दोनों के बहाने खुद को किसी न किसी रूप में स्थापित करने का प्रयत्न है। यह किसी भी तरह केरल के लोगों की खुशी में शामिल होने का उपक्रम तो कतई नहीं है। आजकल न तो विद्यालयों में वामन जयंती मनाई गई, न ही कभी वामन जयंती की छुट्टी हुई। फिर यह वामन जयंती कहाँ से ले आए? क्या इस अवसर पर ओणम की बधाई नहीं दी जा सकती थी? और चित्र भी क्या पारंपरिक वेशभूषा में सजी धजी, फूलों की रंगोली बनाती महिलाओं का नहीं हो सकता था? यह कहीं भी केरल के लोगों की खुशी में शामिल होने के इरादे से किया गया विज्ञापन नहीं है। इसके बहाने केरल के समरस जीवन में वैमनस्य और व्यर्थ का कोई विवाद फैलाने का षडयंत्र अधिक नजर आता है।

यह ठीक है कि कथा में बलि का पाताल में चले जाने का वर्णन कथा में आता है लेकिन कथा में आना और इस प्रकार उसके सिर पर वामन का पैर रखे चित्र, हो सकता है उन्हें अपने राजा, जिसकी वे पूरे वर्ष भर प्रतीक्षा करते हैं और उसकी प्रसन्नता के लिए अपनी खुशियों और वैभव का प्रदर्शन करते हैं कि उनका राजा उन्हें देखकर प्रसन्न हो तो ऐसे में उन्हें बधाई देने का यह तरीका उचित नहीं कहा जा सकता। इससे पहले उत्तर प्रदेश में एक पार्टी के अध्यक्ष और तथाकथित मुख्यमंत्री पद के प्रत्याशी को कृष्ण के रूप में चीर बढ़ाते हुए दिखाया गया और अन्य पार्टियों के नेताओं को जनता रूपी द्रौपदी का चीरहरण करते हुए दिखाया गया था।

अपने छोटे और घटिया स्वार्थों के लिए प्राचीन प्रतीकों और आस्था बिन्दुओं का दुरुपयोग करने पर चुनाव आयोग और अदालत की ओर से प्रतिबंध होना चाहिए। इसी तरह से प्राचीन पुस्तकों और व्यक्तियों पर भी बात हो तो वह कानूनी और अकादमिक स्तर पर होनी चाहिए। किसी भी ऐरे-गैरे को इनका अपने क्षुद्र स्वार्थों के लिए मनमाना दुरुपयोग करने की छूट नहीं होनी चाहिए। वे हमारे अध्ययन और चिंतन मनन के विषय होने चाहिए न कि घटिया मनोरंजन और स्वार्थ-सिद्धि के। ऐसे ही बहुत से विज्ञापन और तमाशे समय-समय पर होते रहते हैं जैसे धोनी को विष्णु के रूप में दिखाना, एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के सी.ई.ओ. को विष्णु के रूप में दिखाना या अभी एक ऑनलाइन सामान बेचने वाली कंपनी 'मिन्त्रा' ने जन्माष्टमी पर अपने विज्ञापन में कृष्ण का उपयोग किया था। जब हमारे राजनीतिक और व्यापारी अपने फायदे के लिए इनका तमाशा बनाएँगे तो किसी और को भी यह तमाशा बनाने से हम नहीं रोक सकते।

ऐसे कृत्य व्यर्थ में शांत पानी में पत्थर फेंकना है।

ऐसे लोगों के लिए ही कबीर जी ने कहा था—

लोगन राम खिलौना जाना।

अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा

(घुमक्कड़ शास्त्र पुस्तक की भूमिका)



महापंडित राहुल सांकृत्यायन

(एक सौ पच्चीसवें जन्म दिन (9 अप्रैल 1893) पर सादर स्मरण)

संस्कृत से ग्रंथ को शुरू करने के लिए पाठकों को रोष नहीं होना चाहिए। आखिर हम शास्त्र लिखने जा रहे हैं, फिर शास्त्र की परिपाटी को तो मानना ही पड़ेगा। शास्त्रों में जिज्ञासा ऐसी चीज के लिए होनी बतलाई गई है, जोकि श्रेष्ठ तथा व्यक्ति और समाज सबके लिए परम हितकारी हो। व्यास ने अपने शास्त्र में ब्रह्म को सर्वश्रेष्ठ मानकर उसे जिज्ञासा का विषय बनाया। व्यास-शिष्य जैमिनी ने धर्म को श्रेष्ठ माना। पुराने ऋषियों से मतभेद रखना हमारे लिए पाप की वस्तु नहीं है, आखिर छः शास्त्रों के रचयिता छः आस्तिक ऋषियों में भी आधों ने ब्रह्म को धत्ता बता दिया है। मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़। घुमक्कड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नहीं हो सकता। कहा जाता है, ब्रह्म ने सृष्टि को पैदा, धारण और नाश करने का जिम्मा अपने ऊपर लिया है। पैदा करना और नाश करना दूर की बातें हैं, उनकी यथार्थता सिद्ध करने के लिए न प्रत्यक्ष प्रमाण सहायक हो सकता है, न अनुमान ही। हाँ, दुनिया के धारण की बात तो निश्चय ही न ब्रह्म के ऊपर है, न विष्णु के और न शंकर ही के ऊपर। दुनिया-दुःख में हो चाहे सुख में- सभी समय यदि सहारा पाती है, तो घुमक्कड़ों की ही ओर से। प्राकृतिक आदिम मनुष्य परम घुमक्कड़ था। खेती, बागबानी तथा घर-द्वार से मुक्त वह आकाश के पक्षियों की भाँति पृथ्वी पर सदा विचरण करता था, जाड़े में यदि इस जगह था तो गर्मियों में वहाँ से दो सौ कोस दूर।

आधुनिक काल में घुमक्कड़ों के काम की बात कहने की आवश्यकता है, क्योंकि लोगों ने घुमक्कड़ों की कृतियों को चुरा के उन्हें गला फाड़-फाड़कर अपने नाम से प्रकाशित किया, जिससे दुनिया जानने लगी कि वस्तुतः तेली के कोल्हू के बैल ही दुनिया में सब कुछ करते हैं। आधुनिक विज्ञान में चार्ल्स डार्विन का स्थान बहुत ऊँचा है। उसने प्राणियों की उत्पत्ति और मानव-वंश के विकास पर ही अद्वितीय खोज नहीं की, बल्कि सारे ही विज्ञानों को उससे सहायता मिली। कहना चाहिए, कि सभी विज्ञानों को डार्विन के प्रकाश में दिशा बदलनी पड़ी। लेकिन क्या डार्विन अपने महान

आविष्कारों को कर सकता था, यदि उसने घुमक्कड़ों का व्रत नहीं लिया होता?

मैं मानता हूँ, पुस्तकें भी कुछ-कुछ घुमक्कड़ों का रस प्रदान करती हैं, लेकिन जिस तरह फोटो देखकर आप हिमालय के देवदार के गहन वनों और श्वेत हिम-मुकुटित शिखरों के सौन्दर्य, उनके रूप, उनके गंध का अनुभव नहीं कर सकते, उसी तरह यात्रा-कथाओं से आपकी उस बूँद से भेंट नहीं हो सकती, जो कि एक घुमक्कड़ को प्राप्त होती है। अधिक-से-अधिक यात्रा-पाठकों के लिए यही कहा जा सकता है, कि दूसरे अन्धों की अपेक्षा उन्हें थोड़ा आलोक मिल जाता है और साथ ही ऐसी प्रेरणा भी मिल सकती है, जो स्थायी नहीं तो कुछ दिनों के लिए उन्हें घुमक्कड़ बना सकती है। घुमक्कड़ क्यों दुनिया की सर्वश्रेष्ठ विभूति है? इसीलिए कि उसीने आज की दुनिया को बनाया है। यदि आदिम-पुरुष एक जगह नदी या तालाब के किनारे गर्म मुल्लक में पड़े रहते, तो वह दुनिया को आगे नहीं ले जा सकते थे। आदमी की घुमक्कड़ों ने बहुत बार खून की नदियाँ बहाई हैं, इसमें संदेह नहीं, और घुमक्कड़ों से हम हर्गिज नहीं चाहेंगे कि वह खून के रास्ते को पकड़ें, किंतु अगर घुमक्कड़ों के काफिले न आते-जाते, तो सुस्त मानव-जातियाँ सो जातीं और पशु से ऊपर नहीं उठ पातीं। आदिम घुमक्कड़ों में से आर्यों, शकों, हूणों ने क्या-क्या किया, अपने खूनी पथों द्वारा मानवता के पथ को किस तरह प्रशस्त किया, इसे इतिहास में हम उतना स्पष्ट वर्णित नहीं पाते, किंतु मंगोल-घुमक्कड़ों की करामातों को तो हम अच्छी तरह जानते हैं। बारूद, तोप, कागज, छापाखाना, दिशा सूचक यंत्र, चश्मा यही चीजें थीं, जिन्होंने पश्चिम में विज्ञान-युग का आरंभ कराया और इन चीजों को वहाँ ले जाने वाले मंगोल घुमक्कड़ थे।

कोलंबस और वास्को द-गामा दो घुमक्कड़ ही थे, जिन्होंने पश्चिमी देशों के आगे बढ़ने का रास्ता खोला। अमेरिका अधिकतर निर्जन-सा पड़ा था। एशिया के कूप-मंडूकों को घुमक्कड़-धर्म की महिमा भूल गई, इसलिए उन्होंने अमेरिका पर अपनी झंडी नहीं गाड़ी। दो शताब्दियों पहले तक आस्ट्रेलिया खाली पड़ा था। चीन और भारत को सभ्यता का बड़ा गर्व है, लेकिन इनको इतनी अकल नहीं आई कि जाकर वहाँ अपना झंडा गाड़ आते। आज अपने 40-50 करोड़ की जनसंख्या के भार से भारत और चीन की भूमि दबी जा रही है और आस्ट्रेलिया में एक करोड़ भी आदमी नहीं हैं। आज एशियायियों के लिए आस्ट्रेलिया का द्वार बंद है, लेकिन दो सदी पहले वह हमारे हाथ की चीज थी। क्यों भारत और चीन आस्ट्रेलिया की अपार संपत्ति और अमित भूमि से वंचित रह गये? इसीलिए कि वह घुमक्कड़-धर्म से विमुख थे, उसे भूल चुके थे।

हाँ, मैं इसे भूलना ही कहूँगा, क्योंकि किसी समय भारत और चीन ने बड़े-बड़े नामी घुमक्कड़ पैदा किये। वे भारतीय घुमक्कड़ ही थे, जिन्होंने दक्षिण-पूर्व में लंका, बर्मा, मलाया, यवद्वीप, स्या, कंबोज, चंपा, बोर्नियो और सेलीबीज ही नहीं, फिलिपाईन तक का धावा मारा था और एक समय तो जान पड़ा कि न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया भी

बृहत्तर भारत का अंग बनने वाले हैं, लेकिन कूप-मंडूकता तेरा सत्यानाश हो! इस देश के बुद्धों ने उपदेश करना शुरू किया कि समुंद्र के खारे पानी और हिंदू-धर्म में बड़ा वैर है, उसके छूने मात्र से वह नमक की पुतली की तरह गल जाएगा। इतना बतला देने पर क्या कहने की आवश्यकता है कि समाज के कल्याण के लिए घुमक्कड़-धर्म कितनी आवश्यक चीज है? जिस जाति या देश ने इस धर्म को अपनाया, वह चारों फलों का भागी हुआ और जिसने इसे दुराया, उसके लिए नरक में भी ठिकाना नहीं। आखिर घुमक्कड़-धर्म को भूलने के कारण ही हम सात शताब्दियों तक धक्का खाते रहे, ऐरे-गैरे जो भी आए, हमें चार लात लगाते गये।

शायद किसी को संदेह हो कि मैंने इस शास्त्र में जो युक्तियाँ दी हैं, वह सभी लौकिक तथा शास्त्र-बाह्य हैं। अच्छा तो धर्म से प्रमाण लीजिए। दुनिया के अधिकांश धर्मनायक घुमक्कड़ रहे। धर्माचार्यों में आचार-विचार, बुद्धि और तर्क तथा सहृदयता में सर्वश्रेष्ठ बुद्ध घुमक्कड़-राज थे। यद्यपि वह भारत से बाहर नहीं गये, लेकिन वर्षा के तीन मासों को छोड़कर एक जगह रहना वह पाप समझते थे। वह अपने ही घुमक्कड़ नहीं थे, बल्कि आरंभ ही में अपने शिष्यों को उन्होंने कहा था— “चरथ भिक्खघवे!” जिसका अर्थ है— भिक्षुओ! घुमक्कड़ी करो। बुद्ध के भिक्षुओं ने अपने गुरु की शिक्षा को कितना माना, क्या इसे बताने की आवश्यकता है? क्या उन्होंने पश्चिम में मकदूनिया तथा मिश्र से पूरब में जापान तक, उत्तर में मंगोलिया से लेकर दक्षिण में बाली और बांका के द्वीपों तक को रौंदकर रख नहीं दिया? जिस बृहत्तर-भारत के लिए हरेक भारतीय को उचित अभिमान है, क्या उसका निर्माण इन्हीं घुमक्कड़ों की चरण-धूलि ने नहीं किया? केवल बुद्ध ने ही अपनी घुमक्कड़ी से प्रेरणा नहीं दी, बल्कि घुमक्कड़ों का इतना जोर बुद्ध से एक दो शताब्दियों पूर्व ही था, जिसके ही कारण बुद्ध जैसे घुमक्कड़-राज इस देश में पैदा हो सके। उस वक्त पुरुष ही नहीं, स्त्रियाँ तक जम्बू-वृत्त की शाखा ले अपनी प्रखर प्रतिभा का जौहर दिखातीं, बाद में कूपमंडूकों को पराजित करती सारे भारत में मुक्त होकर विचरा करतीं थीं।

कोई-कोई महिलाएँ पूछती हैं— क्या स्त्रियाँ भी घुमक्कड़ी कर सकती हैं, क्या उनको भी इस महाव्रत की दीक्षा लेनी चाहिए? इसके बारे में तो अलग अध्याय ही लिखा जाने वाला है, किंतु यहाँ इतना कह देना है, कि घुमक्कड़-धर्म ब्राह्मण-धर्म जैसा संकुचित धर्म नहीं है, जिसमें स्त्रियों के लिए स्थान नहीं हो। स्त्रियाँ इसमें उतना ही अधिकार रखती हैं, जितना पुरुष। यदि वह जन्म सफल करके व्यक्ति और समाज के लिए कुछ करना चाहती हैं, तो उन्हें भी दोनों हाथों इस धर्म को स्वीकार करना चाहिए। घुमक्कड़-धर्म छुड़ाने के लिए ही पुरुष ने बहुत से बंधन नारी के रास्ते में लगाये हैं। बुद्ध ने सिर्फ पुरुषों के लिए घुमक्कड़ी करने का आदेश नहीं दिया, बल्कि स्त्रियों के लिए भी उनका वही उपदेश था।

भारत के प्राचीन धर्मों में जैन धर्म भी है। जैन धर्म के प्रतिष्ठापक श्रमण महावीर कौन थे? वह भी घुमक्कड़-राज थे। घुमक्कड़-धर्म

के आचरण में छोटी-से-बड़ी तक सभी बाधाओं और उपाधियों को उन्होंने त्याग दिया था— घर-द्वार और नारी-संतान ही नहीं, वस्त्र का भी वर्जन कर दिया था। “करतलभिक्षा, तरुतल वास” तथा दिग-अम्बर को उन्होंने इसीलिए अपनाया था, कि निर्द्वंद्व विचरण में कोई बाधा न रहे। श्वेताम्बर-बंधु दिगम्बर कहने के लिए नाराज न हों। वस्तुतः हमारे वैशालिक महान घुमक्कड़ कुछ बातों में दिगम्बरों की कल्पना के अनुसार थे और कुछ बातों में श्वेताम्बरों के उल्लेख के अनुसार। लेकिन इनमें तो दोनों संप्रदाय और बाहर के मर्मज्ञ भी सहमत हैं, कि भगवान् महावीर दूसरी तीसरी नहीं, प्रथम श्रेणी के घुमक्कड़ थे। वह आजीवन घूमते ही रहे। वैशाली में जन्म लेकर विचरण करते ही पावा में उन्होंने अपना शरीर छोड़ा। बुद्ध और महावीर से बढ़कर यदि कोई त्याग, तपस्या और सहृदयता का दावा करता है, तो मैं उसे केवल दम्भी कहूँगा। आजकल कुटिया या आश्रम बनाकर तेली के बैल की तरह कोल्हू से बँधे कितने ही लोग अपने को अद्वितीय महात्मा कहते हैं या चेलों से कहलवाते हैं, लेकिन मैं तो कहूँगा, घुमक्कड़ी को त्यागकर यदि महापुरुष बना जाता, तो फिर ऐसे लोग गली-गली में देखे जाते। मैं तो जिज्ञासुओं को खबरदार कर देना चाहता हूँ, कि वह ऐसे मुलम्मे वाले महात्माओं और महापुरुषों के फेर से बचें रहें। वे स्वयं तेली के बैल तो हैं ही, दूसरों को भी अपने ही जैसा बना रखेंगे।

बुद्ध और महावीर जैसे सृष्टिकर्ता ईश्वर से इनकारी महापुरुषों की घुमक्कड़ी की बात से यह नहीं मान लेना होगा, कि दूसरे लोग ईश्वर के भरोसे गुफा या कोठरी में बैठकर सारी सिद्धियाँ पा गये या पा जाते हैं। यदि ऐसा होता, तो शंकराचार्य, साक्षात् ब्रह्मस्वरूप थे, क्यों भारत के चारों कानों की खाक छानते फिरे? शंकर को शंकर किसी ब्रह्मा ने नहीं बनाया, उन्हें बड़ा बनाने वाला था यही घुमक्कड़ी घर्म। शंकर बराबर घूमते रहे— आज केरल देश में थे तो कुछ ही महीने बाद मिथिला में, और अगले साल काश्मीर या हिमालय के किसी दूसरे भाग में। शंकर तरुणाई में ही शिवलोक सिंधार गये, किंतु थोड़े से जीवन में उन्होंने सिर्फ तीन भाष्य ही नहीं लिखे, बल्कि अपने आचरण से अनुयायियों को वह घुमक्कड़ी का पाठ पढ़ा गये, कि आज भी उसके पालन करने वाले सैकड़ों मिलते हैं। वास्को-द-गामा के भारत पहुँचने से बहुत पहले शंकर के शिष्य मास्को और योरुप तक पहुँचे थे। उनके साहसी शिष्य सिर्फ भारत के चार धामों से ही सन्तुष्टि नहीं थे, बल्कि उनमें से कितनों ने जाकर बाकू (रूस) में धूनी रमाई। एक ने पर्यटन करते हुए वोल्गो तट पर निज्नी नोवोग्राद के महामेल को देखा। फिर क्या था, कुछ समय के लिए वहीं डट गया और उसने ईसाइयों के भीतर कितने ही अनुयायी पैदा कर लिए, जिनकी संख्या भीतर-ही-भीतर बढ़ती इस शताब्दी के आरंभ में कुछ लाख तक पहुँच गई थी।

रामानुज, मध्वाचार्य और दूसरे वैष्णवाचार्यों के अनुयायी मुझे क्षमा करें, यदि मैं कहूँ कि उन्होंने भारत में कूप-मंडूकता के प्रचार में बड़ी सरगर्मी दिखाई। भला हो, रामानंद और चैतन्य, का, जिन्होंने कि पंक से पंकज बनकर आदिकाल से चले आते महान घुमक्कड़

धर्म की फिर से प्रतिष्ठापना की, जिसके फलस्वरूप प्रथम श्रेणी के तो नहीं किंतु द्वितीय श्रेणी के बहुत-से घुमक्कड़ उनमें भी पैदा हुए। ये बेचारे बाकू की बड़ी ज्वालामाई तक कैसे जाते, उनके लिए तो मानसरोवर तक पहुँचना भी मुश्किल था। अपने हाथ से खाना बनाना, मांस-अंडे से छू जाने पर भी धर्म का चला जाना, हाड़-तोड़ सर्दी के कारण हर लघुशंका के बाद बर्फीले पानी से हाथ धोना और हर महाशंका के बाद स्नान करना तो यमराज को निमन्त्रण देना होता, इसीलिए बेचारे फूँक फूँककर ही घुमक्कड़ी कर सकते थे। इसमें किसे उज्र हो सकता है, कि शैव हो या वैष्णव, वेदान्तीक हो या सदान्ती, सभी को आगे बढ़ाया केवल घुमक्कड़-धर्म ने।

महान घुमक्कड़-धर्म, बौद्ध धर्म का भारत से लुप्त होना क्या था, तब से कूप-मंडूकता का हमारे देश में बोलबाला हो गया। सात शताब्दियाँ बीत गईं, और इन सातों शताब्दियों में दासता और परतंत्रता हमारे देश में पैर तोड़कर बैठ गई, यह कोई आकस्मिक बात नहीं थी। लेकिन समाज के अगुओं ने चाहे कितना ही कूप-मंडूक बनाना चाहा, लेकिन इस देश में माई-के-लाल जब-तब पैदा होते रहे, जिन्होंने कर्मपथ की ओर संकेत किया। हमारे इतिहास में गुरु नानक का समय दूर का नहीं है, लेकिन अपने समय के वह महान घुमक्कड़ थे। उन्होंने भारत-भ्रमण को ही पर्याप्त नहीं समझा और ईरान और अरब तक का धावा मारा। घुमक्कड़ी किसी बड़े योग से कम सिद्धिदायिनी नहीं है, और निर्भीक तो वह एक नम्बर का बना देती है। घुमक्कड़ नानक मक्के में जाके काबा की ओर पैर फैलाकर सो गये, मुल्लों, में इतनी सहिष्णुता होती तो आदमी होते। उन्होंने एतराज किया और पैर पकड़ के दूसरी ओर करना चाहा। उनको यह देखकर बड़ा अचरज हुआ कि जिस तरफ घुमक्कड़ नानक का पैर घूम रहा है, काबा भी उसी ओर चला जा रहा है। यह है चमत्कार! आज के सर्वशक्तिमान, किंतु कोठरी में बंद महात्माओं में है कोई ऐसा, जो नानक की तरह हिम्मत और चमत्कार दिखलाए?

दूर शताब्दियों की बात छोड़िए, अभी शताब्दी भी नहीं बीती, इस देश से स्वामी दयानंद को विदा हुए। स्वामी दयानंद को ऋषि दयानंद किसने बनाया? घुमक्कड़ी धर्म ने। उन्होंने भारत के अधिक भागों का भ्रमण किया, पुस्तक लिखते, शास्त्रार्थ करते वह बराबर भ्रमण करते रहे। शास्त्रों को पढ़कर काशी के बड़े-बड़े पंडित महा-महा-मंडूक बनने में ही सफल होते रहे, इसलिए दयानंद को मुक्त-बुद्धि और तर्क-प्रधान बनाने का कारण शास्त्रों से अलग कहीं ढूँढ़ना होगा। और वह है उनका निरन्तर घुमक्कड़ी धर्म का सेवन। उन्होंने समुद्र यात्रा करने, द्वीप-द्वीपान्तरों में जाने के विरुद्ध जितनी थोथी दलीलें दी जाती थीं, सबको चिंदी-चिंदी उड़ा दिया और बतलाया कि मनुष्य स्थावर वृत्त नहीं है, वह जंगम प्राणी है। चलना मनुष्य का धर्म है, जिसने इसे छोड़ा वह मनुष्य होने का अधिकारी नहीं है।

बीसवीं शताब्दी के भारतीय घुमक्कड़ों की चर्चा करने की आवश्यकता नहीं। इतना लिखने से मालूम हो गया होगा कि संसार में यदि कोई अनादि सनातन धर्म है, तो वह घुमक्कड़ धर्म है। लेकिन

वह कोई संकुचित संप्रदाय नहीं है, वह आकाश की तरह महान है, समुद्र की तरह विशाल है। जिन धर्मों ने अधिक यश और महिमा प्राप्त की है, वह केवल घुमक्कड़ धर्म ही के कारण। प्रभु ईसा घुमक्कड़ थे, उनके अनुयायी भी ऐसे घुमक्कड़ थे, जिन्होंने ईसा के संदेश को दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाया। यहूदी पैगम्बरों ने घुमक्कड़ी धर्म को भुला दिया, जिसका फल शताब्दियों तक उन्हें भोगना पड़ा। उन्होंने अपने जान चूल्हे से सिर निकालना नहीं चाहा। घुमक्कड़-धर्म की ऐसी भारी अवहेलना करने वाले की जैसी गति होनी चाहिए वैसी गति उनकी हुई। चूल्हा हाथ से छूट गया और सारी दुनिया में घुमक्कड़ी करने को मजबूर हुए, जिसने आगे उन्हें मारवाड़ी सेठ बनाया, या यों कहिए कि घुमक्कड़ी-धर्म की एक छींट पड़ जाने से मारवाड़ी सेठ भारत के यहूदी बन गये। जिसने इस धर्म की अवहेलना की, उसे रक्त के आँसू बहाने पड़े। अभी इन बेचारों ने बड़ी कुर्बानी के बाद और दो हजार वर्ष की घुमक्कड़ी के तजर्बे के बल पर फिर अपना स्थान प्राप्त किया। आशा है स्थान प्राप्त करने से वह चूल्हों में सिर रखकर बैठने वाले नहीं बनेंगे। अस्तु सनातन-धर्म से पतित यहूदी जाति को महान पाप का प्रायश्चित्त या दंड घुमक्कड़ी के रूप में भोगना पड़ा, और अब उन्हें पैर रखने का स्थान मिला। आज भारत तना हुआ है। यह यहूदियों की भूमि और राज्य को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। जब बड़े-बड़े स्वीकार कर चुके हैं, तो कितने दिनों तक यह हठधर्मी चलेगी? लेकिन विषयान्तर में न जाकर हमें यह कहना था कि यह घुमक्कड़ी धर्म है, जिसने यहूदियों को केवल व्यापार-कुशल उद्योग-निष्णाक ही नहीं बनाया, बल्कि विज्ञान, दर्शन, साहित्यिक, संगीत सभी क्षेत्रों में चमकने का मौका दिया। समझा जाता था कि व्यापारी तथा घुमक्कड़ यहूदी युद्ध-विद्या में कच्चे, निकलेंगे, लेकिन उन्होंने पाँच-पाँच अरबी साम्राज्यों की सारी शेखी को धूल में मिलाकर चारों खाने चित्त कर दिया और सबने नाक रगड़कर उनसे शांति की भिक्षा माँगी।

इतना कहने से अब कोई संदेह नहीं रह गया कि घुमक्कड़-धर्म से बढ़कर दुनिया में धर्म नहीं है। धर्म भी छोटी बात है, उसे घुमक्कड़ के साथ लगाना “महिमा घटी समुद्र की, रावण बसा पड़ोस” वाली बात होगी। घुमक्कड़ होना आदमी के लिए परम सौभाग्य की बात है। यह पंथ अपने अनुयायी को मरने बाद किसी काल्पनिक स्वर्ग का प्रलोभन नहीं देता, इसके लिए तो कह सकते हैं— “क्या खूब सौदा नकद है, इस हाथ ले इस हाथ दे।” घुमक्कड़ी वही कर सकता है, जो निश्चित है। किन साधनों से संपन्न होकर आदमी घुमक्कड़ बनने का अधिकारी हो सकता है, यह आगे बतलाया जायगा, किंतु घुमक्कड़ी के लिए चिंताहीन होना आवश्यक है, और चिंताहीन होने के लिए घुमक्कड़ी भी आवश्यक है। दोनों का अन्योन्याश्रय होना दूषण नहीं भूषण है। घुमक्कड़ी से बढ़कर सुख कहाँ मिल सकता है? आखिर चिंता-हीनता तो सुख का सबसे स्पष्ट रूप है। घुमक्कड़ी में कष्ट भी होते हैं, लेकिन उसे उसी तरह समझिये, जैसा भोजन में मिर्च। मिर्च में यदि कड़वाहट न हो, तो क्या कोई मिर्च-प्रेमी उसमें हाथ भी

लगायेगा? वस्तुतः घुमक्कड़ी में कभी-कभी होने वाले कड़वे अनुभव उसके रस को और बढ़ा देते हैं, उसी तरह जैसे काली पृष्ठभूमि में चित्र अधिक खिल उठता है।

व्यक्ति के लिए घुमक्कड़ी से बढ़कर कोई नगद धर्म नहीं है। जाति का भविष्य घुमक्कड़ों पर निर्भर करता है, इसलिए मैं कहूँगा कि हरेक तरुण और तरुणी को घुमक्कड़-व्रत ग्रहण करना चाहिए, इसके विरुद्ध दिये जाने वाले सारे प्रमाणों को झूठ और व्यर्थ का सामना करना चाहिए, यदि माता-पिता विरोध करते हैं, तो समझाना चाहिए कि वह भी प्रह्लाद के माता-पिता के नवीन संस्करण हैं। यदि हित-बांधव बाधा उपस्थित करते हैं, तो समझाना चाहिए कि वे दिवांध हैं। धर्म-धर्माचार्य कुछ उलटा-सीधा तर्क देते हैं, तो समझ लेना चाहिए कि इन्हीं ढोंगों और ढोंगियों ने संसार को कभी सरल और सच्चे पथ पर चलने नहीं दिया। यदि राज्यों और राजसी-नेता अपनी कानूनी रुकावटें डालते हैं, तो हजारों बार की तजर्बा की हुई बात है, कि महानदी के वेग की तरह घुमक्कड़ की गति को रोकनेवाला दुनिया में कोई पैदा नहीं हुआ। बड़े-बड़े कठोर पहरेवाली राज्य-सीमाओं को घुमक्कड़ों ने आँख में धूल झोंककर पार कर लिया। मैंने स्वयं ऐसा एक से अधिक बार किया है। (पहली तिब्बत यात्रा में

अंग्रेजों, नेपाल-राज्य और तिब्बत के सीमा-रक्षकों की आँख में धूल झोंककर जाना पड़ा था।)

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं, कि यदि कोई तरुण-तरुणी घुमक्कड़ धर्म की दीक्षा लेता है— यह मैं अवश्य कहूँगा, कि यह दीक्षा वही ले सकता है, जिसमें बहुत भारी मात्रा में हर तरह का साहस है— तो उसे किसी की बात नहीं सुननी चाहिए, न माता के आँसू बहने की परवाह करनी चाहिए, न पिता के भय और उदास होने की, न भूल से विवाह लाई अपनी पत्नी के रोने-धोने की फिक्र करनी चाहिए और न किसी तरुणी को अभागे पति के कलपने की। बस शंकराचार्य के शब्दों में यही समझना चाहिए— “निरत्रै गुण्यो पथि विचरतः को विधिः को निषेधाः” और मेरे गुरु कपोतराज के बचन को अपना पथप्रदर्शक बनाना चाहिए—

“सैर कर दुनिया की गाफिल, जिंदगानी फिर कहाँ?

जिंदगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ?”

दुनिया में मनुष्य-जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण-तरुणियों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिए। कमर बाँध लो भावी घुमक्कड़ो! संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है। ● ● ●

अद्भुत लगन

10वीं की बोर्ड परीक्षा में कोई कितनी बार फेल हो सकता है, एक, दो या तीन बार। लेकिन, राजस्थान के अलवर जिले के खोहरी गाँव के रहने वाले 77 वर्षीय शिवचरण यादव बीते 46 सालों से दसवीं की परीक्षा दे रहे हैं। पहली बार वे 1968 में परीक्षा में बैठे थे। इस बार भी वे परीक्षा की तैयारी में जुटे हुए हैं, 10 मार्च 2017 से होने वाली राज्य बोर्ड परीक्षा में 47वीं बार 10वीं की परीक्षा देंगे।

46 बार परीक्षा में फेल हो चुके यादव का कहना है कि जब तक वह परीक्षा पास नहीं होंगे, तब तक वह कुँवारे ही रहेंगे। यादव ने कहा कि उम्र कोई मायने नहीं रखती है। गुरुवार को एक बार फिर शिवचरण यादव ने इस साल परीक्षा में पास होने की उम्मीद जताई। यादव ने कहा, ‘मैंने पहली बार 1968 में दसवीं की परीक्षा दी थी।’

वे विगत 30 साल से वह अपने पैतृक आवास पर अकेले ही रहते हैं। सरकार की ओर से मिलने वाली वृद्धावस्था पेंशन और मंदिर से मिलने वाले प्रसाद पर ही गुजारा करते हैं।

भारतवंशियों का जलवा

1.

अमरीका के सबसे धनवान 400 व्यक्तियों की फोर्ब्स की सूची में शामिल पाँच भारतवंशियों में रमेश टी. वधानी सबसे ऊपर 222वीं रैंक पर हैं। उनकी कुल संपत्ति 300 करोड़ डॉलर (करीब 20 खरब रुपये) आंकी गई है। इसके बाद 274वीं रैंक पर भरत और नीरजा सेठी का बिज हैं, जिनकी कुल संपत्ति 250 करोड़ डॉलर (करीब 16.5 खरब रुपये)

है। राकेश गंगवाल 321वीं रैंक पर हैं, जिन्हें 220 करोड़ डॉलर (करीब 14.5 खरब रुपये) की संपत्ति का मालिक बताया गया है। 335वीं पायदान पर रहने वाले जॉन कपूर के पास 210 करोड़ डॉलर (करीब 14 खरब रुपये) की संपत्ति है, जबकि 361वीं रैंक वाले कवितार्क राम श्रीराम के पास 190 करोड़ डॉलर (करीब 12.5 खरब रुपये) की संपत्ति का अनुमान है।



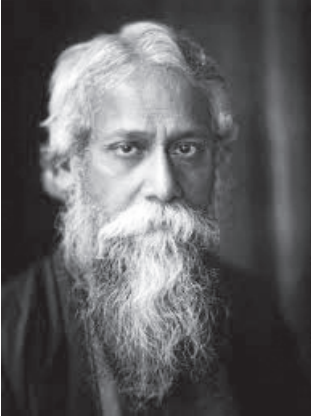
2.

कनाडा की लिबरल पार्टी के भारत मूल के सक्रिय राजनीतिक सदस्य सरदार गुरमिंदर ‘गोगी’ छिगगर की पुत्री सुश्री बर्दिश छिगगर वाटरलू क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस समय वे कनाडा के हाउस ऑफ कॉमन्स की लीडर होने के साथ-साथ लघु व्यापार-उद्योग और पर्यटन मंत्री भी हैं।

एक ओर जहाँ वे सदन में भारतीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं वहीं कनाडा में सामासिक मूल्यों की एक प्रबल संभावना हैं। —सं.



काबुलीवाला



रवींद्रनाथ टैगोर

(1861-1941)

मेरी पाँच वर्ष की छोटी लड़की मिनी से पल भर भी बात किए बिना नहीं रहा जाता। दुनिया में आने के बाद भाषा सीखने में उसने सिर्फ एक ही वर्ष लगाया होगा। उसके बाद से जितनी देर तक सो नहीं पाती है, उस समय का एक पल भी वह चुप्पी में नहीं खोती। उसकी माता बहुधा डॉट-फटकारकर उसकी चलती हुई जबान बन्द कर देती है, किन्तु मुझसे ऐसा नहीं होता। मिनी का मौन मुझे ऐसा अस्वाभाविक-सा प्रतीत होता है, कि मुझसे वह अधिक देर तक सहा नहीं जाता और यही कारण है कि मेरे साथ उसके भावों का आदान-प्रदान कुछ अधिक उत्साह के साथ होता रहता है।

सवेरे मैंने अपने उपन्यास के सत्रहवें अध्याय में हाथ लगाया ही था कि इतने में मिनी ने आकर कहना आरम्भ कर दिया, “बाबूजी! रामदयाल दरबान कल ‘काक’ को कौआ कहता था। वह कुछ जानता ही नहीं, न बाबूजी?”

विश्व की भाषाओं की विभिन्नता के विषय में मेरे कुछ बताने से पहले ही उसने दूसरा प्रसंग छेड़ दिया, “बाबूजी! भोला कहता था आकाश मुँह से पानी फेंकता है, इसी से बरसा होती है। अच्छा बाबूजी, भोला झूठ-मूठ कहता है न? खाली बक-बक किया करता है, दिन-रात बकता रहता है।”

इस विषय में मेरी राय की तनिक भी राह न देख कर, चट से धीमे स्वर में एक जटिल प्रश्न कर बैठी, “बाबूजी, माँ तुम्हारी कौन लगती है?”

मन ही मन मैंने कहा— साली और फिर बोला, “मिनी, तू जा, भोला के साथ खेल, मुझे अभी काम है, अच्छा।”

तब उसने मेरी मेज के पार्श्व में पैरों के पास बैठकर अपने दोनों घुटने और हाथों को हिला-हिलाकर बड़ी शीघ्रता से मुँह चलाकर

‘अटकन-बटकन दही चटाके’ कहना आरम्भ कर दिया। जबकि मेरे उपन्यास के अध्याय में प्रतापसिंह उस समय कंचनमाला को लेकर रात्रि के प्रगाढ़ अन्धकार में बन्दीगृह के ऊँचे झरोखे से नीचे कलकल करती हुई सरिता में कूद रहे थे।

मेरा घर सड़क के किनारे पर था, सहसा मिनी अपने अटकन-बटकन को छोड़कर कमरे की खिड़की के पास दौड़ गई, और जोर-जोर से चिल्लाने लगी, “काबुलवाला, ओ काबुलवाला।”

मैले-कुचैले ढीले कपड़े पहने, सिर पर कुल्ला रखे, उस पर साफा बाँधे कन्धे पर सूखे फलों की मैली झोली लटकाए, हाथ में चमन के अंगूरों की कुछ पिटारियाँ लिए, एक लम्बा-तगड़ा-सा काबुली मन्द चाल से सड़क पर जा रहा था। उसे देखकर मेरी छोटी बेटी के हृदय में कैसे भाव उदय हुए यह बताना असम्भव है। उसने जोरों से पुकारना शुरू किया। मैंने सोचा, अभी झोली कन्धे पर डाले, सर पर एक मुसीबत आ खड़ी होगी और मेरा सतरहवाँ अध्याय आज अधूरा रह जाएगा।

किन्तु मिनी के चिल्लाने पर ज्यों ही काबुली ने हँसते हुए उसकी ओर मुँह फेरा और घर की ओर बढ़ने लगा, त्यों ही मिनी भय खाकर भीतर भाग गई। फिर उसका पता ही नहीं लगा कि कहाँ छिप गई। उसके छोटे-से मन में वह अन्धविश्वास बैठ गया था कि उस मैली-कुचैली झोली के अन्दर ढूँढ़ने पर उस जैसी और भी जीती-जागती बच्चियाँ निकल सकती हैं।

इधर काबुली ने आकर मुस्कराते हुए मुझे हाथ उठाकर अभिवादन किया और खड़ा हो गया। मैंने सोचा, वास्तव में प्रतापसिंह और कंचनमाला की दशा अत्यन्त संकटापन्न है, फिर भी घर में बुलाकर इससे कुछ न खरीदना अच्छा न होगा।

कुछ सौदा खरीदा गया। उसके बाद मैं उससे इधर-उधर की बातें करने लगा। खुद रहमत, रूस, अंग्रेज, सीमान्त रक्षा के बारे में गप-शप होने लगी।

अन्त में उठकर जाते हुए उसने अपनी मिली-जुली भाषा में पूछा “बाबूजी, आपकी बच्ची कहाँ गई?”

मैंने मिनी के मन से व्यर्थ का भय दूर करने के अभिप्राय से उसे भीतर से बुलवा लिया। वह मुझसे बिल्कुल लगकर काबुली के मुख और झोली की ओर सन्देहात्मक दृष्टि डालती हुई खड़ी रही। काबुली ने झोली में से किसमिस और खुबानी निकालकर देना चाहा, पर उसने नहीं लिया और दुगुने सन्देह के साथ मेरे घुटनों से लिपट गई। उसका पहला परिचय इस प्रकार हुआ।

इस घटना के कुछ दिन बाद एक दिन सवेरे मैं किसी आवश्यक कार्यवश बाहर जा रहा था। देखूँ तो मेरी बिटिया दरवाजे के पास बेंच पर बैठी हुई काबुली से हँस-हँसकर बातें कर रही है और काबुली उसके पैरों के समीप बैठा-बैठा मुस्कराता हुआ, उन्हें ध्यान से सुन रहा है और बीच-बीच में अपनी राय मिली-जुली भाषा में व्यक्त करता जाता है। मिनी को अपने पाँच वर्ष के जीवन में, बाबूजी के सिवाए ऐसा धैर्यवाला श्रोता शायद ही कभी मिला हो। देखा तो,

उसका फिराक का अग्रभाग बादाम-किसमिस से भरा हुआ है। मैंने काबुली से कहा, “इसे यह सब क्यों दे दिया? अब कभी मत देना।” कहकर कुर्ते की जेब से एक अठन्नी निकालकर उसे दी। उसने बिना किसी हिचक के अठन्नी लेकर अपनी झोली में रख ली।

कुछ देर बाद, घर लौटकर देखता हूँ तो उस अठन्नी ने बड़ा भारी उपद्रव खड़ा कर दिया है।

मिनी की माँ एक सफेद चमकीला गोलाकार पदार्थ हाथ में लिए डॉट-डपटकर मिनी से पूछ रही थी, “तूने यह अठन्नी पाई कहाँ से, बता?”

मिनी ने कहा, “काबुल वाले ने दी है।”

“काबुल वाले से तूने अठन्नी ली कैसे, बता?”

मिनी ने रोने का उपक्रम करते हुए कहा, “मैंने माँगी नहीं थी, उसने आप ही दी है।”

मैंने जाकर मिनी की उस अकस्मात मुसीबत से रक्षा की, और उसे बाहर ले आया।

मालूम हुआ कि काबुली के साथ मिनी की यह दूसरी ही भेंट थी, सो बात नहीं। इस दौरान में वह रोज आता रहा है और पिस्ता-बादाम की रिश्त दे-देकर मिनी के छोटे से हृदय पर बहुत अधिकार कर लिया है।

देखा कि इस नई मित्रता में बँधी हुई बातें और हँसी ही प्रचलित है। जैसे मेरी बिटिया, रहमत को देखते ही हँसती हुई पूछती, “काबुल वाला, ओ काबुल वाला, तुम्हारी झोली के भीतर क्या है?” काबुली, जिसका नाम रहमत था, एक अनावश्यक चन्द्र-बिन्दु जोड़कर मुस्कराता हुआ उत्तर देता, “हाँ बिटिया” उसके परिहास का रहस्य क्या है, यह तो नहीं कहा जा सकता, फिर भी इन नए मित्रों को इससे तनिक विशेष खेल-सा प्रतीत होता है और जाड़े के प्रभात में एक सयाने और एक बच्ची की सरल हँसी सुनकर मुझे भी बड़ा अच्छा लगता।

उन दोनों मित्रों में और भी एक-आध बात प्रचलित थी। रहमत मिनी से कहता, “तुम ससुराल कभी नहीं जाना, अच्छा?”

हमारे देश की लड़कियाँ जन्म से ही ‘ससुराल’ शब्द से परिचित रहती हैं, किन्तु हम लोग तनिक कुछ नई रोशनी के होने के कारण तनिक-सी बच्ची को ससुराल के विषय में विशेष ज्ञानी नहीं बना सके थे, अतः रहमत का अनुरोध वह स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाती थी, इस पर भी किसी बात का उत्तर दिए बिना चुप रहना उसके स्वभाव के बिल्कुल ही विरुद्ध था। उलटे, वह रहमत से ही पूछती, “तुम ससुराल जाओगे?”

रहमत काल्पनिक श्वसुर के लिए अपना जबर्दस्त घूँसा तानकर कहता, “हम ससुर को मारेगा।”

सुनकर मिनी ‘ससुर’ नामक किसी अनजाने जीव की दुरवस्था की कल्पना करके खूब हँसती।

देखते-देखते जाड़े की सुहावनी ऋतु आ गई। पूर्व युग में इसी समय राजा लोग दिग्विजय के लिए कूच करते थे। मैं कलकत्ता छोड़कर कभी कहीं नहीं गया, शायद इसीलिए मेरा मन ब्रह्माण्ड में

घूमा करता है। यानी, मैं अपने घर में ही चिर प्रवासी हूँ, बाहरी ब्रह्माण्ड के लिए मेरा मन सर्वदा आतुर रहता है। किसी विदेश का नाम आगे आते ही मेरा मन वहीं की उड़ान लगाने लगता है। इसी प्रकार किसी विदेशी को देखते ही तत्काल मेरा मन सरिता-पर्वत-बीहड़ वन के बीच में एक कुटीर का दृश्य देखने लगता है और एक उल्लासपूर्ण स्वतंत्र जीवन-यात्रा की बात कल्पना में जाग उठती है।

इधर देखा तो मैं ऐसी प्रकृति का प्राणी हूँ, जिसका अपना घर छोड़कर बाहर निकलने में सिर कटता है। यही कारण है कि सवेरे के समय अपने छोटे-से कमरे में मेज के सामने बैठकर उस काबुली से गप-शप लड़ाकर बहुत कुछ भ्रमण का काम निकाल लिया करता हूँ। मेरे सामने काबुल का पूरा चित्र खिंच जाता। दोनों ओर ऊबड़खाबड़, लाल-लाल ऊँचे दुर्गम पर्वत हैं और रेगिस्तानी मार्ग, उन पर लदे हुए ऊँटों की कतार जा रही है। ऊँचे-ऊँचे साफे बाँधे हुए सौदागर और यात्री कुछ ऊँट की सवारी पर हैं तो कुछ पैदल ही जा रहे हैं। किन्हीं के हाथों में बरछा है, तो कोई बाबा आदम के जमाने की पुरानी बन्दूक थामे हुए है। बादलों की भयानक गर्जन के स्वर में काबुली लोग अपने मिली-जुली भाषा में अपने देश की बातें कर रहे हैं।

मिनी की माँ बड़ी वहमी तबीयत की है। राह में किसी प्रकार का शोरगुल हुआ नहीं कि उसने समझ लिया कि संसार भर के सारे मस्त शराबी हमारे ही घर की ओर दौड़े आ रहे हैं। उसके विचारों में यह दुनिया इस छोर से उस छोर तक चोर-डकैत, मस्त, शराबी, साँप, बाघ, रोगों, मलेरिया, तिलचट्टे और अंग्रेजों से भरी पड़ी है। इतने दिन हुए इस दुनिया में रहते हुए भी उसके मन का यह रोग दूर नहीं हुआ।

रहमत काबुली की ओर से भी वह पूरी तरह निश्चित नहीं थी। उस पर विशेष नजर रखने के लिए मुझसे बार-बार अनुरोध करती रहती। जब मैं उसके शक को परिहास के आवरण से ढकना चाहता तो मुझसे एक साथ कई प्रश्न पूछ बैठती, “क्या कभी किसी का लड़का नहीं चुराया गया? क्या काबुल में गुलाम नहीं बिकते? क्या एक लम्बे-तगड़े काबुली के लिए एक छोटे बच्चे का उठा ले जाना असम्भव है?” इत्यादि।

मुझे मानना पड़ता कि यह बात नितान्त असम्भव हो सो बात नहीं पर भरोसे के काबिल नहीं। भरोसा करने की शक्ति सबमें समान नहीं होती, अतः मिनी की माँ के मन में भय ही रह गया लेकिन केवल इसीलिए बिना किसी दोष के रहमत को अपने घर में आने से मना न कर सका।

हर वर्ष रहमत माघ मास में लगभग अपने देश लौट जाता है। इस समय वह अपने व्यापारियों से रुपया-पैसा वसूल करने में तल्लीन रहता है। उसे घर-घर, दुकान-दुकान घूमना पड़ता है, फिर भी मिनी से उसकी भेंट एक बार अवश्य हो जाती है। देखने में तो ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों के मध्य किसी षड्यंत्र का श्रीगणेश हो रहा है। जिस दिन वह सवेरे नहीं आ पाता, उस दिन देखूँ तो वह संध्या को हाजिर है। अँधेरे में घर के कोने में उस ढीले-ढाले जामा-पाजामा पहने, झोली वाले लम्बे-तगड़े आदमी को देखकर सचमुच ही मन में

अचानक भय-सा पैदा हो जाता है।

लेकिन, जब देखता हूँ कि मिनी 'ओ काबुल वाला' पुकारती हुई हँसती-हँसती दौड़ी आती है और दो भिन्न-भिन्न आयु के असम मित्रों में वही पुराना हास-परिहास चलने लगता है, तब मेरा सारा हृदय खुशी से नाच उठता है।

एक दिन सवेरे मैं अपने छोटे कमरे में बैठा हुआ नई पुस्तक के प्रूफ देख रहा था। जाड़ा, विदा होने से पूर्व, आज दो-तीन दिन खूब जोरों से अपना प्रकोप दिखा रहा है। जिधर देखो, उधर उस जाड़े की ही चर्चा है। ऐसे जाड़े-पाले में खिड़की में से सवेरे की धूप मेज के नीचे मेरे पैरों पर आ पड़ी। उसकी गर्मी मुझे अच्छी प्रतीत होने लगी। लगभग आठ बजे का समय होगा। सिर से मफलर लपेटे ऊषाचरण सवेरे की सैर करके घर की ओर लौट रहे थे। ठीक इस समय राह में एक बड़े जोर का शोर सुनाई दिया।

देखूँ तो अपने उस रहमत को दो सिपाही बाँधे लिए जा रहे हैं। उनके पीछे बहुत से तमाशाई बच्चों का झुंड चला आ रहा है। रहमत के ढीले-ढाले कुर्ते पर खून के दाग हैं और एक सिपाही के हाथ में खून से लथपथ छुरा। मैंने द्वार से बाहर निकलकर सिपाही को रोक लिया, पूछा, "क्या बात है?"

कुछ सिपाही से और कुछ रहमत से सुना कि हमारे एक पड़ोसी ने रहमत से रामपुरी चादर खरीदी थी। उसके कुछ रुपए उसकी ओर बाकी थे, जिन्हें देने से उसने साफ इन्कार कर दिया। बस इसी पर दोनों में बात बढ़ गई और रहमत ने छुरा निकालकर घोंप दिया।

रहमत उस झूठे बेईमान आदमी के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के अपशब्द सुना रहा था। इतने में "काबुल वाला! ओ काबुल वाला!" पुकारती हुई मिनी घर से निकल आई।

रहमत का चेहरा क्षण-भर में कौतुक हास्य से चमक उठा। उसके कन्धे पर आज झोली नहीं थी। अतः झोली के बारे में दोनों मित्रों की अभ्यस्त आलोचना न चल सकी। मिनी ने आते के साथ ही उसने पूछा, "तुम ससुराल जाओगे।"

रहमत ने प्रफुल्लित मन से कहा, "हाँ, वहीं तो जा रहा हूँ।"

रहमत ताड़ गया कि उसका यह जवाब मिनी के चेहरे पर हँसी न ला सकेगा और तब उसने हाथ दिखाकर कहा, "ससुर को मारता, पर क्या करूँ, हाथ बाँधे हुए हैं।"

छुरा चलाने के जुर्म में रहमत को कई वर्ष का कारावास मिला।

रहमत का ध्यान धीरे-धीरे मन से बिल्कुल उतर गया। हम लोग अब अपने घर में बैठकर सदा के अभ्यस्त होने के कारण, नित्य के काम-धंधों में उलझे हुए दिन बिता रहे थे। तभी एक स्वाधीन पर्वतों पर घूमने वाला इन्सान कारागार की प्राचीरों के अन्दर कैसे वर्ष पर वर्ष काट रहा होगा, यह बात हमारे मन में कभी उठी ही नहीं।

और चंचल मिनी का आचरण तो और भी लज्जाप्रद था। यह बात उसके पिता को भी माननी पड़ेगी। उसने सहज ही अपने पुराने मित्र को भूलकर पहले तो नबी सईस के साथ मित्रता जोड़ी, फिर क्रमशः जैसे-जैसे उसकी वयोवृद्धि होने लगी वैसे-वैसे सखा के

बदले एक के बाद एक उसकी सखियाँ जुटने लगीं और तो क्या, अब वह अपने बाबूजी के लिखने के कमरे में भी दिखाई नहीं देती। मेरा तो एक तरह से उसके साथ नाता ही टूट गया है।

कितने ही वर्ष बीत गये। वर्षों बाद आज फिर शरद ऋतु आई है। मिनी की सगाई की बात पक्की हो गई। पूजा की छुट्टियों में उसका विवाह हो जाएगा। कैलाशवासिनी के साथ-साथ अबकी बार हमारे घर की आनन्दमयी मिनी भी माँ-बाप के घर में अँधेरा करके ससुराल चली जाएगी।

सवेरे दिवाकर बड़ी सज-धज के साथ निकले। वर्षों के बाद शरद ऋतु की यह नई धवल धूप सोने में सुहागे का काम दे रही है। कलकत्ता की सँकरी गलियों से परस्पर सटे हुए पुराने ईटझर गन्दे घरों के ऊपर भी इस धूप की आभा ने एक प्रकार का अनोखा सौन्दर्य बिखेर दिया है।

हमारे घर पर दिवाकर के आगमन से पूर्व ही शहनाई बज रही है। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जैसे यह मेरे हृदय की धड़कनों में से रो-रोकर बज रही हो। उसकी करुण भैरवी रागिनी मानो मेरी विच्छेद पीड़ा को जाड़े की धूप के साथ सारे ब्रह्माण्ड में फैला रही है। मेरी मिनी का आज विवाह है।

सवेरे से घर बवंडर बना हुआ है। हर समय आने-जाने वालों का ताँता बँधा हुआ है। आँगन में बाँसों का मंडप बनाया जा रहा है। हरेक कमरे और बरामदे में झाड़फानूस लटकाए जा रहे हैं, और उनकी टक-टक की आवाज मेरे कमरे में आ रही है। 'चलो रे', 'जल्दी करो', 'इधर आओ' की तो कोई गिनती ही नहीं है।

मैं अपने लिखने-पढ़ने के कमरे में बैठा हुआ हिसाब लिख रहा था। इतने में रहमत आया और अभिवादन करके खड़ा हो गया।

पहले तो मैं उसे पहचान न सका। उसके पास न तो झोली थी और न पहले जैसे लम्बे-लम्बे बाल और न चेहरे पर पहले जैसी दिव्य ज्योति ही थी। अन्त में उसकी मुस्कान देखकर पहचान सका कि वह रहमत है।

मैंने पूछा, "क्यों रहमत, कब आए?"

उसने कहा, "कल शाम को जेल से छूटा हूँ।"

सुनते ही उसके शब्द मेरे कानों में खट से बज उठे। किसी खूनी को मैंने कभी आँखों से नहीं देखा था, उसे देखकर मेरा सारा मन एकाएक सिकुड़-सा गया। मेरी यही इच्छा होने लगी कि आज के इस शुभ दिन में वह इंसान यहाँ से टल जाए तो अच्छा हो।

मैंने उससे कहा, "आज हमारे घर में कुछ आवश्यक काम है, सो आज मैं उसमें लगा हुआ हूँ। आज तुम जाओ, फिर आना।"

मेरी बात सुनकर वह उसी क्षण जाने को तैयार हो गया। पर द्वार के पास आकर कुछ इधर-उधर देखकर बोला, "क्या, बच्ची को तनिक नहीं देख सकता?"

शायद उसे यही विश्वास था कि मिनी अब तक वैसी ही बच्ची बनी है। उसने सोचा हो कि मिनी अब भी पहले की तरह 'काबुल वाला, ओ काबुल वाला' पुकारती हुई दौड़ी चली आएगी। उन दोनों

के पहले हास-परिहास में किसी प्रकार की रुकावट न होगी? यहाँ तक कि पहले की मित्रता की याद करके वह एक पेट्टी अंगूर और एक कागज के दोने में थोड़ी-सी किसमिस और बादाम, शायद अपने देश के किसी आदमी से माँग-ताँगकर लेता आया था। उसकी पहले की मैली-कुचैली झोली आज उसके पास न थी।

मैंने कहा, “आज घर में बहुत काम है। सो किसी से भेंट न हो सकेगी।”

मेरा उत्तर सुनकर वह कुछ उदास-सा हो गया। उसी मुद्रा में उसने एक बार मेरे मुख की ओर स्थिर दृष्टि से देखा। फिर अभिवादन करके दरवाजे के बाहर निकल गया।

मेरे हृदय में जाने कैसी एक वेदना-सी उठी। मैं सोच ही रहा था कि उसे बुलाऊँ, इतने में देखा तो वह स्वयं ही आ रहा है।

वह पास आकर बोला, “ये अंगूर और कुछ किसमिस बादाम बच्ची के लिए लाया था, उसको दे दीजिएगा।”

मैंने उसके हाथ से सामान लेकर पैसे देने चाहे, लेकिन उसने मेरे हाथ को थामते हुए कहा, “आपकी बहुत मेहरबानी है बाबू साहब, हमेशा याद रहेगी, पिसा रहने दीजिए।” तनिक रुककर फिर बोला— “बाबू साहब! आपकी जैसी मेरी भी देश में एक बच्ची है। मैं उसकी याद कर-कर आपकी बच्ची के लिए थोड़ी-सी मेवा हाथ में ले आया करता हूँ। मैं यह सौदा बेचने नहीं आता।”

कहते हुए उसने ढीले-ढाले कुर्ते के अन्दर हाथ डालकर छाती के पास से एक मैला-कुचैला मुड़ा हुआ कागज का टुकड़ा निकाला, और बड़े जतन से उसकी चारों तहें खोलकर दोनों हाथों से उसे फैलाकर मेरी मेज पर रख दिया।

देखा कि कागज के उस टुकड़े पर एक नन्हे-से हाथ के छोटे-से पंजे की छाप है। फोटो नहीं, तेलचित्र नहीं, हाथ में थोड़ी-सी कालिख लगाकर कागज के ऊपर उसी का निशान ले लिया गया है। अपनी बेटी के इस स्मृति-पत्र को छाती से लगाकर, रहमत हर वर्ष कलकत्ता के गली-कूचों में सौदा बेचने के लिए आता है और तब वह कालिख चित्र मानो उसकी बच्ची के हाथ का कोमल-स्पर्श, उसके बिछड़े हुए विशाल वक्षःस्थल में अमृत उड़ेलता रहता है।

देखकर मेरी आँखें भर आईं और फिर मैं इस बात को बिल्कुल ही भूल गया कि वह एक मामूली काबुली मेवा वाला है, मैं एक उच्च वंश का रईस हूँ। तब मुझे ऐसा लगने लगा कि जो वह है, वही मैं हूँ। वह भी एक बाप है और मैं भी। उसकी पर्वतवासिनी छोटी बच्ची की निशानी मेरी ही मिनी की याद दिलाती है। मैंने तत्काल ही मिनी को बाहर बुलवाया, हालाँकि इस पर अन्दर घर में आपत्ति की गई, पर मैंने उस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। विवाह के वस्त्रों और अलंकारों में लिपटी हुई बेचारी मिनी मारे लज्जा के सिकुड़ी हुई-सी मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उस अवस्था में देखकर रहमत काबुल पहले तो सकपका गया। उससे पहले जैसी बातचीत न करते बना। बाद में हँसते हुए बोला, “लल्ली! सास के घर जा रही है क्या?”

मिनी अब सास का अर्थ समझने लगी थी, अतः अब उससे पहले की तरह उत्तर देते न बना। रहमत की बात सुनकर मारे लज्जा के उसके कपोल लाल हो उठे। उसने मुँह को फेर लिया। मुझे उस दिन की याद आई, जब रहमत के साथ मिनी का प्रथम परिचय हुआ था। मन में एक पीड़ा की लहर दौड़ गई।

मिनी के चले जाने के बाद, एक गहरी साँस लेकर रहमत फर्श पर बैठ गया। शायद उसकी समझ में यह बात एकाएक साफ हो गई कि उसकी बेटी भी इतने दिनों में बड़ी हो गई होगी, और उसके साथ भी उसे अब फिर से नई जान-पहचान करनी पड़ेगी। सम्भवतः वह उसे पहले जैसी नहीं पाएगा। इन आठ वर्षों में उसका क्या हुआ होगा, कौन जाने? सवेरे के समय शरद की स्निग्ध सूर्य किरणों में शहनाई बजने लगी और रहमत कलकत्ता की एक गली के भीतर बैठा हुआ अफगानिस्तान के मेरु-पर्वत का दृश्य देखने लगा।

मैंने एक नोट निकालकर उसके हाथ में दिया और कहा, “रहमत, तुम देश चले जाओ, अपनी लड़की के पास। तुम दोनों के मिलन-सुख से मेरी मिनी सुख पाएगी।”

रहमत को रुपए देने के बाद विवाह के हिसाब में से मुझे उत्सव-समारोह के दो-एक अंग छोटकर काट देने पड़े। जैसी मन में थी, वैसी रोशनी नहीं करा सका, अंग्रेजी बाजा भी नहीं आया, घर में औरतें बड़ी बिगड़ने लगीं, सब कुछ हुआ, फिर भी मेरा विचार है कि आज एक अपूर्व ज्योत्स्ना से हमारा शुभ समारोह उज्वल हो उठा।

सोलर ऑटो रिक्शा से 'बैंगलुरु से बर्मिंघम'

भारत से लंदन 'टुक टुक' से ही पहुँच गया नवीन, तय की 10 हजार किलोमीटर दूरी भारतीय मूल के इंजीनियर नवीन रबेल्ली ने सौर ऊर्जा



चालित एक ऑटोरिक्शा से भारत से लंदन की 10,000 किलोमीटर की यात्रा पूरी की। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य एशिया और यूरोपीय देशों में अक्षय ऊर्जा का इस्तेमाल कर सवारी वाहनों के लिए वैकल्पिक परिवहन समाधानों को लेकर जागरूकता फैलाना था।

दुनिया के कई हिस्सों में 'टुक टुक' के नाम से प्रसिद्ध ऑटो फरवरी में बैंगलुरु से यात्रा पर निकला था।

35 साल के रबेल्ली सोमवार को ब्रिटेन पहुँचे। वह उम्मीद से पाँच दिन बाद पहुँचे क्योंकि सफर के दौरान गत सप्ताह फ्रांस में शौचालय जाते हुए उनका बटुआ और पासपोर्ट चोरी हो गए थे।



कुसुम खेमानी

एक अचम्भा प्रेम

भिवानी (हरियाणा) में 19 सितम्बर 1944 को जन्मी, कोलकाता विश्वविद्यालय से एम.ए., पीएचडी सुश्री कुसुम खेमानी कहानी, उपन्यास, यात्रा-विवरण, संस्मरण, रेखाचित्र आदि विविध विधाओं में लेखन के साथ-साथ शब्दकोष निर्माण, अनुवाद, समालोचना के क्षेत्र में भी प्रभूत योगदान कर चुकी हैं। हिंदी में अपनी मातृबोली के अद्भुत

मेल का जो प्रयोग उन्होंने किया वह उनकी हिंदी को एक नया और भास्वर स्वरूप प्रदान करता है।

विभिन्न देशों की साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्राओं के दौरान अपने अध्यात्मिक चिंतन और वक्तृत्व के कारण विश्व की ही हस्तियों द्वारा प्रशंसित तथा कई सम्मानों और पुरस्कारों से अलंकृत कुसुम जी सम्प्रति 'वागर्थ' के संपादन और 'हिंदी साहित्य कोश' के संयोजन में व्यस्त हैं। संपर्क: अस्टर रोड, 3 लाउडन स्ट्रीट, कोलकाता-700017 kusumkhemai1@gmail.com

उन दिनों मेरे कॉलेज में पढ़ती अधिकतर लड़कियों को हर वक्त एक ही चिन्ता रहती थी कि नुककड़ पर खुले शहर के एकमात्र एयर-कंडीशंड बाजार में शिवशंकर की दुकान पर जाने का कौन-सा बहाना ढूँढा जाए। कोई कहती, मुझे अपना स्कार्फ बदलवाना है, कोई फरमाती, मुझे शिव भाई से पूछना है कि अपनी सलवार-कमीज का कपड़ा कहाँ से खरीदूँ, तो किसी को माँ के लिए कुछ लाना रहता! ऐसा लगता मानो सबकी बीमारियों का एकमात्र इलाज शिव रूपी अनार ही हो। हम बहुत ही कंजूसी से अपने छोटे-छोटे कामों को कई टुकड़ों में बाँट लेते ताकि बार-बार उसकी दुकान पर जाने का बहाना मिल सके।

आखिर शिव नाम के इस जवान में ऐसा क्या था जो हम सब उसकी दीवानी थीं? जब हमारी दूसरी दोस्तनियाँ हमसे पूछतीं— क्या वह बहुत खूबसूरत है, तब हम न तो ना कह पाते और न नहीं। हमारे इस अटकाव के बावजूद वे हमारे गले लटूमू कर उससे मिलने जा पहुँचतीं और पहले ही क्षण से हम बगुलों की पाँत का एक हिस्सा बन जातीं। आज उम्र के कई पड़ाव पार कर जब शिव के बारे में यही प्रश्न स्वयं से पूछती हूँ, तो कई दशकों से उलझा यह रेशम का गुच्छा रेशा-रेशा होकर सुलझने लगता है।

गेहुँए वर्ण का शिव! न तो किसी मॉडल की तरह छह फुट लम्बा, और कसी हुई मांसपेशियों वाला डेविड' सरीखा नायक था और न ही उसे दिल लुभाने वाली, लटके-झटके खाती लम्बी-चौड़ी बातें बनाना आता था। वह महज पाँच फुट नौ इंच लम्बा और साधारण-सी देहयष्टि का मालिक था, उसमें चीते-सा फुर्तीलापन भरा हुआ था। वह हमारी दो पैसे की फरमाइश को भी, सीढ़ी चढ़कर, पलक झपकते, यूँ पूरी करता मानो हमने हजारों का सामान खरीदा हो। हम सब विस्मय-विमुग्ध आँखों से उसे देखते हुए सोचती रहतीं कि हमें तो गर्दन को जुम्बिश देने में शायद इससे ज़्यादा वक्त लगता है।

शिव के प्रति हमारी बेइन्तहा चाहत का कारण उसकी आन्तरिक सुन्दरता थी। उसके चेहरे पर इतनी अधिक मिठास थी कि हम अक्सर आपस में यह कहते— शिव की ठोड़ी के नीचे यदि हथेली की अँजुरी बना दी जाए, तो शिव की मिठास और शराफत से वह लबलब भर जाएगी। उसकी आवाज की मृदुलता, उसके शब्दों की विनम्रता, व्यर्थ उलाहनों को सहर्ष स्वीकार करने की क्षमता, हमारी शरारतों को नजरअंदाज करने की सहनशीलता आदि गुण उसके सुकुमार-शान्त चेहरे पर एक अदम्य आकर्षण रच देते थे। हो सकता है कि शिव के कुँआरे होने के कारण भीतर ही भीतर कई-एक लड़कियाँ उससे ब्याह रचाने को भी आतुर रही हों! पर एक बात निश्चित थी कि वह हम सबका पितु-मातु सहायक-स्वामी-सखा' सब कुछ था।

दरअसल इस स्थिति का एक कारण हमारी तात्कालिक परिस्थितियाँ भी हो सकती हैं। उस जमाने में हम लड़कियों की दुनियाँ में, जो युवा हुआ करते थे, वे मात्र हमारे अपने भाई ही होते थे जिनका काम केवल हम पर रौब गाँठना होता था। वे हमसे इस तरह पेश आते मानो हम महामूर्ख बच्चियाँ हैं, जिन्हें डाँट-फटकार से ही सँवारा जा सकता है। यहाँ तक कि हमें उनके दोस्तों तक से बात करने की इजाजत नहीं थी और आश्चर्यजनक ढंग से हमारी माँएँ भी अक्सर उन्हीं का पक्ष लेती थीं। जुल्मों के इस घटाटोप में शिव का अपनापन हमारे धक्कते हृदयों पर, शीतल मरहम का काम करता था। हमारी बचकाना बातों को भी पूरी अहमियत देकर सुनना, संवेदनशीलता और समझदारी से हमारे सारे मसले सुलझाना, हमें कभी भी गलत नहीं ठहराना आदि तरीकों ने कुल मिलाकर हमारे दिलों में शिव का एक ऐसा खूबसूरत मुजस्समा गढ़ दिया था कि सिवाय उस पर मर-मर जाने के हमारे पास कोई उपाय नहीं था।

तभी अचानक एक दिन हमारे दिल की रश्मि ने हमें घबराए हुए स्वर में सूचना दी— जानती हो, शिव की सगाई सविता के साथ पक्की हो गयी है?' एक लम्बी हैंऽऽ के साथ ही हम लोगों ने बेसब्री से पूछा— कौन-सी सविता? वही, जिसे दो साल पहले इस कॉलेज से ट्रांसफर सर्टिफिकेट दिया गया था।' क्या? उस कर्कशा, झगड़ालू सविता के साथ शिव का विवाह? यह असम्भव है, एकदम असम्भव। रश्मि, तुम्हें जरूर कोई गलतफहमी हुई है। चलो, अभी शिव के पास चल कर पूरी बात का पता लगाते हैं।''

जब सारे जहान की मुस्कान से अपने चेहरे को सुशोभित किए, शिव ने हमारे सामने मिठाई का डिब्बा बढ़ाया, तो मेरा मन किया कि उसे खींच कर एक थप्पड़ मारूँ और उससे पूछूँ— क्या तुम्हारे हिये की फूटी हुई है, जो तुम उस चण्डिका से विवाह कर रहे हो? क्या तुम्हें इतनी बड़ी दुनिया में कोई और लड़की नहीं मिली थी? शिव, हमें पता है कि इस विवाह की वजह पैसा नहीं है, तो फिर तुम क्यों जीते जी, सात फेरों की आग में कूद कर सती होना चाहते हो? क्या तुम्हारी बुद्धि एकदम ही भ्रष्ट हो गयी है शिव?'

शिव के प्रति अपने लगाव को मैं भाषा में नहीं बाँध सकती। वह एक विचित्र प्रकार का प्रेम था— उसमें उसकी माँ के विशाल डैने थे, जिनमें उसके सारे दुखों को छिपाया जा सकता था। उसमें बहन का

मजबूत हाथ था, जो उसे किसी भी गर्त में गिरने से बचाना चाहता था और उसमें एक दोस्त का सहज स्पर्श था, जो उसे आत्मीय ऊष्मा से भर कर, दुनिया के प्रत्येक आघात से बचाने को हर क्षण तत्पर था। इसलिए मैंने तत्क्षण कहा— शिव, इधर आओ।”

शिव को लगभग खींचती हुई—सी मैं उसे बाजार के बाहर ले आई और बेबाकी से अपने क्षोभ का इजहार करते हुए बोली— शिव! मैं जानती हूँ कि सविता की हकीकत तुमसे भी छिपी नहीं है, फिर तुम यह आत्महत्या क्यों कर रहे हो? किसी समय, सविता के नजदीक होने के कारण मैं तुमसे दरख्वास्त करती हूँ कि प्लीज, तुम यह सगाई तोड़ दो।”

उद्विग्नता से उपजी मेरी व्याकुलता को देखकर शिव ने हँसते हुए मुझे प्यार से अपने पास बैठाया और एकदम शान्त और निर्मल स्वर में बोला— सुशीला बाई! मैं आपकी बहुत इज्जत करता हूँ, क्योंकि आपके मन में सबके प्रति प्रेम और दया है। इसलिए मैं भी आपको एकदम सच्चे मन से कह रहा हूँ कि मुझे यह सगाई तोड़ने का पाप नहीं करना चाहिए। मैं सविता की पूरी कहानी से परिचित ही नहीं, सारी घटनाओं का चश्मदीद गवाह भी हूँ। शायद आपको पता नहीं है कि हमारा घर उनके घर से इतना सटा हुआ है कि दोनों घरों की साँसें भी आसानी से सुनी जा सकती हैं। दीदी! सविता का बचपन अत्यन्त दर्दनाक घटनाओं से आक्रान्त रहा है। संयुक्त परिवार होने के कारण बचपन से ही उसके चचेरे भाइयों, चाचाओं आदि ने उसका दैहिक और उसके माँ-बाप ने उसका मानसिक शोषण किया है, फलस्वरूप उसके रोम-रोम में सारी दुनिया के प्रति नफरत भर गई है। लोग जिसे उसका दुर्व्यवहार मानते हैं, दरअसल वह उसके दुखते जख्मों से रिसता दर्द है और उसकी कटु अभिव्यक्तियाँ? वे उसका ऐसा रक्षा-दुर्ग हैं, जिसकी आड़! उसे जवाब न देने की सुरक्षा प्रदान करती है। दीदी! यदि मैं यह सगाई तोड़ दूँ, तो क्या कोई भलमानस उसका हाथ थामेगा?”

कच्ची उम्र होने के कारण उसके इन भावोद्गारों से बौखलाकर मैंने अपने दोनों हाथ कुहनियों तक जोड़कर उससे कहा— हे महात्मा! आपके पास तो बहुत पैसे हैं, तो आप क्यों नहीं कोई अच्छा-सा वर ढूँढ़ कर उससे सविता की शादी करवा देते? हे भगवान शिव! आपसे पुनः प्रार्थना है कि आप जान-बूझ कर इस आग में मत कूटिए।” मेरे दोनों हाथों को अपनी नर्म हथेलियों के बीच बाँध कर शिव ने उसी रौं में कहा— दीदी! मैं जानता हूँ कि मेरे प्रति आपके स्नेह का ओर-छोर नहीं है, पर आप बिल्कुल चिन्ता मत कीजिए। देखिएगा! यही सविता एक दिन कोहेनूर हीरे-सी चमक उठेगी। दीदी! प्रेम में बहुत ताकत होती है। यदि प्रेम का झरना कठोर शिलाओं को तराश कर मनोनुकूल रास्ता बना लेता है, तो सविता तो महज एक मनुष्य है।”

मैं अवाक, अपलक, अनिमेष उस आदमी को देखे जा रही थी कि अपने सुकोमल स्नेह से मेरी हथेली को छूते हुए, वह धीमे से बोला— दीदी! दुकान चलें? वहाँ सब इन्तजार कर रहे होंगे।

खैर साहब! अंत में शिव ने सविता के यहाँ ही तोरण मारा। विवाह में जाने की अनिच्छा होते हुए भी, हम मात्र शिव को दूल्हा सजा देखने वहाँ गए और शिव को उस वेश में देखकर हम सबको बहुत अच्छा

भी लगा।

शिव की पनीली आँखें और खिलखिल करता चेहरा उसके दूल्हे-रूप को एक चुम्बकीय आकर्षण प्रदान कर रहे थे। तभी सविता दुल्हन के सारे साज-बाज से सजी-धजी वहाँ आई। किसी के दैहिक सौन्दर्य की भर्त्सना गलत है’ को मानते हुए भी, हम सब यह सोचने को बाध्य थे कि आखिर सविता सुन्दर क्यों नहीं लग रही है? हमारे अब तक के अनुभव में कुरूप से कुरूप लड़की भी दुल्हन वेश में शर्माती हुई, अप्सरा लगती है। फिर क्यों सविता इस तथ्य का विपर्यय लग रही है?

ध्यान से देखने पर हम इस नतीजे पर पहुँचे कि इसके लिए उसके हाव-भाव जिम्मेदार थे। उसके अंग-प्रत्यंग में गहरी हिकारत और वितृष्णा भरी हुई थी, और वह अपने पैरों को यों घसीट रही थी मानो किसी बलि के बकरे को ज़िबह के लिए वध-स्थल पर ले जाया जा रहा हो।

हम सब हैरान कि छप्पर फाड़ कर बरसे हुए इस सौभाग्य को यह देवी ठोकर क्यों मार रही है? न रूप की न गुण की, फिर इसे इतना गुमान किस बात का है? ऐसा अहंकार तो पुंगलगढ़ की पद्मिनी, को भी न होगा जैसा इसे है। आखिर इसका कारण क्या है? पर हमारा यह प्रश्न अनुत्तरित ही रहा।

समय की नदी की रवानी में कॉलेज की फुर्सतें और बचपना सब बह गए और क्रमशः यादें भी धुँधली पड़ गईं, लेकिन एक ही शहर में रहने और रिश्तेदारी होने के कारण शिव के हालचाल अक्सर ही मुझ तक आते रहते।

शिव ने अपनी पहली लड़की अपूर्वा के जन्म पर हमारे पूरे गुप को बहुत ही आग्रह से एक बड़ी पार्टी में निमंत्रित किया था और हमारे अनुपस्थित रहने पर हमें घर बैठे ढेरों मिठाइयाँ भी भेजी थीं। मेरी ननद शीला शिव की सलहज थी, उससे पता चला कि सविता, अपूर्वा का काम करना तो दूर, उसे हाथ तक नहीं लगाती। उसे लड़कियों से बेहद चिढ़ है और अपूर्वा के जन्म के लिए वह शत-प्रतिशत शिव को ही दोषी मानती है, क्योंकि वह अपने गर्भ का लिंग जँचवाना चाहती थी और शिव इसे गलत मानता था, इसलिए यह सम्भव नहीं हुआ। उसके हिसाब से शिव ने उसे धोखे में रखा और उसे जबर्दस्ती एक लड़की की माँ बना दिया।

जब मैंने शिव से इस बाबत कुछ कहना चाहा, तो उसने मुझे यह कह कर चुप कर दिया कि दीदी! आप तो पढ़ी-लिखी, संवेदनशील और महीन बातों को समझने वाली महिला हैं और आप से परिचित सविता के इस विषय में कुछ पूर्वाग्रह भी हैं। दूसरों की बात छोड़िए, लेकिन क्या आप भी उसका दर्द नहीं समझ सकती? मन किया कि उस बेवकूफ प्रेमी को जोरों से झिंझोड़ कर कहूँ कि ज़्यादा दर्शन और मनोविज्ञान मत बघारो और धरती पर आकर जमीनी हकीकत का सामना करो। पर उसका चेहरा तो प्रेम के नूर से दमकता हुआ छलका जा रहा था और मैं उसके स्रोत को खोजने एवं उस उद्गम प्रपात के प्रवाह को थामने में पूर्णतः असमर्थ थी।

लगभग दो वर्ष बाद शीला ने ख़बर दी कि सविता फिर गर्भवती है, और उसे पक्का विश्वास है कि गुरु जी के आशीर्वाद से उसके लड़का

ही होगा। इत्तफाक से उसी दिन रास्ते में शिव से मुलाकात हो गई। मैंने अपनी बेटी अनन्या से कहा— बेटा! इन्हें प्रणाम करो, ये मेरे दोस्त शिव हैं। अनन्या उसके पैर छूती, इसके पहले ही शिव ने उसे लपक कर गोद में उठाया और एक माँ की तरह चिपका लिया। नखराली अनन्या भी उससे यों चिपक गई मानों वर्षों से उसे जानती हो। शायद बच्चों में एक सहज अन्तःप्रज्ञा होती है, जिससे वे सच्चे प्रेम को तुरन्त समझ जाते हैं। अनन्या को आइसक्रीम खिलाते हुए शिव ने कहा— दीदी! मैं अपनी दूसरी बेटी का नाम अनन्या ही रखूँगा।

मेरे मुँह से अनजाने ही क्याSS? की एक छोटी-सी चीख निकल गई और मैंने घबराकर कहा— शिव! क्या तुम कभी नहीं सुधरोगे? हे देवता! दया करके तुम दूसरी लड़की के गीत तो मत ही गाओ। लेकिन सब बेकार। शिव अपनी उसी उन्मुक्त हँसी से आगे बढ़कर सारा आसपास गुँजाते हुए कहता रहा— दीदी! पक्का रहा। मैं अनन्या नाम ही रखूँगा! रख लूँ नाSSS!

मैं यह बड़बड़ करती हुई कि इस शिव की तो मति ही मारी गई है, जब अपने घर पहुँची, तो बेटे आर्यन ने खबर दी कि शीला बुआ का फोन आया था कि सविता बाई के लड़की हुई है। इतनी जल्दी, कैसे? और मैंने हकबका कर तुरन्त शीला को फोन किया। उसने विस्तार से बताया कि इस बार समय से कुछ पहले ही सविता के लड़की हो गई है। बच्ची पूरी-पाठी और स्वस्थ है। उसमें समय से पूर्व पैदा होने का कोई भी लक्षण नहीं है। सविता को प्रसव में भी खास कष्ट नहीं हुआ और अब जच्चा-बच्चा दोनों पूर्ण स्वस्थ हैं।

जब मैंने द्विअर्थी ध्वनि में सविता के हाल पूछे, तो उसने बताया कि वह तो एकदम भाठा (पत्थर) हो रही है और थोबड़ा फुलाए, आँखें सुजा कर पड़ी हुई है। शिव बाबू खबर मिलते ही आ गए थे और अब वे ही बच्ची और सविता की सार-समहाल कर रहे हैं। शिव कैसे करेगा यह सब? पूछने पर शीला का उत्तर था— भाभी! आप जीजा जी को जानती नहीं हैं? वैसे भी, आज तक वे ही अपूर्वा को पूरी तरह समहालते आए हैं, सविता बाई तो कभी भूले से भी उसे हाथ नहीं लगाती। शिव बाबू ने चौबीस घंटे की एक बढ़िया नर्स भी रख ली और उसकी मदद से वे अपूर्वा को बहुत ही अच्छी तरह पाल रहे हैं।

या खुदा! यह शिव हाड़-मांस से बना हम सरीखा साधारण.सा आदमी है या कोई देवता-गन्धर्व? पढ़ते-लिखते तो हम सब हैं कि दाता होना चाहिए, लेता नहीं, पर क्या हम कभी भी! कुछ पा लेने का अवसर छोड़ते हैं? वैसे इन सब घटनाओं के कारण, मेरी यह धारणा और भी पक्की हो गई थी कि यह शिव सनकी ही नहीं, नीम पागल है। जो दर्शनशास्त्र को इस जमीन की सच्चाई साबित करने पर तुला हुआ है या यह अकिंचन माटी-पुत्र स्वयं को दधीचि और शिवि का अंश समझ बैठा है?

खैर.. शिव ने दूने जोर-शोर से अनन्या के जन्म की मिठाइयाँ बाँटीं और दिन के चौबीस घंटों में अड़तालीस जितना काम करता हुआ पूरे जोशो-खरोश से बेटियों को पालने में लग गया।

सही वक्त पर सही खाद और पानी मिलने के कारण, अपूर्वा और अनन्या, स्वस्थ फूलों-सी खिलखिलाती हुई, सबका मन मोहने लगीं।

उनके गुणों की आभा ने उनमें एक ऐसे अलौकिक लावण्य की सृष्टि कर दी कि वे शकुन्तला और द्रौपदी-सी सुन्दर दिखने लगीं। वे दोनों न केवल कक्षा में सदा फर्स्ट आती थीं, बल्कि उनके प्रतिशत भी सौ में सौ के आसपास ही रहते थे।

शीला कहती— भाभी! यह सब शिव बाबू के पुण्यों का प्रताप है, वर्ना मेरी ननद? उसका वश चले, तो वह इन दोनों का गला ही घोंट दे।

जिन्दगी की जद्दो-जहद में लगे हम सब! भला कब किसी शिव और सविता की कहानी को याद रख पाते हैं? लेकिन जीवन की रहस्यमयता का भी ओर-छोर नहीं है!...

एक दिन कॉलेज के जमाने के उसी पुराने वातानुकूलित बाजार में जाने का काम पड़ा। घुसते ही देखा कि पहले जो शिव की बड़ी दुकान हुआ करती थी, वहाँ कई एक छोटी-छोटी दुकानें खुली हुई हैं और शिव नामक जीव का वहाँ कोई अता-पता नहीं है।

किशोरावस्था के प्रेम का रंग इतना कच्चा तो होता नहीं कि हाथ धोओ और छूट जाए, इसलिए जब मैंने उत्कण्ठित स्वर से वहाँ के लोगों से उसका वर्तमान ठिकाना पूछा, तो उन लोगों ने मरे-से स्वर में उत्तर दिया— क्या आप नहीं जानतीं कि शिव मामा ने कई वर्षों पहले ही इस दुकान को सलटा कर, वह धुर कोनेवाली छोटी-सी दुकान ले ली है? मेरे मुँह से अनायास ही निकला— 'मामा! क्या आप उनके भाँजे हैं?' इस पर उन महोदय ने हँसते हुए कहा— 'बहनजी! शिव मामा मेरे ही नहीं, इस पूरे बाजार के मामा हैं। इन बाईस वर्षों में उन्होंने हम सबको बहुत ही अपनापन और ममता दी है। उन्होंने संकट के समय कितनों की क्या मदद की, चाह कर भी इसका लेखा-जोखा नहीं रखा जा सकता। सच कहें, तो वे जगत-मामा हैं और हमारे सगे मामाओं से भी बढ़कर हैं।'

अंत में जब मैं शिव के सामने पहुँची, तो उसने उसी सदियों पुरानी मुस्कुराहट से मेरा स्वागत करते हुए निःस्संकोच कहा— 'अरे दीदी आप! आइए-आइए, क्या मँगवाऊँ आपके लिए?'

उसे घूरते हुए मैंने उलाहने भरे स्वर में कहा— शिव! तुमने कभी मिठाई का साझा करने में तो कोई कोताही नहीं बरती, फिर अपनी मुसीबतों का साझा क्यों नहीं किया? अकेले ही सब झेलते रहे।

दीदी! किसने कहा कि मैं तकलीफ में हूँ? मैं तो बहुत ही आनन्द से हूँ। दोनों बेटियाँ विदेशों के बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में नाम कमा रही हैं और एक को 'नासा' से और दूसरी को 'गूगल' से काम करने का निमंत्रण भी मिल चुका है। मैंने उन दोनों के नाम से अच्छे-खासे पैसों के ट्रस्ट बना दिए हैं, ताकि वे मनचाहा घर-वर या जैसा भी जीवन चाहें चुन सकें। घर का मकान और यह दुकान मेरे और सविता के खर्च के लिए पर्याप्त हैं। दीदी! आपको छूकर कहता हूँ, मैं एकदम सुखी हूँ। खुश हूँ कि मैंने जानबूझ कर कभी किसी का अहित नहीं किया।'

और सविता? वह कैसी है? कुछ सुधरी?

दीदी! आप बेकार में ही उससे नाराज हैं। आपको तो उससे हमदर्दी और प्यार होना चाहिए। आप तो यह सच्चाई भी जानती हैं कि सविता ही मेरा पहला और अंतिम प्यार है और उसके खिलाफ मुझे एक शब्द भी नहीं सुहाता। सच मानिए, जब कभी मैं उसे क्रोध करते देखता हूँ,

तो खुद को टटोलता हूँ कि मुझसे कहाँ गलती हो गई। दीदी! बीमार आदमी की बात का क्या बुरा मानना! आप भी उसे थोड़ा-सा चाह कर देखिए, तब आप भी समझ जाएँगी कि आप उसके बारे में कितनी गलत थीं।

शिव के कहे सारे शब्द भावों के साथ घुमड़ कर मेरे सिर में एक झंझावात की सृष्टि कर रहे थे। रेतीली आँधी में मुझे कुछ भी सूझ नहीं रहा था। इसलिए ऊपर से झूठी हँसी हँसते हुए फिर मिलेंगे कहती हुई मैं तेजी से लौट आई और उसी वक्त मैंने शिव-स्मृति के पन्नों को अपनी डायरी से फाड़ दिया।

तभी एक दिन शीला ने खबर दी कि शिव ने अपना विशालकाय मकान बेच दिया है और किसी बस्तीनुमा मुहल्ले में जा बसा है। आगे उसने यह भी बताया कि वैसे कुँवर जी कुछ बताते तो नहीं हैं, पर लगता है कि शायद सविता बाई के कैसर है, जिस पर अनाप-शनाप खर्च हो रहा है। जब मेरे ससुर जी ने अपनी बेटी के लिए कुछ मदद करना चाहा, तो उन्होंने बहुत ही मीठेपन से कह दिया— ज़रूरत होने पर मैं आपसे अवश्य ही आर्थिक मदद ले लूँगा।' पर साल भर होने को आया, उन्होंने आज तक उनसे एक रुपए की भी मदद नहीं ली और आग्रह करने पर उनका वही मिठास भरा नकारात्मक उत्तर हाजिर रहता है।

बाद में यह भी पता चला कि शिव इस भ्रम में चौबीसों घंटे सविता के सिरहाने बैठा रहता है कि होश आने पर यदि उसे अपने पास, घर का कोई आदमी नहीं दिखाए तो वह बेचारी तो जीते जी ही मर जाएगी।

शीला की बातें सुनकर मैं सोच रही थी— हाय रे भाग्य! जिस कर्कशा ने उस अभागे शिव को एक बार भी प्यार से नहीं पुकारा, आज वही जीवात्मा महामृत्युंजय का पाठ जपता हुआ! सतत उसकी सेवा में जुटा हुआ है। क्या सच ही प्रेम अंधा होता है? क्या सच ही उसमें प्रत्याशा नहीं होती? क्या प्रेम का अर्थ केवल दूसरे को चाहना मात्र होता है?...

मैंने आजन्म प्रेम की सत्यता को स्वीकार करना तो दूर, सदा से उसके खिलाफ अनेक तर्कों की सृष्टि की है। प्रेम शब्द मुझे कभी भी हकीकी नहीं लगा। मेरे तई उसका अस्तित्व सदा ही मजाजी और मात्र एक मिथ रहा है। मेरी परिभाषा के हिसाब से इस दुनिया में हम जिन सम्बन्धों को प्रेम कहते हैं, वे या तो समझौते होते हैं, या एक ऐसी व्यवस्था, जिसमें ले और दे के बटखरे बाहर से तो अमूर्त लगते हैं, लेकिन भीतर ही भीतर सारा हिसाब-किताब चलता रहता है। जब अनेकानेक सन्तों ने भी चुप्पी साध कर इसे गुँगे का गुड़ मान लिया है, तो यह मिट्टी का पुतला मुझे प्रेम के नए अर्थ समझाने पर क्यों अड़ा हुआ है?

सविता नहीं रही... का फोन आते ही, हम सब भाग कर शिव के घर पहुँचे। सविता की अर्थी का सोलह श्रृंगार करवाकर शिव उसके पास ऐसे बैठा था, जैसे वह पत्थर की कोई मूर्ति हो, प्राणहीन और अचल। जिस शिव के चेहरे का अर्थ ही था मुस्कुराना! आज वही जड़वत, पूर्णतः निश्चल और निस्पंद था। उसे देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे कोई प्राणरहित मनुष्याकृति वहाँ स्थापित कर दी गई हो। उसकी यह अवस्था देखकर हम सब किसी भावी अनहोनी की आशंका से सहमे

हुए—से बैठे थे कि विमला ने धीरे से पूछा— अनन्या और अपूर्वा कहाँ है? शीला का जवाब था— जीजाजी ने उन्हें खबर नहीं दी और हमें भी ताकीद कर दी है कि बच्चियों को कोई खबर न दी जाए, नहीं तो वे अपना काम-धाम छोड़कर तुरन्त यहाँ भागी आएँगी।

अत्यन्त हैरानी भरे मन से उस मनुष्य रूपी देवता को प्रणाम कर हम घर लौटे ही थे कि फोन बजा— भाभी! जल्दी आइए, शिव बाबू नहीं रहे।

नहीं रहे?...माने?... शीला, तुम्हें होश भी है कि तुम क्या कह रही हो?

भाभी! ठीक कह रही हूँ। आप और भैया दोनों तुरन्त आ जाइए। चाय की प्याली को पटक मैं और ये जब वहाँ पहुँचे, तो स्तब्ध रह गए। शिव और सविता अगल-बगल दो अर्थियों पर सज्जित थे और आत्मीय-स्वजन फूट-फूट कर रो रहे थे।

आज हम दोनों एक ऐसे अचम्भे के साक्षी बने वहाँ खड़े थे, जिसका वर्णन यदि हम गंगाजली उठा कर भी करें, तो कोई विश्वास नहीं करेगा। वहाँ तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे थे। कोई कह रहा था कि बिना किसी कर्ज और सहायता के इतने बड़े खर्च के दबाव से इनके हार्ट पर असर आ गया होगा। कोई इसमें आत्महत्या के सुराग ढूँढ़ रहा था तो कोई टू मच अटैचमेंट (सीमातीत प्रेम) शब्द का प्रयोग कर अपनी विद्वत्ता प्रदर्शित कर रहा था। अनुमान कई थे, पर सबूत किसी बात का नहीं था।

तभी मुझे कोने में कलकत्ता के प्रसिद्ध हार्ट स्पेशलिस्ट डॉ. सिन्हा खड़े दिखे। उनसे परिचय होने के कारण मैं जब भौचक-सी उनके पास जा कर खड़ी हुई, तो बिना कुछ कहे ही मेरे मंतव्य को समझ कर उन्होंने मुझे सारी बातें बताना शुरू कर दिया— वे लगभग पाँच-छह साल से शिव का इलाज कर रहे थे, पर किसी को पता नहीं था कि शिव को दिल की बीमारी है। उन्होंने जब कभी शिव को किसी खास टेस्ट के लिए कहा, तो उसने उसे हँसी में उड़ा दिया। उसकी जिजीविषा और जुझारूपन देख कर डॉ. साहब भी काफी आश्चर्य थे कि जो दवाइयाँ वे शिव को दे रहे हैं उनके नियमित सेवन से ही वह ठीक हो जाएगा, लेकिन आज सविता की अर्थी उठाने के लिए उसे हिलाने पर, जब उसका मृत शरीर लुढ़क कर गिर पड़ा, तो डॉ. साहब ने तुरन्त उसके कमरे में जाकर, उसकी सारी दवाइयाँ टटोलीं। वे यह देखकर हैरान रह गए कि शिव कोई भी दवाई न खाकर, अपना क्षरण करता जा रहा था। फिर यह पता चलने पर कि शिव ने परसों शाम को ही अपनी सारी बची-खुची दौलत वृन्दावन के एक अस्पताल में सविता महिला वार्ड हेतु दान कर दी थी, उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि शिव ने उसी वक्त यह दुनिया छोड़ने का दृढ़ निश्चय कर लिया था।

शिव ठीक ही कहता था— प्रेम में सबूत की क्या ज़रूरत है? वह तो बस हो जाता है, अनायास और अनजाने।

प्रेम आपको करना है, आप करिए! दूसरा करता है या नहीं, इससे आपका क्या सम्बन्ध है।

प्रेम करने से मुझे जिस परमानन्द का अनुभव होता है, क्या वही मेरे प्रेम का प्रतिदान नहीं है? मेरा प्रेम अपने में सम्पूर्ण है, उसे किसी

और के सहारे की जरूरत नहीं है।

दीदी! मैं बहुत स्वार्थी हूँ, इसलिए किसी और से कोई अपेक्षा नहीं रखता। मैं प्रेम और ईश्वर को एक ही मानता हूँ। जैसे वह ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदम् पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते है, वैसे ही मेरे लिए भी प्रेम स्वयंभू और अनन्त है।...

अगल-बगल दो अर्थियाँ रखी थीं, एक सादी और एक दुल्हन-सी सजी-धजी। हम निर्वाक और स्तब्ध थे, पर हमारे मनो में विचारों का अंधड़ आया हुआ था। मैं सोच रही थी, एक अलग दीये को पंक्ति

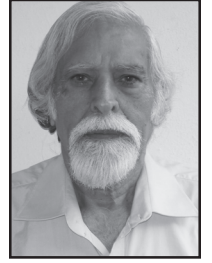
देने की याचना करते अज्ञेय जी को गलत ठहराता, यह अकेला दिया जितना आलोकित, पवित्र, ज्योतिष, भव्य और दिव्य है क्या कभी भी दुनिया की सारी दीपअवलियाँ! इतना प्रकाश प्रसारित करने में सक्षम होंगी?

हमारी धारणाओं को झुठला कर, अपनी निर्मल हँसी से सकल चराचर जगत को, प्रेम शब्द के प्रति, श्रद्धा और विश्वास की खुशबू से भरता, शिव एक अचम्भा नहीं तो क्या है?...

कविताएँ/गीत/गज़ल

शान्ति से मरूँगा मैं

वरिष्ठ मानवतावादी कवि, बिहार और उत्तर प्रदेश अकादमियों से सम्मानित, विभिन्न विधाओं में कोई 30-35 पुस्तकें प्रकाशित, सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार से अलंकृत। सम्प्रति बंगलुरु में निवास। संपर्क— 2094 Shobha Dahlia, Greenglen Layout, Bellandur, Bangaluru-56010394 (M) 09341556673 Email: ranjeet1937@gmail.com



डॉ. रणजीत

शांति से मरूँगा मैं
बिना किसी कष्ट के
मैंने जीवन को भरपूर जिया है
भर-भरकर लिया है प्याला
और छलकाया है उसे चारों ओर
संघर्ष किया है मैंने उद्ग्रीव-ऊर्ध्वबाहु
जुलुम से ज़बर से
यह नहीं कि सफल ही रहा हूँ सदा उसमें
हारा भी हूँ
हुआ हूँ हताश भी अनेक बार
पर गम नहीं पाला उस हार का
टूटा नहीं हूँ कभी।

शांति से मरूँगा मैं
मुझे प्यार करती है
अब तक भी मेरी प्रिय
मान देते हैं मुझको
मेरे अपने बच्चे
मन में मेरे धधक नहीं रही है कोई
ईर्ष्या की आग
न ही धुँधवा रही है कोई
लोभ की लकड़ी
न उसमें जले बन रही है कोई
महत्वाकांक्षा की मकड़ी।
केवल एक दिया जलाता है आत्मसम्मान का
अपने मनुष्य होने का।

शांति से मरूँगा मैं
लुका-छिपा बंद कर
तिजोरियों में, कोठरियों में
मैंने नहीं रखा है जीवन का रस-रंग
होली के रंगों की तरह
भर-भर कर पिचकारियों में, डोलचियों में
मारा है प्रियजनों के, परिजनों के तन-मन पर
बाल्टी की बाल्टी उँडेला है।

शांति से मरूँगा मैं
स्वप्न-ध्वंस, भ्रम-भंग मेरे सब हो चुके
कभी के
दंश उनके सहकर निकल आया मैं
पचास से पहले ही
अब नहीं है कोई भ्रम
टूटकर जो तोड़े मुझे।

सपना कुल संसार के
भरपेट सोने का
स्वस्थ-सुखी होने का
रक्खे है मुझको भी स्वस्थ-सुखी।

शांति से मरूँगा मैं
नहीं हूँ किसी जन का सहारा मैं

बेसहारा जो हो जाय
मेरे मर जाने के बाद
छोड़ जाऊँगा मैं सब के लिए कुछ न कुछ
सभी धन्यवाद दूँगे
शांति से मरूँगा मैं।

मेरी आँखें
अँधेरे में टटोल रहे
किसी दलित, अल्पसंख्यक को
शोषित-पीड़ित स्त्री को, बच्चे को
किन्हीं भी दो दृष्टिहीन लोगों को
देंगी जीवन का प्रकाश—
गुर्दे भी काम आ जायँ शायद
किन्हीं जरूरत मंदों के
नष्ट नहीं करूँगा लेकिन
शेष बचे तन को भी जलाकर या दफनाकर
पढ़ें इसे एक पाठ्यपुस्तक की तरह छात्र
चिकित्सा विज्ञान की प्रयोगशाला में
एक नया अर्थ मिले
इस निर्थक अवशिष्ट को भी
यही सब सोचते हुए
शांति से मरूँगा मैं
बिना किसी कष्ट के।



डॉ. सरिता मेहता

पूर्णतया लेखन कार्य में स्वतन्त्र रूप से काम कर रही हैं। सम्पर्क: <https://www.facebook.com/sarita.mehta.77>

मासूम सी है सूरत,
सवाल भी मासूम है,
फिर भी क्यों ना कोई,
इसका जवाब मिल रहा है ?

माँ भगवती से माँगते हैं,
यहाँ औलाद की मुरादें,
आती है जब अपना रूप ले,
गर्भ में ही क्यों उसका,
यहाँ संहार हो रहा है ?

देवी की आराधना तो,
यहाँ करते हैं रात-दिन,
फिर नारी का क्यों अक्सर,
यहाँ बहिष्कार हो रहा है ?

झुकी हुई हैं नजरें,
सिले हुए हैं होंठ।
पाताल सी गहराई में,
दबी सी सिसकियाँ लेकर,
मासूम सी यह लड़की,
सदा सवाल पूछती है।
फिर क्यों नहीं सवालियों का,
हमें जवाब मिल रहा है ?

मासूम का सवाल

सहज और सरल अभिव्यक्ति की कवयित्री, कहानीकार, नाटककार, साहित्यकार और कलाकार हैं। राइस यूनिवर्सिटी, ह्यूस्टन यूनिवर्सिटी, न्यूयार्क यूनिवर्सिटी तथा भारत में लगभग पच्चीस वर्ष तक हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति की लेक्चरार रहीं। ग्लोबल प्रमोशन आफ हैरिटेज ऑफ कल्चर थरो हिन्दी, ट्रयु ग्लोबल टीचर अवार्ड, काव्य-मणि अवार्ड, साहित्य-मणि अवार्ड से सम्मानित सरिता जी,

संस्कृति हमारी है,
देवी पूजने की,
फिर देश की देवियों पर,
क्यों अत्याचार हो रहा है ?

क्यों जल रही हैं नारियाँ
यहाँ दहेज की कमी से ?
क्यों नारी के शरीर का,
यहाँ व्यापार हो रहा है ?

अष्टमी, नौवीं पर पूजते हो
हमेशा कन्या कुँवारियों को,
फिर अनगिनत कन्याओं का
क्यों बलात्कार हो रहा है ?

मेरे हिस्से के सन्नाटे



डॉ. हरेन्द्र चाहर

डॉ. हरेन्द्र चाहर प्रेम के प्रतीक 'ताजमहल' के शहर आगरा से हैं। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली से पी-एचडी करने के पश्चात अभी गेल्बेस्टन में विषाणु विज्ञान क्षेत्र में कार्यरत हैं। विज्ञान करने के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य कविताएँ और हिन्दी कहानियाँ लिखते हैं।

अब गली मोहल्ला गाँव कहाँ
पीपल की टंडी छाँव कहाँ
आधे कच्चे आधे पक्के
टूटे फूटे से गलियारे
टिम-टिम करती दीये की लौ
काले काले से अंधियारे
गलियों को भरते परनाले
घुटनों तक खेतों का पानी
सबने रोका सबने खींचा
पर बात किसी की ना मानी
बाधक हैं सब मेरी उन्नति में
इन सबको मुझे भुलाना है
छोटे-छोटे से कमरों को
गोबर से लीपे फर्शों को
मुझे नहीं अपनाना है
मेरी दुनिया है दूर कहीं
सपनों का महल बनाऊँगा
बड़ा बनूँगा इतना कि
पैसे को दास बनाऊँगा
गलियाँ छोड़ीं, नाते छोड़े
सपनों के अंधे पंख लगा
कुछ अपनों के दिल भी तोड़े
नहीं हो सकता मेरा यहाँ भला
सब छोड़-छाड़ पर देश चला
सब छूट गया, रब रूठ गया
मिथ्या खुशियों के भ्रम का कलश
हुआ विलम्ब पर फूट गया
पैसा तो है पर खुशी नहीं
सुविधा तो है पर सुखी नहीं
खुशियाँ तो सब अपनों संग थीं
मिलकर देखे सपनों संग थीं
सबके संग रहकर भी तो मैं
अपने सपने सच कर सकता था

बना चित्र जीवन पथ का
खुशियों के रंग भर सकता था
अब जाकर ये अहसास हुआ
मैंने खुद ही तो बांटे हैं
मेरे हिस्से में जो सन्नाटे हैं!!

एक कविता

लकड़ी का पालना

एक संवेदनशील और सहज रचनाकार जिनकी रचनाएं पाठक को एक मानवीय भावलोक में ले जाती हैं। email celinachaubey@gmail.com
160 Bunker Hill, Princeton, NJ 08540, U.S.A.



सेलिना चौबे

फार्म के भूले छज्जे पर
पड़ा है झूलन-पालना

तैयार था यह बनकर,
आई जब तुम घर में पहली बार —
बन्द पलकों सपने समेटे,
मुट्टियों में लिए आगे के दिन।

सुलाते थे जब इसमें तुमको
पत्तों से छनी छाया में, बगीचे के कगार —

लोरी की धुन घुल जाती थी
नींद के हल्के झोंकों में,
तेज-चलती साँसों में,

आई-गयी मुस्कानों में —
बहते पल बन जाते थे
खुशियों का एहसास!

खिल-खिलाकर हँसती थी तुम
नींद की गहराईयों में

झुलाते थे दोलन-पालना हम जब
गोल-आकार पैरों पर

अनन्त-अनगिनत बार।



श्रद्धांजलि

प्रसिद्ध राष्ट्रवादी शायर और पूर्व सांसद पद्मश्री बेकल उत्साही का 3 दिसम्बर 2016 को दिल्ली में 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्रद्धांजलि स्वरूप उनकी दो रचनाएँ यहाँ प्रस्तुत हैं।



बेकल उत्साही

1. सुनहरी सरज़मीं मेरी, रुपहला आसमाँ मेरा
मगर अब तक नहीं समझा, ठिकाना है कहाँ मेरा
किसी बस्ती को जब जलते हुए देखा तो ये सोचा
मैं खुद ही जल रहा हूँ और फैला है धुआँ मेरा
सुकूँ पाएँ चमन वाले हर इक घर रोशनी पहुँचे
मुझे अच्छा लगेगा तुम जला दो आशियाँ मेरा
बचाकर रख उसे मंज़िल से पहले रूठने वाले
तुझे रस्ता दिखाएगा गुबारे-कारवाँ मेरा
पड़ेगा वक्रत जब मेरी दुआएँ काम आएंगी
अभी कुछ तलख़ लगता है ये अन्दाज़-ए-बयाँ मेरा
कहीं बारूद फूलों में, कहीं शोले शिगूफों में
खुदा महफूज़ रक्खे, है यही जन्नत निशाँ मेरा
मैं जब लौटा तो कोई और ही आबाद था 'बेकल'
मैं इक रमता हुआ जोगी, नहीं कोई मकाँ मेरा
2. माँ मेरे गूंगे शब्दों को
गीतों का अरमान बना दे।
गीत मेरा बन जाये कन्हाई,
फिर मुझको रसखान बना दे।
देख सकें दुख-दर्द की टोली,
सुन भी सकें फरियाद की बोली,
माँ सारे नकली चेहरों पर
आँख बना दे, कान बना दे।
मेरी धरती के खुदगर्जों ने
टुकड़े-टुकड़े बाँट लिये हैं,
इन टुकड़ों को जोड़ के मैया
सुथरा हिन्दुस्तान बना दे।
गीत मेरा बन जाये कन्हाई,
फिर मुझको रसखान बना दे।

गुलाब की पंखुड़ियाँ



विगत सात दशकों से सक्रिय, विविध विधाओं मुख्यतः काव्य के पचास से भी अधिक ग्रंथों के प्रणेता, विभिन्न पुरस्कारों और सम्मानों से अलंकृत सबके सुपरिचित गुलाब जी प्रवासी हिन्दी कवियों में एक अति विशिष्ट स्थान रखते हैं।

गुलाब खंडेलवाल

जो न आये लौटके फिर कभी, मुझे उससे मिलने की आस है जो सदा को छोड़ गयी मुझे, उसी हमकदम की तलाश है उसे हाँ कहूँ तो है सब कहीं जो नहीं कहूँ तो कहीं नहीं वही मुझसे दूर ही दूर है मेरे पास से भी जो पास है कभी दिन जो लौट न आयेंगे मेरे दिल से निकल न पायेंगे जो न मिट सके ये वो दर्द है जो न बुझ सके ये वो प्यास है जो गयी भी हो मुझे छोड़कर, छिपी होगी वह किसी मोड़ पर उसे ढूँढ़ ही लूँगा मैं दौड़कर क्यों अभी से, दिल! तू हताश है! कभी पहले भी था ये भरम हुआ मुझे दिल से उसने भुला दिया मेरे कान में आ रही है सदा ये अदा वही मेरी खास है! कोई मुझको ऐसी दुआ न दे कोई मुझको ऐसी सज़ा न दे कि गुलाब अब भी खिला रहे जो बिछुड़के उससे उदास है!

* * * *

हो भी तू भजनों का भूखा
पर कैसे दूँ तुझे भजन-भोजन में रूखा-सूखा!
कैसे भोग तुझे वे भायें
जो न हृदय के तल से आयें!
हों बस शब्दों की क्रीड़ाएँ

योग न हो आँसू का!

जब तक हो न रुद्ध कंठ-स्वर
बना न हो जो आपा खोकर
कैसे तुझे रुचे, जगदीश्वर!

वह मायिक स्वर भू का

पर आशा बँधती प्राणों में
क्या न वही है इन गानों में
तुलसी ने मेरे कानों में

राम-मंत्र जो फूँका!

* * * *

कितने पथ पार कर चुका हूँ माँ
तब तेरे द्वार पर रुका हूँ माँ
अब कहीं और नहीं जाना है
जो भी पाना है यहीं पाना है
जीभ तेरे चरणामृत से धोयी
और अब साध नहीं है कोई

हंस तेरा जहाँ मोती चुगता
काव्य का पौधा वहीं पर उगता
मैं जो कंकर यहाँ लाया चुनकर
क्या पता, हंस वह रीझे उन पर
मोतियों में उन्हें गिना जाये
साधना मेरी पूर्णता पाये

पाँव हैं चलते-चलते हारे

जीवन की संध्या में, प्रभु! मैं आया द्वार तुम्हारे
जिन नगरों में झंडे गाड़े, उजड़ गये वे सारे
जाने कहाँ गये उठ-उठकर माल लिए बंजारे
कैसे-कैसे दृश्य दिखे थे पथ पर प्यारे-प्यारे!
अब आगे है रात अँधेरी जिसमें चाँद न तारे
क्या प्रभात में नये वसन में नई रूप-छवि धारे
लग पाऊँगा तिरता-तिरता मैं फिर किसी किनारे!

* * * *

देहली का यह जीवन प्यारा

मिल पाता क्या मुझे देवमंदिर के शिखरों द्वारा!

ध्वज एकाकी टँगागगन में
घुल-मिल पाता यों जन-जन में!
कर पाता नित हरिदर्शन मैं

वहाँ अहम् का मारा!

सजते वहाँ दिये घृत बाती
भक्तों की पदरज मिल पाती!
क्या यों पूजन फल दे जाती

आ चरणामृत धारा!

ध्वज बन जो नभ में लहराये
क्या भू के स्पंदन सुन पाये
जिस रस से, मेरा कवि गाये

दिया इसीने सारा

* * * *

‘विरोधी बन मुँह कहाँ छिपाऊँ!’

बोला दूत सृष्टिकर्ता से, ‘शरण कहाँ अब पाऊँ!’

विद्रोही चर की पीड़ा सुन
जगत्पिता रह सके न अकरुण
बोले, ‘आ तुझको दे कुछ गुण

तेरी व्यथा मिटाऊँ

जो भी मुझपर ध्यान लगायें
फिरना उनके दायें-बायें
यदि तेरे सुर उन्हें लुभाएँ

मैं न बीच में आऊँ

काम, क्रोध, मद, लोभ, पिशुनता
रह अब जाल इन्हीं से बुनता
मैंभी तेरी कार्य-निपुणता

देख-देख मुस्काऊँ



विज्ञान व्रत की गजलें



17 जुलाई 1943 को मेरठ के टेरा गाँव में जन्मे विज्ञान व्रत का नाम अपनी विशिष्ट शैली के कारण सुपरिचित है। वैसे तो छोटी बहू शायरी में नई नहीं है लेकिन विज्ञान की तो सभी गजलें ही छोटी बहू में हैं। पर मात्र छोटी बहू तक उनकी विशेषताओं को सीमित करना ठीक नहीं है। उनकी विशेषता उनका छंद और भाषा पर अद्भुत अधिकार और व्यंजनापूर्ण सादगी। बढ़िया गजलकार ही नहीं, विज्ञान एक बढ़िया चित्रकार भी है। उनके चार गजल संग्रह अब तक आ चुके हैं— बाहर धूप खड़ी है, चुप की आवाज, जैसे कोई लौटेगा, तब तक हूँ, इसके साथ उनका एक दोहा संग्रह भी है— खिड़की भर आकाश। विश्व के विभिन्न शहरों में कला प्रदर्शनियाँ आयोजित।

पता— N-138, सैक्टर-25, नोएडा-201301 मो. 9810224571 email vigyanvrat@yahoo.com

1.

और सुनाओ कैसे हो तुम।
अब तक पहले जैसे हो तुम।
अच्छा अब ये तो बतलाओ
कैसे अपने जैसे हो तुम।

यार सुनो घबराते क्यों हो
क्यास कुछ ऐसे वैसे हो तुम।
क्यास अब अपने साथ नहीं हो
तो फिर जैसे तैसे हो तुम।

ऐशपरस्ती तुमसे तौबा
मजदूरी के पैसे हो तुम।

2

जैसे बाज़ परिन्दों में
मेरा क्रांतिल अपनों में
अब इंसानी रिश्ते हैं
सिर्फ कहानी-किस्सों में

पढ़ना-लिखना सीखा तो
अब हूँ बंद क्रिताबों में

मौसम को महसूस करूँ
खबरों से अखबारों में
मेरे पैर ज़मीं पर हैं
खुद हूँ चांद-सितारों में!

3

अपने मुँह पर ताले रखना।
खुद को आज सँभाले रखना।

शहर बहुत हैं सूरज तनहा
अपने पास उजाले रखना।

खुद से दूर न होना, अपनी
बाँह गले में डाले रखना।

देख तुझे उलझाएँगे वो
तू भी प्रश्न उछाले रखना।
कल ये पिंजरा ही न रहेगा
कुछ पंछी पर वाले रखना।

4

चुप रहता था क्या करता।
वो तनहा था क्या करता।
कोई भी पहचान नहीं
शहर नया था क्या करता।

उसका कोई नाम न था
सिर्फ पता था क्या करता।

आखिर उसको मौत मिली
सच कहना था क्या करता।

वैसे वो सुकरात न था
जहर बचा था क्या करता।

5

एक जरा सी दुनिया घर की।
लेकिन चीजें दुनिया भर की।

फिर वो ही बारिश का मौसम
खस्ता हालत फिर छप्पर की।

रोज सवेरे लिख लेता है
चेहरे पर दुनिया बाहर की।

पापा घर मत लेकर आना
रात गये बातें दफ्तर की।

बाहर धूप खड़ी है कब से
खिड़की खोलो अपने घर की।

6

बस अपना ही गम देखा है।
तूने कितना कम देखा है।

उसको भी गर रोते देखा
पत्थर को शबनम देखा है।
उन शाखों पर फल भी होंगे
जिनको तूने खम देखा है।

खुद को ही पहचान न पाया
जब अपना अल्बम देखा है।
हर मौसम बेमौसम जैसे
जाने क्या मौसम देखा है।

7

मुझको जब ऊँचाई दे।
मुझको जमीं दिखाई दे।

एक सदा ऐसी भी हो
मुझको साफ सुनाई दे।

दूर रहूँ मैं खुद से भी
मुझको वो तनहाई दे।

एक खुदी भी मुझमें हो
मुझको अगर खुदाई दे।

8

तुम हो तो ये घर लगता है।
वरना इसमें डर लगता है।

कुछ भी नजर ना आए मुझको
आईना पत्थर लगता है।

उसका मुझसे यूँ बतियाना
सच कहता हूँ डर लगता है।

जो ऊँचा सर होता है ना
इक दिन धरती पर लगता है।

चमक रहे हैं रेत के जरे
प्यासों को सागर लगता है।

9

सीधी सादी बात इकहरी।
हम क्या जाने लहजा शहरी।

एक सभ्यता गूँगी बहरी
आकर मेरी बस्ती ठहरी।

जबसे बैठा बाहर प्रहरी
और डरी है घर की देहरी।

मैदानों में सिर्फ कटहरी
रातों उड़कर थकी टिटहरी।

कौन दिखाता ख्वाब सुनहरी
अब तक जिंदा बूढ़ी महरी।

जाने किसकी साजिश गहरी
मुझमें लगती रोज कचहरी।

सर पर ठहरी भरी दुपहरी
हाथ न आये छाँव गिलहरी।

10

दिल भी वो है, धड़कन भी वो
चेहरा भी वो, दरपन भी वो

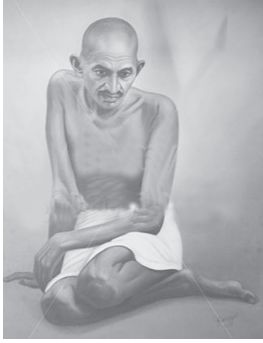
जीवन तो पहले भी था
अब जीवन का दर्शन भी वो

आजादी की परिभाषा भी
जनम-जनम का बंधन भी वो

बिंदी की खामोशी भी है
खन-खन करता कंगन भी वो

प्रश्नों का हल भी लगता है
और जटिल-सी उलझन भी वो

गाँधी-दर्शन का वैश्विक विस्तार



संकलन और सौजन्य स्व. उमाकांत मालवीय

गाँधी के विचारों और कार्यों ने विश्व के अनेक देशों के विचारकों और संघर्षरत व्यक्तियों और समाजों को प्रभावित किया। उनमें से कुछ का चयन हमने अपने पाठकों के लिए किया है। इन विचारों के बल पर आज भी हम उनसे एक मौन संवाद करके प्रेरणा ले सकेंगे।

—सं.

1. मिस्र के अरब चिन्तक, विचारक, मनीषी, जन्मांध कवि और फारूक-शाही के विरुद्ध क्रांति के सूत्रधार डा. ताहा हुसैन ने चौरीचौरा कांड के पश्चात गाँधी द्वारा आन्दोलन वापस लेने पर कहा था—

कथनी और करनी का योग
उपदेश और आचरण का संगम
उसका नाम है
मोहनदास करम चंद गाँधी
वही है, जो सर ऊँचा कर कह सकता है
मैं हूँ जिसने ईसा का सलीब
अपने कन्धों पर उठाया है
मैं हूँ जो महावीर और बुद्ध का सही वारिस हूँ
लोग क्या कहेंगे यह चिंता किए बिना
अभियान में हिंसा का प्रवेश होते ही
उसने आन्दोलन वापस ले लिया
पीछे आ रहे अनुयायी स्तब्ध रह गए
उन्हें कबूल करना पड़ा
साध्य के साथ साधन की पवित्रता भी अनिवार्य है
कैसा नैतिक बल था वह
कैसा आत्मिक बल था वह
अपनी भूल को स्वीकारते हुए
बढ़ा हुआ कदम
तात्कालिक रूप से सफल होता हुआ
वापस ले लिया गया।

2. घाना के भूतपूर्व राष्ट्रपति और अफ्रीका के संघर्ष के अप्रतिम योद्धा और कवि क्वामे एन्क्रूमा ने गाँधी को अपना आदर्श मानते हुए लिखा था—

घने जंगल में थका हारा सिपाही
हताशा में सो गया था
उसके सपने को कृतार्थ किया
एक महात्मा ने एक गुरुदेव ने।
एक ने मुस्कराते हुए अग्निपथ पर चलने की प्रेरणा दी
अपने आचरण के उदाहरण से
एक ने अपनी अमृत वाणी से
मूर्छित चेतना को झकझोर दिया
और उस सिपाही की हार, उसकी थकन
अब अतीत का दस्तावेज मात्र रह गई है
उसके हाथ में आ गई है

अहर्निष संघर्ष की सुलगती हुई मशाल
मेरे नमन लो महात्मा, मेरे नमन लो गुरुदेव।

3. गाँधी जी के ऐतिहासिक दांडी मार्च के सन्दर्भ में अंग्रेज कवि ब्रेल्स्फोर्ड अपनी रचना 'अ हिस्टोरिक मार्च' में कहता है—

यह कौन दुस्साहसी है
यह कौन योद्धा है जो अपने प्यार से
अपनी निःसीम सद्भावना से
अपने सत्य से संसार के सर्वाधिक शक्तिशाली
साम्राज्य को चुनौती दे रहा है
अन्याय के विरुद्ध सतत संघर्ष
इसकी नीयत और नियति है
यह झुकेगा नहीं, यह रुकेगा नहीं, यह चुकेगा नहीं
जब तक अन्यायी का हृदय परिवर्तन नहीं होता
यह केवल भारत की मुक्ति के लिए नहीं
वरण मानवमात्र की मुक्ति के लिए संघर्षरत है
कल संसार के मानव को
एक भीतरी दबाव के कारण
इसके पीछे आना होगा
फिर यह कल क्यों
हम आज ही क्यों न इसके पीछे हो लें
उसका अनुकरण, उसका अनुशरण, उसका अनुगमन
हमारी तुम्हारी सबकी मुक्ति है।

4. अंग्रेजी कवि लारियर क्रिस्टोफर ने 'प्रणाम और गोली' शीर्षक से अपनी कविता में कहा है—

पहले उसने प्रणाम किया
फिर गोली दागी
हम महाभारत काल में पहुँच गए हैं
जब ड्रोन के चरणों में प्रणाम के लिए तीर
और उसके बाद सर उतार लिया गया
यह साजिश है हमें पाँच हजार वर्ष पीछे धकेलने

देने की
 यदि इसी प्रकार पहले प्रणाम
 और फिर गोली दागने का क्रम जारी रहा तो लोगों का
 प्रणाम पर से भरोसा उठ जाएगा
 लोग प्रणाम को केवल एक
 प्रवंचना, एक ढकोसला और धोखा ही मानेंगे।

5. अमरीका में अश्वेतों के अधिकारों के लिए संघर्ष के प्रतीक
 मार्टिन लूथर किंग ने अपनी पुस्तक 'स्ट्राइड्स टुवर्ड्स फ्रीडम' में
 लिखा है—

मुझे नहीं मालूम किस धातु का बना था वह
 उसकी आँखों में गंगाजल ही नहीं
 टेम्स, मिसिसिपी, वोल्गा और ह्वांगहो
 सभी तो लहरती थीं
 ऐल्प्स की ऊँचाई भी समाहित थी
 उनमें हिन्द महासागर ही नहीं
 काला सागर, प्रशांत महासागर
 सभी अपनी गहनता लिए बैठे थे
 कैसे थे उसके संघर्ष के हथियार
 नमक सत्याग्रह, दांडी मार्च,
 चरखा, खादी, असहयोग और अनशन
 कैसी थी उसकी लड़ाई
 जिसमें विद्वेष घृणा के लिए
 कोई जगह नहीं थी।
 हड्डियों के उस ढाँचे में
 कैसा था वह आत्मबल
 मैं सदा उनके प्रसाद का अभिलाषी रहा
 हूँ और रहूँगा।

6. और अंत में जापान के संत कवि तोशियो साका की कविता
 के कुछ अंश—

गाँधी प्रथमतः और अंततः
 एक वैष्णव हिन्दू थे
 हिन्दू जो अन्तिम रूप से कभी नहीं मरता
 जब तक इस धरती का
 एक भी व्यक्ति उदास और दुखी है
 गाँधी उसकी उदासी उसके दुःख में
 हिस्सा बँटाने के लिए
 बराबर आते रहेंगे
 वे आवागमन से न कभी मुक्त होंगे
 और न होना चाहेंगे।

7. कांगो के पहले भारी बहुमत से चुने गए प्रधान मंत्री, स्वतंत्रता
 सेनानी, अप्रतिम हुतात्मा और कवि पेट्रिक लुमुम्बा वहाँ के सैनिक
 शासक ईदी अमीन द्वारा अमानवीय यातना देकर मार डाले गए। गाँधी
 की हत्या के समय वे डाकिए का काम करते थे। उन्होंने 30 जनवरी
 1948 को गाँधी की शहादत पर लिखा था—

महात्मा! तुमने आदमी को
 प्यारा, अहिंसा और सद्भावना देनी चाही
 कैसी जुरत की तुमने गाँधी!
 कैसा था दुस्साहस!
 ऐसा ही दुस्साहस किया था यीशु ने
 फिर यीशु से इतर तुम्हारी
 परिणति क्या होती?
 यह अंत कितना अपूर्व है, कितना मोहक
 क्या मौत इतनी मेहरबान होती है?
 अगर ऐसी मौत मिलनी हो तो
 मैं आज ही
 आज ही नहीं अभी इसी क्षण मरना चाहूँगा
 मृत्यु इतनी श्लाघ्य, मृत्यु इतनी वरेण्य!
 ऐसी ही मृत्यु मुझे भी देना मेरे अंतर्यामी!

दो बाल कविताएँ

देश को सजा देंगे



श्रुति केसरी,
 पटना सिटी

हम देश के माली हैं, देश को सजा देंगे।
 फूलों के नए पौधे, भारत में लगा देंगे।।
 बहती है यहाँ गंगा, बहती है यहाँ जमुना,
 सोने की चिड़िया फिर, भारत को बना देंगे।
 हम देश के माली हैं, देश को सजा देंगे।
 फूलों के नए पौधे, भारत में लगा देंगे।।
 आँसू ना बहा माता, मोती ना लुटा माता।
 हम तेरे ही चरणों में, सर अपना झुका देंगे।।
 हम देश के माली हैं, देश को सजा देंगे।
 फूलों के नए पौधे, भारत में लगा देंगे।।

मेरी भारत माता

मनजीत सिंह, पटना सिटी



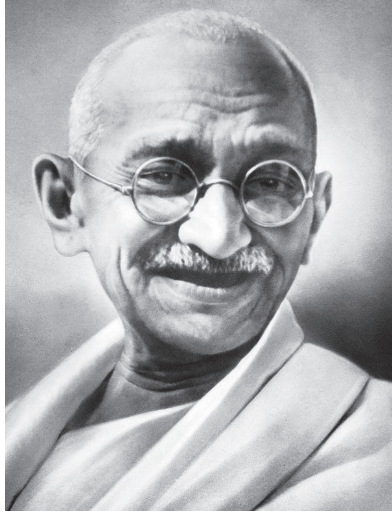
सुनो! सुनो हे भारत माता सब तेरे ही गुण गाते हैं।
 सब तेरी मिट्टी से बनकर तुझमें ही मिल जाते हैं।
 तू ही पाल पोसकर सबको है बलवान बनाती,
 और रत्न की खान उगलकर ललनाओं का अंग सजती।
 सुनो! सुनो हे भारत माता
 तेरी पावन छाती पर, गंगा और यमुना है बहती,
 और अपनी छाती पर तुम कितने पर्वत को धारण करती।
 सुनो! सुनो हे भारत माता सब तेरी ही गुण गाते हैं।

शिक्षा का माध्यम : मातृभाषा

मोहनदास करमचंद गाँधी
(अनुवादक : संजीव निगम)

आइये, मैं अपने खुद के अनुभव से एक पाठ पढ़ाता हूँ। 12 वर्ष की उम्र तक मैंने जो कुछ भी ज्ञान हासिल किया वह अपनी मातृ भाषा गुजराती के माध्यम से हासिल किया था। तब मुझे गणित, इतिहास और भूगोल के बारे में थोड़ा बहुत पता था। उसके बाद मैंने हाई स्कूल में दाखिला लिया। वहाँ पहले तीन साल मातृभाषा शिक्षा का माध्यम थी। लेकिन मुख्याध्यापक का काम था छात्रों के दिमाग में अंग्रेजी को घुसेड़ना। अतः हमारा आधा समय अंग्रेजी सीखने और इसकी वर्तनी और उच्चारण को सीखने में जाता था। एक ऐसी भाषा को सीखना काफी तकलीफदायक था जोकि जैसे लिखी जाती है वैसे ही बोली नहीं जाती है। वर्तनी को रटना एक अजीब सा अनुभव था। पर चलिए ये बात मेरे तर्कों के लिए प्रासंगिक नहीं है। हालाँकि, पहले तीन साल कुछ आराम से गए।

मुसीबत तो चौथे साल से शुरू हुई। सारे विषयों, ज्यामिति, बीज गणित, रसायन शास्त्र, इतिहास, खगोल शास्त्र, भूगोल को अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ना था। अंग्रेजी का प्रकोप इतना ज़्यादा था कि संस्कृत या फ़ारसी को भी अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ना पड़ता था न कि मातृभाषा के माध्यम से। अगर किसी बच्चे ने कक्षा में गुजराती में बात कर दी तो उसे सजा दी जाती थी। हालाँकि अध्यापक को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि बच्चा गलत अंग्रेजी बोल रहा है, बच्चे को न सही उच्चारण आता है, न वह सही से अंग्रेजी समझता है। और फिर, अध्यापक क्यों चिंता करता? उसकी खुद की अंग्रेजी भी तो माशाअल्लाह थी। वैसे इसके सिवाय और हो भी क्या सकता था क्योंकि उसके लिए भी अंग्रेजी उतनी ही विदेशी भाषा थी जितनी कि उसके चेलों के लिए। इसका परिणाम क्या था, एकदम गपड़चौथ। हम लड़कों को कई ऐसी चीजें याद करनी पड़ती थीं जिन्हें हम पूरी तरह से समझ नहीं पाते थे बल्कि कभी-कभी तो बिलकुल नहीं समझ पाते थे। जब अध्यापक ज्यामिति की व्याख्या समझाने के लिए संघर्ष कर रहे होते थे तो मेरा सिर चकराने लगता था। जब तक हम युक्लिड की पहली किताब की 13 वीं थियोरम तक नहीं पहुँच गए थे तब तक मेरे पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा था। साथ ही मैं अपने पाठकों के सामने यह भी स्वीकारना चाहता हूँ कि मातृभाषा के प्रति अपने लगाव के बावजूद मुझे ज्यामिति, बीजगणित आदि की तकनीकी शब्दावली के गुजराती



समानार्थक शब्दों का आज तक पता नहीं है।

मुझे आज एहसास होता है कि गणित, ज्यामिति, बीजगणित, रसायन शास्त्र और खगोल शास्त्र को सीखने में मुझे जो चार साल लगे वह काम मात्र एक साल में हो सकता था अगर मैंने उन्हें अंग्रेजी की बजाय अपनी मातृभाषा गुजराती में पढ़ा होता। इन विषयों को सीखने की मेरी पकड़ ज़्यादा आसान और साफ रहती। मेरी गुजराती शब्दावली समृद्ध होती। मैं इस ज्ञान का उपयोग अपने खुद के घर में कर सकता था। अंग्रेजी ने मेरे और मेरे अंग्रेजी न पढ़े-लिखे घरवालों के बीच एक अभेद्य दीवार बना दी थी। मैं क्या पढ़ रहा था इसके बारे में मेरे पिता एकदम अनजान थे। मैं जो कुछ पढ़ रहा था उसमें मैं चाह कर भी अपने पिता की रुचि नहीं जगा सकता था। उनके पास बहुत सारा ज्ञान था लेकिन वे अंग्रेजी का एक शब्द भी नहीं जानते थे। मैं धीरे-धीरे अपने ही परिवार में अजनबी बनता जा रहा था। मैं उनसे श्रेष्ठ हो गया था। यहाँ तक कि मेरी पोशाक में भी अकल्पनीय परिवर्तन आने लगे थे। जो कुछ मेरे साथ हो रहा था वह एक सामान्य अनुभव बन रहा था।

हाई स्कूल के पहले तीन वर्षों ने मेरे सामान्य ज्ञान को बढ़ाने में कोई खास योगदान नहीं किया। वे तो एक तरह से छात्रों को सब कुछ अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ने के लिए तैयारी जैसे ही थे। हाई स्कूल वास्तव में अंग्रेजी की सांस्कृतिक विजय का प्रतीक थे। मेरे हाई स्कूल के तीन सौ छात्रों द्वारा प्राप्त ज्ञान उनके अपने तक सीमित संपत्ति बन गया। वह आम आदमी तक पहुँचाने के लिए नहीं रहा।

अब साहित्य के बारे में कुछ बात। हमें इंग्लिश गद्य और पद्य की कई किताबें पढ़नी पड़ती थीं। इसमें कोई शक नहीं कि वे बहुत अच्छी थीं। पर उनसे मिले ज्ञान का आम आदमी की सेवा करने या उनके संपर्क में आने में कोई उपयोग नहीं था। मेरे लिए यह कहना मुश्किल है कि अगर मैंने वह अंग्रेजी गद्य और पद्य न पढ़ा होता तो क्या मैंने एक अमूल्य खजाना खोया होता? किन्तु अगर मैंने वे सात बहुमूल्य वर्ष गुजराती में विद्वता हासिल करने और गणित, विज्ञान और संस्कृत और अन्य विषय गुजराती माध्यम से सीखने में लगाए होते, तो मैं वह ज्ञान अपने पड़ोसियों के साथ आसानी से बाँट सकता था। और हो सकता है कि तब मैं अपनी लगन तथा देश तथा मातृभाषा के लिए अपने असाधारण प्यार की वजह से आम लोगों की सेवा में ज़्यादा बड़ा योगदान दे सकता था।

ऐसा नहीं समझा जाना चाहिए कि मैं अंग्रेजी या उसके बढ़िया साहित्य की निंदा कर रहा हूँ। 'हरिजन' के विशेष आलेख अंग्रेजी के प्रति मेरे प्यार के प्रमाण हैं। किन्तु जैसे इंग्लैंड की प्राकृतिक खूबसूरती या वातावरण से भारत को कोई लाभ नहीं हो सकता है वैसे ही उसके साहित्य की श्रेष्ठता से भी हमें कोई लाभ नहीं हो सकता है। हमें और

हमारे बच्चों को अपनी विरासत पर ही आगे बढ़ना होगा। अगर हम दूसरों से लेंगे तो अपने आपको शक्तिहीन करेंगे। विदेशी खाद पर हम पनप नहीं सकते हैं। मैं उस भाषा के खजाने को और उसके साथ ही अन्य विदेशी भाषाओं के खजानों को अपनी भाषाओं के माध्यम से लेना चाहता हूँ। मैं रवीन्द्रनाथ के अप्रतिम साहित्य को पढ़ने के लिए बाँग्ला नहीं सीखना चाहता हूँ बल्कि उसे अनुवाद के माध्यम से प्राप्त करना चाहता हूँ। टॉलस्टॉय की रूसी कहानियों का आनंद लेने के लिए गुजराती लड़के लड़कियों को रूसी भाषा सीखने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। उन्हें ये कहानियाँ अच्छे अनुवाद के जरिये पढ़ने को मिलनी चाहिए। अंग्रेजों का यह दावा है कि विश्व का कोई सा भी बेहतर साहित्य अपने प्रकाशन के एक सप्ताह के भीतर ही आसान अंग्रेजी में उनके लोगों को उपलब्ध होता है। मिल्टन और शेक्सपीयर ने जो सर्वश्रेष्ठ लेखन किया है उसे पढ़ने के लिए मुझे अंग्रेजी सीखने की जरूरत क्यों होनी चाहिए?

बेहतर तो यह होगा कि कुछ विद्यार्थियों को अलग से यह जिम्मेदारी दी जाए कि वे ये देखें कि संसार की विभिन्न भाषाओं में

सीखने लायक श्रेष्ठ क्या है और उनके अनुवाद स्वदेशी भाषाओं में उपलब्ध कराएँ। हमारे मालिकों ने हमारे लिए गलत रास्ता चुना है और आदत की वजह से अब हमें गलत भी सही दिखने लगा है।

शिक्षा का माध्यम किसी भी हालत में तुरंत बदला जाना चाहिए। प्रादेशिक भाषाओं को अपना उचित स्थान मिलना चाहिए। मैं तो इस बढ़ती आपराधिक हानि की तुलना में उच्च शिक्षा में कुछ दिनों की उठापटक ज्यादा पसंद करूँगा।

प्रादेशिक भाषा का स्तर और महत्व बढ़ाने के लिए, मैं चाहूँगा कि न्यायालयों की भाषा वही हो जिस प्रदेश में स्थित हों। विधान सभा की कार्यवाही भी उसी प्रदेश की भाषा अथवा भाषाओं में हो। मैं विधायकों को सुझाव देता हूँ कि वे अच्छे प्रयास करके एक मास के भीतर ही अपने प्रदेश की भाषाओं को समझ सकते हैं। किसी भी तमिल भाषी को मलयालम, कन्नड़, तेलुगु के कुछ सौ शब्द और साधारण व्याकरण सीखने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। केन्द्र में हिंदुस्तानी का राज्य होना चाहिए।

हरिजन, 9.7.1938

एक जुनूनी हिंदी-प्रेमी

आओ इस लगन को सलाम करें

लोगों ने पत्थर मारे, फिर भी पढ़ाते रहे हिन्दी, आखिर लोगों को रास आए नगालैंड के दीमापुर के राष्ट्रभाषा हिंदी शिक्षण संस्थान के प्राचार्य एम.पी. तेमजन जामीर ने 1988 में जब नगा लोगों को हिंदी पढ़ाने का अभियान शुरू किया, तो उनके समाज के लोगों ने ही एक तरह से उनका बहिष्कार शुरू कर दिया। तब कई बार हिंदी पढ़ाने की वजह से उन पर पथराव हुआ। नगा लोग उन्हें देखकर थूकते थे।

जामीर कहते हैं, 'चूँकि खुद भी नगा समुदाय के 'आओ' जनजाति से हूँ, इस वजह से हिंदी को बढ़ावा देने के बावजूद मेरी हत्या नहीं की गई'।

बॉलीवुड की फिल्मों और हिंदी धारावाहिकों की वजह से नगालैंड में हिंदी का प्रभाव बढ़ा है। मगर वह संतोषजनक स्थिति में अब तक नहीं पहुंचा है। वे बताते हैं कि हिंदी देवनागरी लिखावट है। नगा वर्णों का उच्चारण देवनागरी उच्चारण से बहुत मिलता-जुलता है।

दूसरे शब्दों में कहें तो नगा वर्णों का उच्चारण देवनागरी ही है। यही वजह है कि नगामिस बोली की देवनागरी लिपि तैयार की गई है। और यह काम किया है— एम.पी. तेमजन जामीर ने।

रामनाथ सिंह, दीपक कुमार, रधुबां सिंह, निर्मला त्रिपाठी, हरेंद्र कुमार सिंह जैसे बहुत से लोगों का सहयोग इसमें मिला।

जामीर कहते हैं कि नगालैंड का भविष्य भारत और हिंदी भाषा के साथ बने रहने में है।

वैसे अभी तक इस लिपि पर आम सहमति नहीं बन पाई है, क्योंकि कुछ लोग नगामिस की अपनी अलग लिपि बनाने की दलील दे रहे हैं।

एक उत्साहवर्द्धक शुरुआत



साउथ कैरोलाइना की गवर्नर, भारत मूल की निक्की हेली को संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी दूत नामित करने की भारतीय-अमेरिकी लोगों ने पार्टी लाइन से ऊपर उठकर सराहना की है और कहा है कि इससे आगामी ट्रंप प्रशासन में भारत और अमेरिका के बीच संबंध और मजबूत होंगे। 44 वर्षीय हेली अमेरिकी राष्ट्रपति के शासन में कैबिनेट स्तर की पहली भारतीय अमेरिकी अधिकारी होंगी।

इससे न केवल भारतीय-अमेरिकी समुदाय रिपब्लिकन पार्टी के करीब आएगा बल्कि भारत और अमेरिका के बीच संबंध भी मजबूत होंगे। हो सकता है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत को उसका सही स्थान प्राप्त होने और अन्य महत्वपूर्ण मामलों में इसका लाभ मिले। हेली के बारे में एक अच्छी बात यह है कि वह अब भी अपनी जड़ों और विरासत से जुड़ी हुई हैं।

संत रविदास जयंती (माघ पूर्णिमा) पर विशेष



मानवीय संदर्भों के कवि : संत रैदास

जन्म : 20 फरवरी, 1989, बलिया, उत्तर प्रदेश, भारत। शिक्षा : अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ से हिन्दी विषय में स्नातक तथा स्नातकोत्तर। यूजीसी नेट एवं जे.आर.एफ.।

अम्बरीन आफताब

वर्तमान में, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के हिन्दी विभाग में 'शाही मासूम रज़ा के उपन्यास : संवेदना के आयाम' विषय पर शोधरत।

हिन्दी के विभिन्न स्तरीय शोध-पत्रिकाओं में शोध-पत्र व आलेख प्रकाशित। मध्यकालीन हिन्दी साहित्य तथा काव्यशास्त्र में गहन रुचि। हिन्दी भाषा के साथ-साथ उर्दू एवं अंग्रेज़ी भाषा पर भी समान रूप से अधिकार। संपर्क : 4/465, शराफत लॉज, शौक्रत मंजिल, दोधपुर, अलीगढ़, उ.प्र.। पिन-202002 मो. 08791411898 ईमेल: ambreenaffan@gmail.com

अपनी अमर वाणी से मानव जीवन को अभिनव दिशा प्रदान करने वाले निर्गुणपंथी संत महापुरुषों में गुरु रैदास अथवा रविदास का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रभु के अनन्य भक्त, संत रैदास ने अपने संदेशों एवं रचनाओं के माध्यम से जीवनयापन की ऐसी युक्ति सिखाई जो आज भी पूर्ण प्रासंगिक है। वैष्णव मत से प्रभावित रैदास प्रेम और भक्ति के पक्षधर रहे हैं। रैदास की वाणी भक्ति की अप्रतिम भावना, समाज के व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम से ओत-प्रोत थी। इसी कारणवश उनकी रचनाओं का जनसाधारण के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। न केवल उनकी वाणी सहज जीवनयापन के संदेशों से संपृक्त है, अपितु उनका समस्त जीवन इस अनुपम पद्धति का जीवंत उदाहरण है। संत रैदास कबीर के समकालीन माने जाते हैं। "रामानन्द जी के बारह शिष्यों में रैदास की भी गणना होती है तथा इनकी भक्ति भी निर्गुण ढाँचे की जान पड़ती है।" चौहदवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अवतरित हुए रविदास ने समाज में जाति की अपेक्षा कर्म की सर्वोच्चता को स्थापित किया।

थोथा मन्दिर भोग-विलासा, थोथी आन देव की आसा।

साँचा सुमिरन नाँव बिसास, मन-बच-कर्म कहै रैदासा।।

रैदास ने सदैव कर्ममय जीवन जीने पर बल दिया। उनके अनुसार, समाज से विरक्त होकर समाज में व्याप्त कुरीतियों का उन्मूलन नहीं हो सकता। समाज में रहकर ही उच्च विचारों एवं कर्मों के द्वारा जीवन में सत्य की प्रतीति होती है। "सहज संत रैदास गृहस्थ होकर गृहस्थ से ऊपर उठे। अपने व्यवसाय में चर्मकारी को पूर्ण आस्था से संजोये जीवनयापन में जूतियाँ गाँठना भरण-पोषण का साधन रखा।" अपनी जाति का उल्लेख करते हुए वे स्वयं कहते हैं—

नागर जनाँ! ऐसी मेरी जाति बिखियात चमारं।।

हिरदै नाँव गोब्यंद गुणसारं।।

रैदास ने अपनी वाणी के माध्यम से वेदान्तों में निहित सिद्धान्तों का सरलीकृत रूप में प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने काम, क्रोध, मोह, मद, माया को मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु माना—

राम नाम संसै-गाँटि न छूटै।

काम-क्रोध-मोह-मद-माया, इन पाँचन मिलि लूटै।।

रैदास ने अपने जीवन में भी इन पाँच शत्रुओं को स्वयं से दूर रखा। अतएव, एक ओर जहाँ ऐसी निर्लिप्तता के दर्शन होते हैं तो वहीं दूसरी ओर वर्तमान जगत का मानव है जो लोभ, मोह के दलदल में फँसा हुआ है। इसके परिणामरूप समाज में भ्रष्टाचार, अनाचार आदि स्थितियाँ सर्वत्र व्याप्त हो रही हैं। संत रैदास ने सदैव ऐसी स्थितियों से मुक्त रहने का संदेश दिया। मनुष्य की लोभी प्रवृत्ति पर व्यंग्य करते हुए रैदास कहते हैं—

माटी कौ पूतरा कैसे नचतु है।।

देखै सुणै बोलै दौयों फिरतु है।।

जब कछु पावत गरब करतु है,

माया गई तौ रौवन लगतु है।।

अर्थात् शरीर माटी की पुतला है जो नाना प्रकार के कर्मों में लीन रहता है। उसे जब कुछ प्राप्त हो जाता है तब वह गर्व से भर उठता है और जब मोह-माया समाप्त होती है तो निराश होकर रोने लगता है। रैदास के अनुसार, शरीर तो भौतिक वस्तु है जिसे नष्ट हो जाना है। हमें इस पर अभिमान न करके अपने अन्तर्मन को निखारना चाहिए। भौतिक

वस्तुओं पर अहंकार करना तो सारहीन एवं निरर्थक है क्योंकि जीवन तो भादों में उगने वाले कुकुरमुत्ते की तरह है—

तू काँइँ गरबहि बावली।

जैसे भादउ खूँब राजतु, तिस ते खरी उतावली।।

गुरु रैदास की मान्यता थी कि प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का अंश है और जिसका हृदय शुद्ध है, वह स्वयं ईश्वर का रूप है। जिसका हृदय दया, करुणा आदि भावों से परिपूर्ण होता है, वही दूसरों की पीड़ा तथा कष्टों का

अनुभव कर सकता है—

कौ का जानै पीर पराई।

जाके दिल मै दरद न भाई।।

हिन्दी साहित्य के जिस युग में संत रैदास का प्रादुर्भाव हुआ, वह सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक दृष्टि से अशांति और अव्यवस्था का युग था। तत्कालीन समाज में व्याप्त जातिवादी मानसिकता उन्हें उद्धेलित करती थी। पुरुषार्थ दर्शन के प्रणेता, गुरु रैदास अपने युग के परिवेश एवं वातावरण से प्रभावित चिंतन के सर्जक थे। उनकी वाणी में अपने युग की सम्पूर्ण चेतना मुखर हो उठती है। उनकी स्वानुभूतिमयी चेतना ने समाज में नूतन जागृति का संचार किया। उनके मौलिक चिंतन ने शोषित एवं अपेक्षित जनों के हृदय को आत्मविश्वास से भर दिया। संत रैदास ने मानवता की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया—

रैदास कहै जाके हिरदय, रहै रैन दिन राम।

सो भगता भगवंत सम, क्रोध न ब्यापै काम।।

संत रैदास ने नाम को राम से अधिक प्रभावशाली माना है। उनके मतानुसार, नाम ही राम, रहीम आदि विभिन्न संज्ञाओं एवं धारणाओं की एकसूत्रता का प्रतीक है और इसी एकसूत्रता में विश्वशान्ति, लोक सामंजस्य तथा लोक-कल्याण के बीज निहित है। निर्गुण ब्रह्म में आस्था रखने वाले संत कवियों ने अपने संदेशों के माध्यम से लोक कल्याण की भावना को प्रबल किया। संत रैदास भी अपवाद नहीं थे। उनके अनुसार—

क्रिस्न-करीम, राम-हरि-राघव, जब लग एक न पेशा।
वेद-कतेब, कुरान-पुरानन, सहज एक नहिं देशा।।
जोड़-जोड़ पूजिय, सोई-सोई काँची, सहजि भाव सत होई।
कहै रैदास मै ताहिकौ पूजूं जाके ठाँव-गाँव नहिं कोई।।

संत रैदास ने श्रद्धा, भक्ति तथा कर्म पर बल देते हुए यह प्रतिपादित किया कि मनुष्य की जाति-कुल नहीं, उसके कर्म ही श्रेष्ठता के परिचायक होते हैं। एकनिष्ठ परिश्रम और सत्कर्मों से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। नीची जाति में जन्म लेने पर भी यदि हृदय में विनम्रता, सत्य, दया आदि मानवीय गुण विद्यमान हैं तो वह मनुष्य प्रभु की विशेष कृपा का पात्र है। संत रैदास का मानना है कि मनुष्य मात्र घास की टाटी है जिसे जलकर मिट्टी में मिल जाना है। इस क्षणभंगुर जीवन के प्रति हृदय में अत्यधिक मोह मानवता के हित में नहीं है—

ऊँचे मंदिर साल रसोई। एक घरी पुनि रहनि न होई।

यह तन जैसे घास की टाटी। जलि गई घास रलि गई माटी।।

संत शिरोमणि रैदास का विश्वास था कि यदि सभी प्राणी दुर्गुणों एवं विकारों को त्यागकर हृदय की शुद्धता पर बल दें तो श्रेष्ठ समाज की स्थापना हो सकती है। इसी कारण उन्होंने भेदभाव का विरोध करते हुए सामाजिक एकता पर विशेष बल दिया है। अतः यह कहना समीचीन होगा कि एकत्व से परिपूर्ण विचारधाराओं, विषम संघर्षों, प्रबल धार्मिक व सामाजिक समस्याओं एवं सूक्ष्म दार्शनिक उन्मेषों ने अपनी मूर्त अभिव्यंजना के लिए संत रैदास की वाणियों में स्वयं को आत्मसात कर लिया। मानव धर्म को सर्वोपरि मानने वाले ‘रैदास की सीधी-सादी मर्मस्पर्शी वाणियाँ लोगों के हृदय में अपूर्व श्रद्धा और भक्ति की प्रेरणा देती रहती हैं।’

यद्यपि सिद्ध संत रैदास ने तत्कालीन समाज में व्याप्त परंपरागत रूढ़ियों, मान्यताओं तथा सामाजिक कुरीतियों आदि का प्रबल विरोध किया, तथापि उनकी वाणी में एक विशेष मधुरता का भाव विद्यमान है। ‘‘महात्मा रविदास बड़े ही मधुर स्वभाव के भक्त थे। उन्होंने किसी पर कठोर आक्षेप या व्यंग्य नहीं किया। इस अर्थ में वे सच्चे वैष्णव थे—अहिंसक, निरभिमान और मानदाता।’’ स्पष्ट है कि संत कबीर की वाणी में जहाँ आक्रोश और अक्खड़पन के दर्शन होते हैं, वही संत रैदास की रचनात्मक दृष्टि विभिन्न धर्मों को समान भाव से मानवता के मंच पर लाती है। वस्तुतः वह सच्चे अर्थों में, मानव धर्म के संस्थापक थे।

धर्म और समाज के उद्धारक रैदास ने एक बुद्धिजीवी कवि तथा आध्यात्मिक संत के रूप में जन-साधारण के मानसपटल को अत्यधिक प्रभावित किया। इनके व्यक्तित्व में सन्तत्व एवं कवित्व का अद्भुत सम्मिश्रण दृष्टिगोचर होता है। यह कहा नहीं जा सकता कि इनके सन्तत्व ने कवित्व को प्रसूत किया अथवा कवित्व ने सन्तत्व को तीव्रता दी।

कदाचित दोनों ने ही एक-दूसरे को समृद्ध किया है। इनके कवित्व ने इन्हें संत की पदवी तक पहुँचाया और इनके संतत्व ने इनकी कविता में अद्भुत आकर्षक, पकड़ और प्रभाव भर दिया। तात्पर्य यह है कि इनकी वाणी में मानवीय हृदय का संस्पर्श करने की अद्भुत शक्ति परिलक्षित होती है। श्री नाभादास कृत ‘भक्तभाल’ में रैदास के स्वभाव और उनकी चारित्रिक उच्चता का प्रतिपादन मिलता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी, संत रैदास के विचार समाजोत्थान व मानव जीवन के कल्याण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। सीधे-सादे पदों में संत कवि ने हृदय के भाव बड़ी सहजता से प्रकट किए हैं। इनका आत्मनिवेदन, दैन्य भाव और सहज भक्ति पाठकों के हृदय को भावविभोर करते हैं। उन्होंने अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया कि मनुष्य अपने जन्म व कुल के आधार पर महान नहीं होता अपितु विचारों की श्रेष्ठता, समाज के हित की भावना से प्रेरित कार्य तथा सद्व्यवहार जैसे गुण ही मनुष्य को महान बनने में सहायक होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण रैदास को समाज में अत्यधिक सम्मान प्राप्त हुआ। रैदास का प्रभाव आज भी भारत में दूर-दूर तक फैला हुआ है तथा इस मत के अनुयायी रैदासी या रविदासी कहलाते हैं।

‘‘मधुर एवं सहज संत रैदास की प्रेरणामयी वाणियों ने सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित, आर्थिक दृष्टि से वंचित और राजनीतिक दृष्टि से तिरस्कृत सहस्र-सहस्र अकारण दण्डित मनुष्यों में सिर ऊँचा करके चलने की शक्ति दी है और मनुष्य-जीवन के उत्तम लक्ष्य तक पहुँचने की प्रेरणा दी है।’’ रैदास ने सदैव समता एवं सदाचार पर बल दिया। वे खण्डन-मण्डन में विश्वास नहीं करते थे तथा सत्य को शुद्ध रूप में प्रतिपादित करना ही उनका ध्येय था।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि संत शिरोमणि रैदास उच्च कोटि के जननायक एवं मानवता के उद्धारक के रूप में सदैव चिरस्मरणीय रहेंगे। वर्णाश्रम-धर्म को समूल नष्ट करने का संकल्प, कुल और जाति की मिथ्या सिद्धि का खण्डन-संत रैदास द्वारा अपनाए गए समन्वयवादी मानवधर्म के ही आधारभूत तत्व हैं। इनके मौलिक चिंतन एवं अभिनव चेतना की छाप समाज एवं जनमानस के हृदय पर अमिट रूप से लगी हुई है।

रोचक जानकारी

अब तक की सबसे बड़ी लाल पत्तागोभी

ब्रिटेन के लीड्सटाउन कॉर्नवेल के डेविड थॉमस ने इस वर्ष के नैशनल जॉइंट वेजिटेबल चैम्पियनशिप में 23.2 किलोग्राम वजन वाली विश्व का सबसे भारी लाल पत्ता गोभी उगाकर 90 वर्ष से भी अधिक पुराना रेकॉर्ड तोड़ दिया है।



इससे पहले वर्ष 1925 में स्टेविले, डर्बीशायर के आर स्ट्रॉ ने 19.05 किलोग्राम के गोभी का उत्पादन किया था।

बंधनहीनता : एक नई सोच

मदनलाल शर्मा

मदनलाल शर्मा राजस्थान के वरिष्ठ अधिवक्ता और उपन्यासकार हैं जिनके अब तक प्रकाशित सभी सातों उपन्यास, बिना किसी नारी विमर्श का हल्ला मचाए, नारी की जिजीविषा और मानवीय मूल्यों में आस्था का अद्भुत चित्रण करते हैं। सम्पर्क— बिहारी मार्ग, जैन मंदिर के पास, सीकर-332001, फोन 94130-10977

‘विश्वा’ के जनवरी 2016 के अंक के संपादकीय ‘बंधनहीनता’ के विमर्श को आगे बढ़ाते हुए इस आलेख में अपने अनुभूत सत्त्यों से पाठकों को परिचित करा रहे हैं। हम ‘विश्वा’ के सभी चिन्तनशील पाठकों से ऐसी चर्चाओं में भाग लेने का आग्रह करते हैं। यही लिखने, पढ़ने और वैचारिक संवाद का मार्ग है जो जीवन को सँवारता और सुलझाता है।—सं.)

पराधीनता चाहे व्यक्ति के संबंध में हो अथवा राष्ट्र के, सदैव कष्टकारी ही समझी जाती है। इसके उलट स्वाधीनता खुली हवा में साँस लेने जैसा होता है। पराधीन राष्ट्र जब-जब स्वाधीन हुए हैं, उनके हौसले आसमान को छूते रहे हैं। प्रायः सभी राष्ट्रों की एक सामान सोच है कि स्वाधीन होते ही देश को जैसे कोई जादू की छड़ी मिल जाएगी किन्तु न ऐसा हुआ है और न होता है। प्रत्येक नव-स्वाधीन राष्ट्र को स्वाधीनता का मूल्य चुकाना पड़ता है एवं अपने भविष्य को सँवारने के लिए अपनी स्वाधीनता की सीमा रेखाएँ भी तय करनी पड़ती हैं जिनमें समय-समय पर परिवर्तन भी होते रहते हैं। आज के वैश्वीकरण के युग में स्वाधीन राष्ट्र भी कहीं न कहीं बंधन में हैं। स्वाधीन राष्ट्रों को भी अंतर्राष्ट्रीय कानून की परिधि में रहना पड़ता है। मनमाने आचरण की छूट तो अत्यन्त समृद्ध एवं महाशक्तिशाली गिने-चुने राष्ट्रों को ही है लेकिन उसकी भी एक सीमा है। किन्तु ऐसी छूट जिसे हम कह सकते हैं—‘राष्ट्र के संबंध में बंधनहीनता’— क्या सचमुच विश्व के लिए सेहतमंद है? उत्तर संभवतः ना में ही मिलेगा। धन और शक्ति कभी स्थाई नहीं रहते। ये आनी-जानी चीजें हैं। आज जो राष्ट्र खुद को बन्धनहीन मान रहे हैं, हो सकता है कल उन्हें किसी बंधन में बँधना पड़ जाय। इसके कारण आर्थिक, प्राकृतिक अथवा सामरिक कुछ भी हो सकते हैं।

भविष्य का कल आवश्यक नहीं कि आज जैसा ही हो। भविष्य को आज तक किसी ने नहीं बाँचा है। उसकी भाषा और लिपि मनुष्य की समझ से परे है। चंद बंधनहीन राष्ट्र मिलकर कमजोर राष्ट्रों को बंधन में रख सकते हैं उन पर अपनी जायज-नाजायज शर्तें थोप सकते हैं। बंधनहीन राष्ट्र की एक हो सोच होती है कि वह यदि कुछ गलत भी कर रहा है तो उसे सही मान लिया जाना चाहिए। और बंधन

में रहने वाला राष्ट्र या दूसरे शब्दों में कहें कि कमजोर राष्ट्र यदि सही भी कह रहा है तो उसे बड़े के इशारे पर गलत मान लेने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। जिन राष्ट्रों ने शांति स्थापना के लिए अपना सब कुछ लुटा दिया उन्हें आज कोई पूछता नहीं है। और जिस समृद्ध राष्ट्र ने कमजोर राष्ट्र पर परमाणु हमले भी कर दिए उसे शांति का मसीहा मानकर सम्मत किया जाता है। बंधनहीनता अंततः स्वच्छंदता की और जाना ही है। जहाँ नैतिकता, नियम, कानून-कायदे सब ठेंगा दिखने के लिए होते हैं।

बात करें व्यक्ति की बंधनहीनता की। बंधन और दासता में अन्तर होता है। पिछले कुछ दशकों में देश में विमर्शों की बाढ़ आई हुई है। जिन्हें हम स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श अथवा अन्यान्य नामों से जानते हैं। दलितों का उत्थान, एवं स्त्री की स्वाधीनता दोनों ही बातें युग-सन्दर्भ में तथा सृष्टि की सुन्दरता एवं सम्पूर्णता के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हैं। लेकिन दोनों ही विमर्श अति की ओर बढ़ रहे हैं। दलित उत्थान को अभी आगे तक ले जाना है जब तक कि दलित और सवर्ण का भेद पूरी तरह से समाप्त नहीं हो जाता लेकिन दलित विमर्शकारों को शिखर छूने के लिए यह छूट नहीं दी जा सकती कि वे बंधनहीन होकर आचरण करें।

आज हम दलित वर्ग से आए बहुत से व्यक्तियों को युग-निर्माता, राष्ट्र-निर्माता एवं कानून निर्माता मानते हैं क्योंकि वे युगीन सन्दर्भ में इसके योग्य हैं। लेकिन तत्कालीन समय में रचे गए विधान की, जो स्मृतियों के रूप में हजारों वर्षों तक कमोबेश प्रयोग में आता रहा है और जिसमें हो सकता है क्षेपक भी आ गए हों, की प्रतियाँ जलाना कहाँ तक उचित है? की भी कानून जब अप्रासंगिक हो जाता है तो या तो उसमें समयानुकूल संशोधन करना पड़ता है अथवा पूरे कानून को ही निरस्त कर दिया जाता है। लेकिन अप्रासंगिक कानून की प्रतियाँ नहीं जलाई जातीं। पूर्वजों को गाली देना खुद को गाली देने जैसा ही है। आवश्यकता बीते समय में झाड़ू लगाने की नहीं बल्कि वर्तमान की गन्दगी एवं कलुष को मिटाकर, आज को स्वच्छ और सुन्दर बनाने के लिए झाड़ू का प्रयोग ज्यादा प्रासंगिक है।

‘स्त्री-विमर्श’ को वर्तमान सन्दर्भ में जिस तरह से व्याख्यायित किया जा रहा है, उसे पढ़ सुनकर तो हैरानी होती है। पुरुष पिता बन सकता है लेकिन मातृत्व की शक्ति तो स्त्री में ही होती है। स्त्री की शिक्षा एवं स्वतंत्रता की बात करें वहाँ तक तो विमर्श का कोई अर्थ है किन्तु विमर्श के नाम पर स्त्री की स्त्री के रूप में पहचान को ही अस्वीकार करने लग जाएँ या उसे पुरुष ही मान लेने की जिद करने लगें तो ऐसा विमर्श न पुरुष के लिए हितकारी है और न ही खुद स्त्री के लिए। स्त्री और पुरुष ईश्वर की दो कृतियाँ हैं जो एक होकर भी भिन्न-भिन्न हैं और भिन्न-भिन्न होकर भी एक हैं।

वर्तमान समय में ‘लिव-इन’ की अवधारणा बहुत तेजी से फैल रही है। यह बंधनहीनता का एक उदाहरण है किन्तु इसके परिणाम कितने घातक आ रहे हैं, क्या हमने कभी इस पर गंभीरता से गौर किया है? इसके तात्कालिक परिणाम से कहीं अधिक घातक इसके

दूरगामी परिणाम होंगे। क्या स्त्री और पुरुष केवल उच्च शिक्षा प्राप्त कर, सामाजिक वर्जनाओं को अस्वीकार करते हुए अच्छी कमाई करते हुए मशीन की तरह जिएँ। क्या मनुष्य जीवन का ध्येय इतना सा ही है? फिर तो मनुष्य और रोबोट में अन्तर ही क्या रह जाएगा। आय-व्यय, सुख-दुःख, हारी-बीमारी, यश-अपयश, मित्रता-शत्रुता सबको साझा करना ही दाम्पत्य जीवन का उत्कर्ष माना जाता है। स्त्री-पुरुष के बीच उचित बंधन समाप्त हो जाएँगे तो शायद हम पुनः आदिम युग में पहुँच जाएँगे जहाँ न वस्त्रों की आवश्यकता होगी, न आभूषणों की। उस समय स्त्री-पुरुष के मध्य रिश्तों की प्रगाढ़ता और

पवित्रता समाप्त हो जाएगी।

क्या हम ऐसा चाहेंगे? यदि नहीं तो एक सीमा के पश्चात् हमें ऐसे फैशनेबल विमर्शों की उपयोगिता एवं आवश्यकता के बारे में गंभीरता से सोचना पड़ेगा। स्त्री-पुरुष के बीच, हम बंधनहीनता अपनाकर ईश्वर की बनाई इस सृष्टि के सौन्दर्य को ही नकार देंगे। बंधन कोई दासता नहीं, दो व्यक्तियों के बीच जुड़ाव का एक मधुर एहसास है जो हमें पुलकित भी करता है, सतर्क भी करता है और मनुष्य भी बनाए रखता है। अन्यथा तो स्त्री और पुरुष कब स्त्री रोबोट और पुरुष रोबोट के रूप में तब्दील हो जाएँगे, पता ही नहीं चलेगा।

जीवन की पाठशाला

पिता हजारों करोड़ के मालिक, बेटे ने की दिहाड़ी मजदूरी

द्रव्य एक महीने के संघर्ष के बाद मंगलवार को वापस अपने घर लौटे हैं...

सावजी ढोलकिया सूरत में हीरों का कारोबार करते हैं। उनकी कंपनी हरे कृष्णा डायमंड एक्सपोर्ट्स 6,000 करोड़ की कंपनी है और 71 देशों में फैली हुई है। सावजी चाहते तो अपने बेटे को दुनिया के सभी एशो-आराम यूँ ही मुहैया करा सकते थे, लेकिन वह अलग हैं।

सावजी ने अपने 21 साल के बेटे द्रव्य ढोलकिया को एक महीने तक साधारण जिंदगी जीने और साधारण सी नौकरी करने को कहा। द्रव्य अमेरिका से मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रहे हैं। फिलहाल वह अपनी छुट्टियों में भारत आए हुए हैं। 21 जून को वह 3 जोड़ी कपड़ों और कुल 7,000 रुपयों के साथ कोच्चि शहर आए। पिता का निर्देश था कि उनके पास जो 7,000 रुपये हैं, उन्हें भी वह बेहद आपातकालीन स्थिति में ही इस्तेमाल करें।

सावजी बताते हैं, 'मैंने अपने बेटे से कहा कि उसे अपने लिए पैसे कमाने को काम करना होगा। उसे किसी एक जगह पर एक हफ्ते से ज्यादा नौकरी नहीं करनी होगी। वह ना तो अपने पिता की पहचान

किसी को बता सकता है और ना ही मोबाइल का इस्तेमाल कर सकता है। यहाँ तक कि घर से जो 7,000 रुपये उसे मिले हैं, वह भी उसे इस्तेमाल नहीं करना है।' अपने बेटे के सामने ये शर्तें रखने की अपनी मंशा के बारे में बताते हुए सावजी कहते हैं, 'मैं चाहता था कि वह जिंदगी को समझे और देखे कि गरीब लोग किस तरह नौकरी और पैसा कमाने के लिए संघर्ष करते हैं। कोई भी यूनिवर्सिटी आपको जिंदगी की ये बातें नहीं सिखा सकता। ये बस जिंदगी के अनुभवों से ही सीखी जा सकती हैं।'

सावजी का नाम इससे पहले तब चर्चा में आया था जब उन्होंने अपनी कंपनी के कर्मचारियों को बोनस के तौर पर कार और प्लैट्स तोहफे में दिया था। द्रव्य ने पिता की दी हुई चुनौती को स्वीकार कर लिया है। वह ऐसी जगह जाना चाहते थे जहाँ की स्थितियाँ उनके लिए नई हों और यहाँ तक कि वहाँ की भाषा भी अलग हो। सावजी बताते हैं, 'उसने कोच्चि आने का फैसला किया। उसे मलयालम नहीं आती है और यहाँ हिंदी आमतौर पर नहीं बोली जाती है।'

अपने अनुभवों के बारे में बताते हुए द्रव्य ने कहा, 'शुरू के 5 दिन मेरे पास ना तो नौकरी थी और ना ही रहने की कोई जगह। मैं 60 जगहों पर नौकरी माँगने गया और लोगों ने इनकार कर दिया। मुझे पता चला कि लोगों के लिए नौकरी की क्या अहमियत होती है।' द्रव्य जहाँ भी नौकरी माँगने गए, उन्होंने झूठी कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि वे गुजरात के एक गरीब परिवार में पैदा हुए हैं और केवल 12वीं तक की पढ़ाई कर सके हैं। द्रव्य को पहली नौकरी एक बेकरी में मिली। फिर उन्होंने एक कॉल सेंटर, जूते की दुकान और मैकडॉनल्ड्स में काम किया। पूरे महीने अलग-अलग जगहों पर काम करने के बाद द्रव्य ने 4,000 रुपये कमाए।

द्रव्य कहते हैं, 'पहले कभी मैंने पैसे की चिंता नहीं की थी और वहाँ मैं दिन में 40 रुपये के खाने के लिए संघर्ष कर रहा था। मुझे लॉज में रहने के लिए रोजाना के 250 रुपये भी चाहिए होते थे।' द्रव्य मंगलवार को एक महीने बाद वापस अपने घर लौटे हैं।





उमेश चतुर्वेदी
(वरिष्ठ पत्रकार)

हिंदी के इस्तेमाल के पीछे का सच

अमेरिका में रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रपति उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप को लगने लगा है कि उन्हें दुनिया की सर्वोच्च ताकत दिलाने में हिंदी भी भूमिका निभा सकती है। अगर ऐसा न होता, तो 25 अक्टूबर को जारी अपने वीडियो संदेश में ट्रंप यह कहते हुए नजर नहीं आते। अबकी बार ट्रंप की सरकार...। भारत में चाहे इस तथ्य को कितना भी झुठला लिया जाए, भारतीय सीमा के बाहर उसकी छवि हिंदी और हिंदुओं के चलते ही है। ट्रंप को यह लगता है कि हिंदी और हिंदू शब्दों का भावुक इस्तेमाल उन्हें भारतीय मतदाताओं का वोट दिला सकता है।

ट्रंप की इस अपील ने एक बार फिर हिंदी को लेकर एक और उलटबांसी की तरफ ध्यान दिलाया है। देश की सीमा से बाहर वह हिन्दुस्तानी शख्स भी अपनी पहचान की कलगी में हिंदी को शान से जोड़ लेता है, जिसे हिन्दुस्तानी सीमाओं में वह भारी मन से ही स्वीकार कर पाता है। यह पहला मौका नहीं है, जब दुनिया की सबसे ताकतवर हस्ती बनने की दौड़ में शामिल शख्स हिंदी का यूँ इस्तेमाल कर रहा है। बराक ओबामा हिंदी का इस्तेमाल करके भारतीय लोगों का दिल पहले ही जीत चुके हैं। आठ नवंबर, 2010 को संसद को संबोधित करते हुए उन्होंने 'जय हिंद' कहा था। तब शायद ही कोई

सांसद होगा, जो दुनिया की सबसे ताकतवर हस्ती से अपनी भाषा के इन दो शब्दों को सुनकर अभिभूत न हुआ हो। ओबामा ने अपनी अगली भारत यात्रा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ दिल्ली के हैदराबाद हाउस में आयोजित संयुक्त संवाददाता सम्मेलन की शुरुआत नमस्ते से की थी।

25 जनवरी, 2015 को ओबामा ने अपने संबोधन की शुरुआत में जब यह कहा कि नमस्ते... मेरा प्यार भरा नमस्कार, तब कुछ रिपोर्टर भी ताली बजाने से खुद को रोक नहीं पाए थे। उसी प्रेस कांफ्रेंस में उन्होंने 'चाय पे चर्चा' शब्द का इस्तेमाल किया था। इसके दो दिन बाद ओबामा जब दिल्ली के सीरीफोर्ट सभागार में बोल रहे थे, तब उन्होंने दिल वाले दुल्हनिया ले जाएँगे फिल्म के मशहूर डायलॉग को दोहराया था— बड़े-बड़े देशों में...।

दुनिया के सबसे ताकतवर व्यक्ति व उसकी कतार में खड़े दूसरे शख्स के मुँह से उस हिंदी के शब्द सुनना दरअसल हिंदी की बढ़ती राजनीतिक व आर्थिक ताकत का इजहार है, जिसे अंग्रेजों ने वर्नाक्युलर यानी गुलामों की भाषा का दर्जा दिया था। संसद के 1965 के संकल्प के मुताबिक, भले ही हिंदी देश की राष्ट्रभाषा हो, लेकिन हकीकत यही है कि वह अब तक अंग्रेजी के बरक्स वर्नाक्युलर श्रेणी में ही है।

अमेरिकी चुनाव में हिंदी के इस्तेमाल से साबित होता है कि भाषाएँ जब तक राजनीति का हथियार नहीं बनतीं, तब तक उनकी सुध लेने को कोई आगे नहीं आता। राजशाही के दौर में भाषाओं व साहित्य के विकास में बेशक राज्याश्रय ने बड़ी भूमिका निभाई, पर लोकशाही में उन्हीं भाषाओं को सम्मान या ताकत हासिल होती है, जिन्हें बोलने वालों की आर्थिक व राजनीतिक ताकत बढ़ती है।

(सौजन्य : दैनिक हिंदुस्तान)

एक लगन का नाम है राम लिंगम सरमा

80 वर्ष की उम्र में एक दिन अमरीका के टेक्सास प्रान्त के क्रिस्को कस्बे में अपने बेटे-पोते-पोतियों के साथ रह रहे राम लिंगम सरमा को याद आता है कि उनकी माँ और दादा उन्हें बचपन में मधुर स्वर में सुन्दरकाण्ड सुनाया करते थे। और यह भी याद आया कि उन्होंने सुन्दर कांड को संस्कृत में पढ़ने की भी ठानी थी।

उन्हें संस्कृत तो आती ही नहीं थी। और टेक्सास में संस्कृत सिखाये भी कौन? मगर उत्साह की नदी हर चट्टान को काटती हुई अपना मार्ग बना लेती है। आठ वर्ष के निरंतर कठिन स्वाध्याय के बाद आखिर राम लिंगम संस्कृत सीख कर ही माने। लेकिन टाइप कैसे करें तो 88 वर्ष की उम्र में टाइप सीखने के लिए किसी कोचिंग सेंटर में गए और शुरू हो गया सुन्दर कांड का अंग्रेजी में अन्वय और अनुवाद। आखिरकार 12 वर्ष तपस्या के बाद 650-650 पृष्ठ के दो खण्डों में वाल्मीकि के



सुन्दरकाण्ड का एक परिपूर्ण अनुवाद तैयार हो ही गया। जिसका लोकार्पण उनके 100 वें जन्म दिन पर क्रिस्को कस्बे में किया गया। क्या शानदार उदाहरण है—जीवेम शरदः शतं का।

आपने इस ग्रन्थ को बेचने की बजाय अमरीका में जिज्ञासु अध्येताओं को यह ग्रन्थ निःशुल्क उपलब्ध करवाने का निश्चय किया है।

श्री सरमा ने हिंदुस्तान एयरोनोटिक्स, बंगलुरु में अपना कैरियर शुरू किया था और सेवानिवृत्ति के बाद आवश्यक प्रोजेक्ट पूरे करके के बाद अपने पुत्र के पास अमरीका चले आए।

इस लगन और जिजीविषा को सलाम करते हुए उनके दीर्घ और सार्थक जीवन की शुभकामनाएँ।

—सं.



**अनिल प्रकाश
जोशी :**
पर्यावरणविद

दिवाली जैसे त्योहार के स्वरूप को बदलने की जरूरत है

दिवाली के बाद राजधानी दिल्ली और अन्य छोटे-मोटे शहरों की बिगड़ती हवा बहुत कुछ सोचने के लिए मजबूर करती है। इस बार दिवाली के दूसरे ही दिन दिल्ली की गहरी धुंध में आर-पार दिखाई देना मुश्किल था। वायु में विषाक्तता का स्तर जिस हद तक पार हुआ, वह एक गंभीर विषय है। वायु प्रदूषण बोर्ड की रपट के अनुसार पीएम (पार्टिकुलेट मैटर) 2.5 व पीएम 10 का आँकड़ा कई इलाकों में 2000 के ऊपर पहुँच गया, जो किसी भी हालत में 150 से ऊपर नहीं जाना चाहिए क्योंकि इंसानी स्वास्थ्य के लिए यही इसकी अधिकतम सीमा है। इसका कई गुना बढ़ जाना खतरे की घंटी है। यह घातक वायु प्रदूषण दिवाली के पटाखों की ही देन है। अरबों रुपयों के ये पटाखे रुपयों को तो राख बनाते ही हैं, प्राणवायु को भी संकट में डाल देते हैं। पटाखों में इस्तेमाल होने वाला बारूद मात्र वायु में कार्बन सांद्रता ही नहीं बढ़ाता बल्कि अन्य जहरीली गैसों भी उत्सर्जित करता है। वैसे भी विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की हालिया रपट बताती है कि दुनिया में 90 प्रतिशत से ज्यादा लोग वायु प्रदूषण की चपेट में हैं।



दिवाली के अगले दिन सुबह-सुबह का नजारा

जागरूकता की कमी

भारत में तो लगभग सभी छोटे-बड़े शहर पहले से ही प्रदूषित हैं। ऐसे में दिवाली या इससे मिलते-जुलते मानवजनित अनावश्यक प्रदूषण के बारे में नए सिरे से सोचना होगा। कहा जा रहा है कि इस दिवाली पर कम पटाखे जले, पर जितने जले उतने ही ने ऐसी आफत मचा दी। वैसे भी पटाखों की फैक्ट्रियाँ विवादों में रही हैं। बाल मजदूरी जैसे मुद्दे इससे जुड़े रहे हैं। फिर ये हेल्थ के लिए कई तरह

की समस्याएँ पैदा करती हैं। इनमें लोग जान को दाँव पर लगाकर काम करते हैं। अक्सर इनमें दुर्घटनाएँ होती हैं। इस बार भी पुरानी दिल्ली में पटाखों से एक विस्फोट हुआ, जिसमें एक इंसान की जान गई।



जाहिर है, दिवाली जैसे त्योहार के स्वरूप पर फिर से सोचना चाहिए। यह भला कैसा त्योहार है, जो मानव जीवन के सामने कई तरह के संकट पैदा कर देता है। इसे दीये और रोशनी तक ही सीमित करने की कोशिश करनी होगी। पिछले कुछ दशकों तक दिवाली का पटाखा फिर भी बर्दाश्त किया जा सकता था, पर शायद अब हम प्रदूषण का जोखिम नहीं उठा सकते। एक बहस इस रूप में चलाई जानी चाहिए कि पटाखे दिवाली का अभिन्न हिस्सा नहीं हैं। यह काम सरकार कर सकती है, पर इसमें सफलता तभी मिलेगी जब सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन सक्रिय हों। स्कूलों में धीरे-धीरे पटाखों के खिलाफ आन्दोलन जोर पकड़ रहा है। इसमें और तेजी लाई जानी चाहिए।

फिर अभी तक सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण फैलाने वाले ऑटोमोबाइल उद्योग पर कोई भी नियंत्रण नहीं लगाया गया है। सच्चाई यह है कि यह अनियंत्रित ढंग से बढ़ता गया है। इस पर अंकुश की कोई नीति बनानी होगी। इस मामले में दूसरे देश जागरूक हो चुके हैं। यूरोप के कई देशों में तो लोगों ने रोजमर्रा के काम के लिए पूरी तरह साइकल को अपना लिया है। वहाँ साइकल रखना फैशन बन गया है। पर भारत में तो रोज नई-नई गाड़ियाँ आ रही हैं। उनमें ऐसी तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है जो प्रदूषण बढ़ाती है। पर हमारे यहाँ इन सबको लेकर कोई चेतना नहीं दिखाई देती।

असल में आमजन तक हम यह जानकारी ले जाने में पूरी तरह असफल रहे हैं कि बढ़ता वायु प्रदूषण किस हद तक नुकसान



कुछ नहीं तो इनकी फिक की जाए

पहुँचा सकता है। लगातार बढ़ता वायु प्रदूषण बहुत सी घातक बीमारियों को जन्म दे सकता है। हृदय के बढ़ते रोगों के पीछे वायु प्रदूषण एक बड़ा कारण बन रहा है। अस्थमा, त्वचा कैंसर व मानसिक रोग भी इससे पैदा होते हैं। आँखों में धुँएँ व धुँध को तत्काल ही महसूस किया जा सकता है। अन्य कई लाइलाज रोग भी वायु प्रदूषण से होते हैं।

डब्ल्यूएचओ की रपट के अनुसार अकेले भारत में लगभग डेढ़ लाख बच्चे इस प्रदूषण का शिकार बनते हैं। चिकनगुनिया, बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू या फिर डेंगू जैसी मच्छर जनित बीमारियों से उतने लोग हताहत नहीं होते, जितने बढ़ते वायु प्रदूषण से। पर उपरोक्त बीमारियों की चर्चा सुर्खियों में रहती हैं और इसका असर भी दिखाई देता है। मास्क की बढ़ती खरीदारी वायु प्रदूषण की चेतावनियों की वजह से ही है। इसको हम बड़ी बहस और सुर्खियों का हिस्सा नहीं बना पाए हैं, जिसकी आज बड़ी आवश्यकता है। अब अगर यह भी मान लिया जाए कि अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखने को लेकर लोगों की भागीदारी सुनिश्चित नहीं की जा सकती तो नए कानून और नियम लाने होंगे, ताकि जीवन की सुरक्षा की गारंटी मिले।

कानून का रास्ता

अभी जब हर अप्रिय घटना को रोकने के लिए कानून बन रहे हैं तो फिर वायु प्रदूषण को रोकने के लिए भी कानूनी पहल तुरंत ही शुरू होनी चाहिए। लोग कहते हैं कि कानून कोई मानता ही नहीं। लेकिन अगर हम पहले ही ऐसा सोच लेंगे तो कुछ नहीं हो पाएगा। आखिर देश में नियम-कानूनों का एक हद तक पालन होता ही है। चाहे मेट्रो ट्रेन में गंदगी फैलाने पर प्रतिबंध हो या फिर पब्लिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध, लोगों ने आखिरकार माना ही। वक्त आ गया है कि हम वायु प्रदूषण पर भी बड़े और कड़े निर्णय लें। ऐसी किसी भी पहल के लिए सभी राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों को विश्वास में लेना चाहिए। उनकी आलोचनाओं को सुनें जरूर, पर व्यापक हित में सामूहिक निर्णय लेना चाहिए। क्योंकि स्वस्थ सांस आज हर मनुष्य की जरूरत है। यह हम सबके जीवन का सवाल है, मनुष्यता की रक्षा का सवाल है। इस पर अब और देर ठीक नहीं।

स्वयं शिक्षण

पराए देश-परिवेश में अपनी भाषा

मातृभाषा का अर्थ है वह भाषा जो बच्चे को अपनी माँ से मिलती है। उसके पयोधरों से झरते अमृततुल्य दूध, लोरी की मधुर रसधार और साभिनय कहानियों की रोचक दुनिया के माध्यम से। सीखने-सिखाने का इससे सुखद तरीका और क्या हो सकता है। इस तरीके को भूलकर हम बहुत से अप्राकृतिक तरीकों से ज्ञान, विज्ञान और यहाँ तक कि भाषा भी सिखाना चाहते हैं। तभी तो शिक्षा से आनंद का तत्त्व गायब होता जा रहा है।

ब्रिटेन में अपने दो बच्चों के साथ रह रही नाइजीरिया मूल की जेमिसोला इसिमी अपनी मातृभाषा योरूबा के अतिरिक्त कुछ नहीं जानती। वे अपने बच्चों को भी यह भाषा सिखाना चाहती थीं लेकिन इसके लिए उसे न तो वहाँ कोई अध्यापक उपलब्ध था और न ही यूट्यूब पर ऑनलाइन कोई काम की सामग्री मिली। इसके बाद उसने 'कल्चर ट्री' चैनल अपनाया। इसमें उसके बच्चों को मजा आने लगा और वे सरलता से अपनी माँ की भाषा जानने समझने लगे।

इससे इसिमी को एक और अतिरिक्त लाभ यह हुआ कि पहले उसके जो बच्चे विभिन्न गैजेटों से चिपके रहते थे उसमें भी कमी आई। उसका अनुभव है कि कहानी और संगीत के द्वारा बच्चे किसी भी भाषा की मूल शब्दावली और सही उच्चारण जल्दी सीखते हैं। इसके लिए उन्होंने बच्चों की नर्सरी कहानियों का अपनी भाषा में अनुवाद किया और किसी अच्छे एनीमेटर से 15 वीडियो भी तैयार करवाए।

हम भी भारत से बाहर के देशों में जहाँ हिंदी या किसी भारतीय भाषा के शिक्षण और बोलने-सुनने का परिवेश नहीं है, इस प्रकार के प्रयोग कर सकते हैं। अपने नजदीक के लोगों को इस परियोजना में शामिल किया जा सकता है। इससे कार्यक्रमों में विविधता तो होगी ही साथ ही समाज (कम्यूनिटी) में भी निकटता आएगी।

यदि आप कोई इस प्रकार का प्रयोग करते हैं तो हमें अवश्य सूचित करें जिससे अन्य पाठक भी प्रेरित और लाभान्वित हो सकें।

—सं.

बधाई

भारतीय मूल की कहकशाँ को बाल शांति पुरस्कार

2 दिसंबर 2016 को भारतीय मूल की 16 वर्षीय स्कूली छात्रा कहकशाँ बसु को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित मोहम्मद यूनुस ने हेग में शुक्रवार को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया। कहकशाँ ने 8 वर्ष की उम्र में दुबई स्थित अपने पड़ोस में कचरे की रीसाइक्लिंग के लिए जागरूकता अभियान चलाया। वह मेजर ग्रुप फॉर चिल्ड्रेन एंड यूथ ऑफ द यूएन इन्वाइरनमेंटल प्रोग्राम की अब तक की सबसे कम उम्र की वैश्विक समन्वयक बनने जा रही हैं। इतनी कम उम्र की शिखिसयत की यह महान उपलब्धि है।





विश्व साहित्य में दूसरी परंपरा को स्वीकृति

इस बार का नोबल साहित्य पुरस्कार कई दृष्टियों से चर्चा में है। यह चर्चा में है कि पुरस्कार देने वाली स्वीडिश एकेडमी ने 115 वर्षों में पहली बार साहित्य की बनी-बनाई परिपाटी तोड़ी है। इसलिए भी चर्चा में है कि यह पुरस्कार 57 साल पहले म्यूजिक से करियर शुरू करने वाले गीतकार बॉब डिलन को मिला है। —नागेन्द्र : प्रसिद्ध साहित्य टिप्पणीकार

जब लंदन में वर्ष 2016 के लिए साहित्य का नोबल पुरस्कार देने की घोषणा हुई तो न सिर्फ घोषणा का गवाह बन रहा मीडिया, बल्कि विश्व की साहित्यिक बिरादरी ने भी इसे खासे कौतुक से देखा। कारण कि इस बार स्वीडिश अकादमी ने पुरस्कार की घोषणा में न सिर्फ बने बनाए ढर्रे को तोड़ा, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति को साहित्य का नोबल देने की घोषणा की, जिसे साहित्य की मान्य परम्पराओं में 'साहित्यिक' नहीं माना जाता। एकेडमी ने सबको चौंकाते हुए अमेरिका के दिग्गज गीतकार-गायक और वैश्विक परिदृश्य पर सबसे प्रभावशाली माने जाने वाले रॉक म्यूजिशियन बॉब डिलन को यह सम्मान दिए जाने की घोषणा की। 75 वर्षीय बॉब डिलन अंग्रेजी की 'वाचिक परम्परा' के पहले गीतकार हैं, जिन्हें इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से नावाजा जा रहा है। माना जाता है कि डिलन ने अमेरिकी गीत परम्परा में काव्यात्मकता के नए आयाम गढ़े।

डिलन चर्चित उपन्यासकार टोनी मॉरिशन (1993) के बाद पहले ऐसे अमेरिकी हैं, जिन्हें साहित्य का नोबल मिला है। डिलन के नाम की घोषणा इसलिए भी चौंकाने वाली थी कि उनका रचनाकर्म 'नोबल साहित्य' ही नहीं, वैश्विक साहित्य के पारम्परिक पैमाने पर भी उपन्यास, कविता, कहानी या लघु कहानी की श्रेणी में नहीं आता। अमेरिकी पत्रकार बिल वाइमन की नजर में डिलन का काम साहित्य की मान्य परम्पराओं से अलग भले ही हो, लेकिन उनके गीतों की अद्भुत लयात्मकता, उनकी चिंताएं, उनके विषय अपने समय और समाज से बहुत आगे की बात अत्यंत प्रभावी ढंग से करते हैं। वाइमन ने यह टिप्पणी करते हुए 2013 में ही डिलन के लिए नोबल की अपेक्षा की थी। 1941 में मिनोसेटा के डलथ में जन्मे और हिबिंग में जवान हुए बॉब डिलन (मूल नाम राबर्ट एलन जिमरमन) यहूदी परिवार में जन्मे लेकिन पत्नी से संबंध विच्छेद के बाद उन्होंने ईसाईयत को अपना लिया।

यह अनायास नहीं था कि 18 सदस्यीय स्वीडिश एकेडमी की स्थायी सचिव सारा डेनियस ने पुरस्कार की घोषणा से पहले डिलन को न सिर्फ 'अंग्रेजी की वाचिक परम्परा का महान कवि बताया' बल्कि उन्हें होमर और सफ़ो की परम्परा (वाचिक कविता) को

आगे ले जाने वाला कहा। विश्व साहित्य के कर्ता-धर्ताओं से उनका सवाल था कि 'स्वीडिश एकेडमी' की इस पहल को साहित्य की मान्य और प्रचलित परिभाषाओं को नए आयाम देने की शुरुआत क्यों नहीं माना जाना चाहिए।' सारा स्वयं भी अमेरिकी साहित्य और सौंदर्य शास्त्र की अध्येता हैं। डिलन के काम को बहुत करीब से आंकने वाले ग्रेल मार्क्स के अनुसार डिलन हैरी स्मिथ की 'एंथालॉजी ऑफ अमेरिकन फॉक म्यूजिक' से बहुत ज्यादा प्रभावित हैं। 1952 में प्रकाशित इस पुस्तक को अमेरिकी लोक परम्परा का आधार बिन्दु माना जाता है। माना जाता है कि डिलन 1959 में पहली बार इस संकलन से रूबरू हुए और इसी के बाद यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा की पढ़ाई छोड़कर बाहर आ गए। 1961 में न्यूयॉर्क गए और वहां ग्रीनविच विलेज के क्लबों और कैफे में गाने लगे और 1962 में पहला अलबम 'बॉब डिलन' नाम से आया।

डिलन सिर्फ 22 साल के थे जब उन्हें एक सार्वजनिक समारोह में गाने का अवसर मिला, जो बाद में ऐतिहासिक बन गया। यह अवसर था 'मार्च ऑन वाशिंगटन फॉर जॉब्स एंड फ्रीडम' जिसे ग्रेट मार्च ऑन वाशिंगटन भी कहा गया। यह वही प्रतिरोध मार्च था, जिसे अमेरिका के इतिहास में मानवाधिकारों की लड़ाई के लिए सबसे बड़ी राजनीतिक रैली कहा गया। 28 अगस्त को हुई इस रैली में ही लिंकन मेमोरियल के सामने खड़े होकर मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने नस्लभेद का खात्मा करने का आह्वान करता अपना ऐतिहासिक भाषण 'आई हैव अ ड्रीम' दिया था। यह अवसर भी डिलन के जीवन का टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ। दरअसल साठ का यह दशक अगर पूरी दुनिया के लिए उथल-पुथल का दौर था तो बॉब डिलन के लिए यह नई शोहरत का वक्त था। यही वह गायक था, जिसने उस दौर के युवा असंतोष को आवाज दी थी। उनका अलबम 'ब्लोइंग विद द विंड' प्रतिरोध के स्वर का वाहक बन चुका था। यह बॉब डिलन की शोहरत के चरमोत्कर्ष का दौर था।

अब जबकि डिलन को साहित्य का नोबल देने की घोषणा हो चुकी है विश्व साहित्य के परिदृश्य पर एक बड़ी बहस छिड़ गयी है। यह बहस साहित्य की मुख्य धारा बनाम लोकप्रिय धारा की है। यहां याद आ रही है भोजपुरी माटी के अपने लोकप्रिय कवि भिखारी ठाकुर की, जिनका लिखा नहीं, गाया ही उनका साहित्य है। यह अलग बात है कि बाद में उसे लिखने और संजोने की अच्छी जद्दोजहद हुई, जो अब भी जारी है। संदर्भवश याद आ रहे हैं आंध्र प्रदेश के लोकप्रिय क्रांतिकारी कवि गदर और उत्तराखण्ड के जनमानस में चर्चित गिरीश चन्द्र तिवारी 'गिर्दा' भी। तो क्या माना जाए कि बॉब डिलन को मिला साहित्य का यह नोबल पुरस्कार साहित्य की प्रचलित परिपाटी उसके प्रचलित संस्कार और उसकी प्रचलित परिभाषा को बदलेगा। वैश्विक स्तर पर भी। भारतीय परिदृश्य में भी। क्योंकि यह मानने में गुरेज नहीं कि साहित्य संसार के अपने कथित श्रेष्ठता बोध ने साहित्य के दायरे को किंचित सीमित किया और अनजाने में ही सही व्यापक संदर्भों में देखा जाए तो साहित्य का नुकसान किया। भारत पर यह कुछ ज्यादा ही लागू होता है शायद।



प्रतिभा खंडेलवाल

भाषा बहता नीर

प्रतिभा जी अध्ययन में गहन रुचि रखने वाली संवेदनशील रचनाकार हैं। विविध विधाओं में लेखन। उनकी संस्मरणात्मक आत्मकथा 'सोई देहली, सोई आँगना' अत्यंत चर्चित हुई जो तत्कालीन बिहार, केरल और राजस्थान की संस्कृतियों के अनछुए पक्षों का दर्शन कराती है।

इसके अतिरिक्त आलोचना की दो अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित। सम्प्रति एक बाल-कविता संकलन और एकांकी संग्रह पर काम करने में व्यस्त हैं। फोन 732-927-0886 email prtba@yahoo.com पता— Crown Pointe Drive, Medina-44256, OH, USA.

हिन्दी भारत के लगभग सभी प्रदेशों में बोली जाती है। किन्तु हर प्रदेश में इसका लहजा बदल जाता है और कुछ शब्दों के उच्चारण बदल जाते हैं। प्रायः उस प्रदेश में बोली जानेवाली भाषा के कुछ शब्द भी हिन्दी में घुल-मिल जाने के कारण अक्सर गलतफहमी भी हो जाती है। इसीको आधार बनाकर प्रस्तुत है एक मनोरंजक एकांकी 'भाषा बहता नीर'। यह एकांकी 16 अक्टूबर को हिन्दी दिवस के अवसर पर अभिनीत हुआ तथा इसे दर्शकों की पर्याप्त सराहना मिली। एकांकी में भाग लेनेवाले कलाकारों के नाम इस प्रकार हैं—

श्रीमानजी — डॉ. आनंद खंडेलवाल

श्रीमतीजी — डॉ. श्रीमती शोभा खंडेलवाल

मेहमान 1 (बंगाली) — श्री सुमित सेनगुप्ता

मेहमान 2 (दक्षिण भारतीय) — श्री बिमन घोष

पड़ोसन— श्रीमती सोना खंडेलवाल

पात्र परिचय

श्रीमानजी, श्रीमतीजी, मेहमान 1 (बंगाली), मेहमान 2 (दक्षिण भारतीय), पड़ोसन

(दृश्य 1, समय — प्रातःकाल)

(श्रीमानजी तथा श्रीमतीजी एक साथ बैठकर चाय पी रहे हैं।)

श्रीमानजी — (सुड़क कर चाय पीते हुए) आहाहा! ठंड के मौसम में धूप में बैठकर चाय पीने की आनंद ही कुछ और है।

श्रीमतीजी — रहने दो। इतने वर्ष हो गए अमेरिका आये। पर सुड़क कर चाय पीने की ये तुम्हारी गँवारू आदत नहीं छूटी।

श्रीमानजी — मेरी तो हर बात तुमको गँवारू लगती है। खुद तो जैसे नफासत की पुतली हो।

श्रीमतीजी — तुमसे तो ज़्यादा हूँ। तुम्हारा तो मुँह खुला नहीं कि एक दो गँवारू बात ज़रूर बाहर आयेगी।

श्रीमानजी — अब ये क्या बात हुई! तुम तो जब देखो तब, बिना बात के पीछे पड़ जाती हो।

श्रीमतीजी — बिना बात के नहीं। अभी कल ही शर्माजी के सामने

नहीं कह रहे थे, 'असल में इंडिया से प्यार किसको है! सब आदमी अपने-अपने मतलब से इंडिया जाता है।'

श्रीमानजी — हाँ तो इसमें गलत क्या है?

श्रीमतीजी — तुम्हें सिंपल ग्रामर तो आता नहीं है। 'सब आदमी' 'जाते हैं' या 'जाता है', एकवचन या बहुवचन? 'सब आदमी' सिंगुलर है या प्लूरल?

श्रीमानजी — अब तुम बाल की खाल निकाल रही हो। बोलचाल की भाषा कहीं व्याकरण के आधार पर बोली जाती है?

श्रीमतीजी — हाँ, बोली जाती है। पर किसी को आता हो तब न। तुम बिहारवाले... अब मेरा मुँह मत खुलवाओ।

श्रीमानजी — अब फिर तुमने बिहार और उत्तर प्रदेश की बहस शुरू की। अरे भई, भारत में सभी प्रदेशवाले हिन्दी बोलते हैं और उनकी भाषा में उनकी अपनी भाषा की कुछ मिलावट हो हीजाती है। ये तो स्वाभाविक है।

श्रीमतीजी — तो इसी तर्क पर तुम गलत-सलत हिन्दी बोलते रहो और मैं भरतनाट्यम की डांसर की तरह सर हिलाती रहूँ! (गर्दन मटकती है) ऐसे, क्यों?

श्रीमानजी — नहीं, सर मत हिलाती रहो। बात-बात पर मुझे टोकती रहो। जरा भारत की सैर पर निकलो तब पता चले कि कितनी तरह से हिन्दी बोली जाती है। पता नहीं, तुम्हें यह घमंड क्यों है कि केवल तुम्हें ही हिन्दी आती है।

(मेहमान 1 का प्रवेश)

मेहमान 1 — आहा, धन्य है! आप पति-पत्नी एक साथ धूप में बैठकर चाय खाता है? ऐसा नसीब हमको किधर?

श्रीमतीजी — चाय खाते नहीं, पीते हैं। आप भी चाय पीजिये। (चाय देती है)

मेहमान 1 — हाँ-हाँ, वोही-वोही। मेरा वाइफ तो सुबह काम पर जाता है तो शाम को आता है। हम उसके वास्ते खाना बनाकर रखता है। ओ दीदी! हम बोलता था कि आप दोनों को आज शाम को छः बजे हमारे घर पर आना है। उधर भोजन रक्खा है।

श्रीमतीजी — अच्छा, किस खुशी में?

मेहमान 1 — खुशी क्या! इतना दिन से आपके पड़ोस में रहता है तो सोचा, एक दिन सबके साथ मिलकर भोजन करना। भूलना नहीं, आप दोनों ज़रूर से आना।

श्रीमानजी — हाँ-हाँ ज़रूर आयेगे। भला आप बुलाएँ और हम न आएँ! और उधर रवीन्द्र संगीत भी रखा है क्या?

मेहमान 1 — नहीं, इस बार रवीन्द्रसंगीत नहीं रखा है। क्या है कि रवीन्द्रसंगीत में बहुत हाई क्लास फिलोसफी है। वो सबको समझ में नहीं आता। हम तो आजकल शायरी पढ़ता है। वो उर्दू का पोयट्री होता है नए उसको शायरी बोलता है।

श्रीमतीजी — हाँ-हाँ वो तो हमें मालूम है। लेकिन आप और शायरी?

मेहमान 1 — हाँ-हाँ। अरे, आपको भी इंटरेस्ट है क्या?

श्रीमानजी — मुझे तो ज्यादा जानाकारी नहीं लेकिन मेरी पत्नी को बहुत शौक है। इस देश में कौन शायरी समझता है?

मेहमान 1 — इधर भी लोग शायरी जानता है। हमने अभी-अभी शायरी सीखा है। शेर समझते हैं न, यह वो जंगलवाला शेर नहीं, शायरी वाला शेर।

श्रीमानजी — हाँ-हाँ, समझते हैं।

मेहमान 1 — तो एक शेर सुनिये —

न मैं गीला करूँगा, न मैं सूखा करूँगा

तुम शाला मत रहो हमेशा, मैं यही दूआ करूँगा

श्रीमतीजी — क्या... ?

मेहमान 1 — ओ, हमको मालूम था। पोयट्री सबको समझ में नहीं आता है। वो पोयट बोलता है कि हमको तुमसे कोई शिकायत नहीं है। तुम हमेशा ठीक रहो, बस हम यही चाहता है।

श्रीमानजी — अच्छा-अच्छा, अब समझ में आया। थैंक्यू।

मेहमान 1 — ठीक है तो हम जाता है। आपका चाय बहुत अच्छा था दीदी। धन्यवाद! भूलना नहीं। आज शाम को छः बजे, उधर भोजन में बहुत आनंद आयेगा।

श्रीमानजी — जरूर।

(प्रस्थान)

श्रीमानजी — (हँसते हुए) शेर की कैसी दुर्गत की है इसने! क्या शेर था?

श्रीमतीजी — न मैं गिला करूँगा, न मैं शिकवा करूँगा

तुम सलामत रहो हमेशा, मैं यही दुआ करूँगा

श्रीमानजी — अब देखो, तुम मुझको ही बोलती रहती हो। इसकी भाषा सुनी ?

श्रीमतीजी — तुम्हें तो अपना दोष दूसरों के ऊपर डालने की आदत-सी पड़ गयी है। कोई गलत बोलता है इसका मतलब यह नहीं कि तुम्हें भी गलत बोलने की आजादी है।

श्रीमानजी — अच्छा बाबा, ठीक है। देखो, नारायणस्वामी इधर ही आ रहे हैं।

(दूसरे मेहमान का प्रवेश)

मेहमान 2 — नमस्कारम्!

श्रीमानजी — नमस्कार! नमस्कार!

मेहमान 2 — कैसा है? ओए मारिणिना टी चलता है!

श्रीमतीजी — अच्छे हैं नारायणस्वामी? आप चाय लेंगे?

मेहमान 2 — ओए नहीं-नहीं अभी कॉफी पीकर आया है। आपको इन्वार्ड करने को आया है।

श्रीमतीजी — किस चीज के लिए इन्वार्ड?

मेहमान 2 — अमारा शादी बनाकर दस साल हुआ। उसका वास्ते अमाराघर में एक बड़ा पूजा रक्खा है। आपको आज शाम को उधर आकर गाना गाना है।

श्रीमानजी — क्या? गाना! हम लोग आयेंगे लेकिन गाना नहीं गा सकते।

मेहमान 2 — ऐसा कुछ चलने का नहीं है। आपको तो गाना गाना ही पड़ेगा।

श्रीमतीजी — सुनिये भाई, हमें गाना नहीं आता।

मेहमान 2 — क्या बहनजी, आप भी मजाक करता है? गाना नहीं आता! ठीक है, आप चाय पीओ। अभी अम बहुत जल्दी में है। सभी जगह बोलने का है। फिर बात करेगा। भूलना नहीं आज शाम को...

(प्रस्थान)

श्रीमानजी — ओह! आज शाम को दो जगह जाना पड़ेगा। ठीक है, मैं नहाने के लिए जाता हूँ। (प्रस्थान)

श्रीमतीजी — (टेढ़ी नजरों से देखते हुए) हाँ-हाँ जाओ। अभी से नहाना शुरू करोगे तो कहीं शाम तक तैयार हो पाओगे। (श्रीमतीजी काभी प्रस्थान)

(दृश्य दूसरा)

(समय — दूसरा दिन, प्रातःकाल)

(श्रीमान, श्रीमती तथा पड़ोसन बैठे बात कर रहे हैं।)

श्रीमानजी — कल तो हमारे साथ ऐसी बीती कि क्या बताएँ!

पड़ोसन — क्या हुआ?

श्रीमानजी — अरे पहले तो एक बंगाली पड़ोसी ईसिस्ट करके बुला गया था। भोजन पर आना, भोजन पर आना।

श्रीमतीजी — असल में उसने हमें भजन पर बुलाया था। उसके उच्चारण से हम समझे कि वह भोजन के लिए बुला रहा है। वहाँ गए तो 'हरे राम हरे कृष्ण' का भजन हो रहा था। हमने सोचा कि कुछ पूजा वगैरह है, उसके बाद भोजन मिलेगा पर इसके कहीं आसार नजर नहीं आये।

श्रीमानजी — आखिर में हमने बेशरम बनकर उससे पूछ ही लिया कि भई! तुमने हमें भोजन पर बुलाया था सो उसका क्या हुआ।

पड़ोसन — फिर क्या हुआ?

श्रीमतीजी — पता है, क्या जवाब मिला? उसने तो भोलेपन से कह दिया कि भोजन ही तो हो रहा है। देखो कितना आनंद आ रहा है!

श्रीमानजी — अरे तुम भूल गयी, उसने सुबह उस शेर का कैसा गीला और सूखा कर दिया था!

श्रीमतीजी — (हँसते हुए) ठीक बात है। हमें तो उसी समय समझ जाना था। भूल हो गयी।

पड़ोसन — 'शेर का गीला और सूखा' मतलब?

श्रीमानजी — छोड़िये। वो एक लंबा किस्सा है। हाँ तो, भूख से हमारा पेट कुलबुला रहा था। जैसे-तैसे उससे विदा लेकर घर वापस आये और फ्रीज में से उलटा-पुलटा कुछ निकाल कर खाकर पेट भरा।

श्रीमतीजी — उसके बाद हमें नारायणस्वामी के यहाँ जाना था। हमने सोचा कि पता नहीं वहाँ कितनी देर लगे। गाने के बीच में से उठना भी तो मुश्किल होता है।

श्रीमानजी — उसके भी घर पर कुछ पूजा वगैरह थी और उसने हमें गाने पर बुलाया था। वहाँ पहुँचकर तो और भी दिल जलानेवाली घटना घटी।

पड़ोसन – (हँसते हुए) क्या हुआ? उसने आपको तमिल में गाने को कहा क्या?

श्रीमानजी – अरे नहीं। उसके उच्चारण से हमने समझा था कि वह गाने के लिए इंसिस्ट कर रहा था। लेकिन असल में तो उसने पूरी दावत का इंतजाम कर रखा था और हमसे खाना खाने की मनुहार कर रहा था।

श्रीमतीजी – उसने खाना परोसा और बार-बार बोल रहा था, गाना गाओ, गाना गाओ। अब हम घर से खाना खाकर गए थे सो वहाँ कुछ खा भी नहीं सके और यह भी खयाल आ रहा था कि उसे बुरा लग रहा होगा कि इतनी मनुहार के बाद भी हम कुछ नहीं खा रहे थे।

श्रीमानजी – हमें अगर पता होता कि वह 'खाना खाओ' को 'गाना गाओ' बोल रहा है तो तो ऐसा मौका हम कभी नहीं छोड़ते किन्तु क्या करें, सब गड़बड़ हो गया।

श्रीमतीजी – किसी दक्षिण भारतीय के यहाँ स्वादिष्ट खाना खाने के लिए बुलाया जाय और बिना खाए वापस आना पड़े तो यह कितना बड़ा अभिशाप है! है न।

पड़ोसन – (हँसते हुए) सही बात है। लेकिन तुम बहुत लुच्ची हो।

श्रीमतीजी – क्या!

पड़ोसन – ठीक है, अब मैं चलती हूँ। निक्कू के डैडी भी जिम से आ गए होंगे।

(प्रस्थान)

श्रीमतीजी – सुना तुमने, इसने मुझको गाली दी।

श्रीमानजी – कब गाली दी?

श्रीमतीजी – इसने मुझको लुच्ची कहा।

श्रीमानजी – ओह, कोई बात नहीं। ऐसे ही झटके में बोल गयी होगी।

श्रीमतीजी – ऐसे ही झटके में कोई किसी को गाली नहीं देता।

श्रीमानजी – हो सकता है, उसकी भाषा में इस शब्द का मतलब

गाली देना नहीं होगा।

श्रीमतीजी – तुम्हें तो बस सभी सही दिखाई देते हैं। दोष तो केवल मुझमें है।

श्रीमानजी – मैंने कब कहा कि तुममें दोष है। बस तुम केवल भाषा के पीछे भागती हो। मैंने पहले भी कहा है कि भारत में जिस भी प्रदेश में हिन्दी बोली जाती है, वह वहाँ का कुछ रंग अपने में लेकर बोली जाती है। इसलिए तुम्हें केवल अर्थ पर ध्यान देना है, भाव पर ध्यान देना है, भाषा या उच्चारण पर नहीं।

श्रीमतीजी – इस तरह तो सभी हिन्दी की टाँग तोड़ने में लगे रहेंगे और मैं चुपचाप देखती रहूँगी। ऐसा नहीं हो सकता।

श्रीमानजी – इसे हिन्दी की टाँग तोड़ना कहना ठीक नहीं।

श्रीमतीजी – तुम कुछ भी कहो, मैं तो शुद्ध हिन्दी का ही पक्ष लूँगी।

श्रीमानजी – मैं भी शुद्ध हिन्दी का विरोधी नहीं हूँ। किन्तु विभिन्न प्रदेशों के निवासी कष्टपूर्वक जो हिन्दी बोलते हैं, हमें उनका भी सम्मान करना चाहिए। और फिर भाषा तो बहते पानी की तरह होती है। कबीरदासजी ने भी कहा है, 'भाषा बहता नीर...'

श्रीमतीजी – (तैश के साथ) मुझे कुछ नहीं सुनना। आपकी पत्नी को कोई लुच्ची बोल जाए और आप आराम से बैठकर सुनते रहिये। मैं ऐसा नहीं सुन सकती। (प्रस्थान)

श्रीमानजी – (स्वगत) लुच्ची शब्द सुनकर खराब तो मुझे भी लगा था किन्तु इसका उसकी भाषा में क्या अर्थ होता है, मुझे भी पता नहीं। (सर खुजला कर) समझ में नहीं आता कि किस शब्दकोष से मुझे अपना उत्तर मिल सकेगा! (दर्शकों की ओर मुखातिब होकर) अगर आपको पता हो तो जरा मुझे बताइयेगा न। (नेपथ्य की ओर झाँककर) अन्दर जाकर देखता हूँ कि श्रीमतीजी का मिजाज़ अब भी गरम चल रहा है या कुछ ठंडा हुआ।

(दर्शकों की ओर हाथ हिलाते हुए प्रस्थान)

आपने लिखा है

1

विश्वा का अक्टूबर 2016 अंक मिला। तुली हुई दुधारी की तरह लपलपाता संपादकीय पढ़ा, बधाई।

चेतना में धार कायम रहे।

पर धार में भी प्यार कायम रहे।

तलातल सनातन मानवी संयम रहे।

नन्द किशोर तिवारी

पूर्व संपादक (राजस्थान पत्रिका)

बंगलुरु

2

विश्वा का ताजा अंक मिला। धन्यवाद! अंक विविधतापूर्ण है। महाश्वेता देवी और रज़ा साहब को याद किया। रज़ा साहब का चित्र मोहक है। नागर जी पर आलेख अच्छा है। उन्हें याद किया जाना चाहिए। मैं समझता हूँ प्रवासी भारतीयों के लिए गाँधी जी के प्रिय भजन और उसके लेखक नरसी मेहता का प्रकाशन ज्ञानवर्द्धक रहेगा। वर्तमान काल में इस भजन की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक है। मैं इस समय कनाडा के एडमॉन्टन नगर में छोटी बेटी के साथ हूँ।

डॉ. रामशरण जोशी

(कनाडा)

गीतों का गज़रा : तुम्हारी अर्चना

मदनलाल शर्मा

लेखक- अर्चना पांडा, बोधि प्रकाशन, जयपुर, मूल्य : 495 रु.
अर्चना पांडा के नवीनतम संकलन 'तुम्हारी अर्चना' में 36 गीत, 13 गजलें, 26 मुक्तक और 19 कविताएँ सँजोए गए हैं। हम यहाँ केवल गीतों पर चर्चा कर रहे हैं क्योंकि यही इस संकलन का मूल स्वर भी है।

सभी गीतों में प्रेम का स्वर ही मुखर हुआ है। कहते भी हैं प्रेम मनुष्य का आदिम और शाश्वत राग है। प्रेम अथाह और असीम होता है। इसका कोई ओर-छोर नहीं होता। प्रेम ईश्वर से भी किया जा सकता है, मनुष्य, प्रकृति पशु-पक्षियों एवं जीव-जन्तुओं से भी। अर्चना ने मनुष्य को केंद्र में रखकर इन प्रेम गीतों की रचना की है।

प्रेम के चार सोपान माने जाते हैं- आकर्षण अर्थात् चाहत, उन्माद, विश्वास एवं समर्पण। अर्चना ने अपने गीतों में जिस प्रेमी की कल्पना की है वह सात्त्विक प्रवृत्ति का शाकाहारी प्रेमी है जो मिलने पर जीवन में अनेक रंग भर देता है। भला ऐसे प्रेमी की किसे चाहत नहीं होगी। प्रेम में गिले-शिकवे भी साथ-साथ चलते हैं। समकालीन कविता में प्रेम के विशुद्ध रंग के चित्रों को उकेरना काफी जोखिम भरा काम है। प्रेम के ऐसे इन्द्रधनुषी चित्र वही बना सकता है जिसने प्रेमी को भरपूर प्रेम किया हो और बदले में भरपूर प्रेम पाया भी हो। प्रेम गीतों में कहीं राधा के प्रेम की तो कहीं मीरा की भक्ति की ध्वनि गूँजती है।

युग-सन्दर्भ में प्रेम का स्वरूप भी बदलता है जा रहा है। इस आपाधापी के समय में आज न तो किसी के पास प्रेम करने का समय है और ना ही धैर्य। आज के प्रेमी-प्रेमिका एक दूजे से कम तथा प्रेम के माध्यमों से ज्यादा प्रेम करने लगे हैं। वैज्ञानिक संसाधनों एवं उपलब्ध उपकरणों ने प्रेम को दैहिक एवं आध्यात्मिक के स्थान पर भौतिक स्वरूप प्रदान कर दिया है। आज प्रेम दिल एवं मन के माध्यमों से नहीं बल्कि मोबाइल एवं कम्प्यूटर के बटनों के माध्यम से होने लगा है। गोपियाँ उद्धव से कहती हैं- ऊधो, मन नहीं दस-बीस। आज की प्रेमिका के सामने तो दस-बीस क्या अनगिनत मन और दिल एक बटन के क्लिक पर उपस्थित होने को बेताब रहते हैं। ऐसे माहौल में समकालीन कविता के मानकों से हटकर प्रेम-गीतों की रचना एक जोखिम भरा काम हो सकता है। अर्चना ने यह जोखिम उठाया है क्योंकि वह इसकी आदी है। इस बात का ठोस प्रमाण संग्रह में संकलित दहेज 1 से दहेज 5 तक की कविताएँ हैं।

वरिष्ठ गीतकार नीरज ने इन कविताओं पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सही कहा है- अर्चना की कविता विद्रोह की आवाज है। विद्रोह किसी व्यक्ति या व्यवस्था से ही नहीं बल्कि विधा से भी किया जा सकता है। इस समय पूरे देश में कुछ ज्वलंत समस्याओं पर देश

के राजनेताओं एवं बुद्धिजीवियों द्वारा छाती पीटा विलाप किया जा रहा है जिसकी अनुगूँज विभिन्न विमर्शों के नाम से साहित्य में भी सुनाई दे रही है। जो कवि या लेखक इन विमर्शों के साथ नहीं खड़ा है उसे एक प्रकार से साहित्य में जाति बहिष्कृत मान लिया जाता है। मैं यह नहीं कहता कि अर्चना विमर्शों के साथ नहीं खड़ी है। वह अवश्य खड़ी है लेकिन अपने बलबूते पर। अर्चना के अन्दर का साहित्यकार समन्वय और सामंजस्य के धरातल पर खड़ा होकर इन विमर्शों को प्रेम के माध्यम से ललकार रहा है। यही इन गीतों की अनुगूँज है। यही माधुर्य भी है और अध्यात्म भी।

हिंदी कविता में गीत विधा ने एक लम्बे समय तक एकछत्र राज किया है। उस समय के गीतकारों के नाम गिनाएँ तो सूची बहुत लम्बी हो जाएगी। गीत विधा मंच के नजदीक रही है। इस कारण आम आदमी को कविता से जोड़ने का काम गीत विधा ने अत्यंत सफलतापूर्वक किया है। उस समय देश के कोने-कोने में कवि सम्मेलन हुआ करते थे जिनके

काव्य पाठ की अनुगूँज लम्बे समय तक वातावरण में रहा करती थी। लेकिन जब से कवि सम्मेलनों में फूहड़ता एवं अश्लीलता छाने लगी तो गीत विधा को बड़ा झटका लगा। गीतों की बजाय कविसम्मेलन चुटकलों पर आश्रित हो गए। ऐसे माहौल में अर्चना ने विशुद्ध गीतों की रचना की ओर अग्रसर होकर एक अनुकरणीय कदम उठाया है जो स्वागत योग्य है।

इस संकलन के अधिकांश गीत प्रेम-गीत हैं। गीतों की भावभूमि अत्यंत कोमल है। प्रेम में मोलभाव नहीं होता। मोलभाव करने का काम बाजार का है। प्रेम की नींव परस्पर विश्वास के आधार पर टिकी हुई है जहाँ भेदभाव की गुंजाइश कम होती है। अधिकांश गीतों में प्रेम से प्रेरणा प्राप्त करने का आस्वाद है। यही इन गीतों की मौलिकता है। सच्चा प्रेम जीवन में आह्लाद ही नहीं भरता, प्रेरणा भी देता है। कुछ बानगी देखिए-

तुझे देखकर मेरे चेहरे पर मुस्कानें खिल जाती हैं
मेरी कलम मचलने लगती फिर रचनाएँ मिल जाती हैं

तेरी नज़रों के जादू ने किया इस तरह मुझ पर टोना
कल तक लोहा थी लेकिन अब चमक रही हूँ बन कर सोना

तेरा ही अहसास वजह है बस मेरे मुस्काने की
तेरी चाहत खास वजह है गीत गज़ल लिख जाने की

इश्क में तेरे नशे के चूर होती जा रही हूँ
मैं तुम्हें लिखते हुए मशहूर होती जा रही हूँ

अर्चना के गीत समन्वय और सामंजस्य में विश्वास जगाते हैं। इकतरफा प्रेम सफल नहीं होता। ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती। इसी भावभूमि पर लिखे गए गीतों की कुछ बानगी निम्न प्रकार है-

मैं तुमको गढ़ना सीखूँ तुम मुझको गढ़ना सीखो
मैं तुमसे जुड़ना सीखूँ तुम मुझसे जुड़ना सीखो

खास बात हम दोनों में पर कुछ कहीं अधूरा
इकटूजे के पूरक बनाकर उसे करें हम पूरा

इकटूजे को प्यार करें हम किसको ज्यादा प्यार बताओ
कहो इश्क के थर्मामीटर किसको अधिक बुखार बताओ

रह ना पाते इकटूजे बिन जाने कैसी ये मजबूरी
चाहे हो पल भर का मिलना लेकिन मिलना बहुत ज़रूरी

कभी इश्क के हिस्से में क्या आता है इतवार बताओ।

प्यार में उन्माद का पनपना प्यार की पराकाष्ठा माना जाता है।
देखिए—

खिलखिलाती मुस्कराती छेड़ती हर तार है
ये हवा पागल हुई है या तुम्हारा प्यार है

गीतों में विद्रोह भी है—

क्यों बैठी हो एक परिधि में तोड़ क्यों नहीं देती हो
मन के भाव कलम से सीधे जोड़ क्यों नहीं देती हो
खुद को मत सीमा में बाँधो जो होता अहसास लिखो
गीतों में हर ख्वाहिश गाओ तुम गज़लों में प्यास लिखो।

समर्पण अर्चना के गीतों का स्थायी भाव है—

प्रेम प्यार की समझ नहीं है पूर्ण समर्पण हूँ मैं
तू जो चाहे वही दिखाऊँ ऐसा दर्पण हूँ मैं
क्या पता कैसे कहाँ कब खो गई मैं
क्या कहूँ कैसे तुम्हारी हो गई मैं

समर्पण एवं अध्यात्म का अनूठा प्रयोग इस गीत में हुआ है—

सीता हूँ मैं राम तुम्ही हो मीरा मैं घनश्याम तुम्ही हो
कोई पूछे यही कहूँगी मेरे चारों धाम तुम्ही हो

कुल मिलाकर इन गीतों में राधा के निश्छल प्रेम एवं मीरा की
एकनिष्ठ भक्ति की झलक है। भाषा सरल एवं सुलझी हुई है, छपाई तथा
गीतों के भावों को अभिव्यक्त करते रंगीन चित्र पुस्तक का अतिरिक्त
आकर्षण हैं। शीर्षक भी गीतों के भावों को अभिव्यक्त करता है।

लेखकी

लेखक : अशोक सेकसरिया

वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर

देश की राजनीति में पिछले दो दशकों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए
हैं। वैसे ही इस अवधि में कथा साहित्य की राजनीति में भी अनेक
उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। दो दशक पूर्व की कहानी प्रेम-प्रसंग,
मानवीय रिश्तों, मजदूरों के संघर्ष एवं सामाजिक बदलाव के धरातल
पर खड़ी थी तो 2017 की कहानी बाजारवाद, वैश्वीकरण,
भूमंडलीकरण एवं विभिन्न प्रकार के विमर्शों के भवन में प्रवेश कर
चुकी है। उपभोक्तावादी संस्कृति मनुष्य को वस्तु में तब्दील करने पर
तुली है। आज की कहानी व्यक्ति को केंद्र में नहीं रखती अपितु समस्या

उसके केंद्र में है। प्रेम की परिभाषा बदल रही है। व्यक्ति अपनी जड़ों
से कटता जा रहा है। ऐसे समय में अशोक सेकसरिया का कथा संग्रह
'लेखकी' हमें कहीं न कहीं आश्वस्त करता है कि जड़ों से जुड़े रहने
में ही जीवन की सार्थकता है।

अशोक जी के जीवन का अधिकांश भाग महानगरों में बीता है
किन्तु वे अपनी जड़ों को नहीं भूले हैं। जड़ की तरफ लौटना अपनी
पहचान को प्रामाणिक बनाना है। संग्रह की आधी से अधिक कहानियाँ
राजस्थान एवं बंगाल की पृष्ठभूमि से जुड़ी हैं। यहाँ इन दोनों संस्कृतियों
(राजस्थानी एवं बंगाली) में किसी प्रकार का टकराव नजर नहीं आता
अपितु दोनों का साझा रूप एक नई संस्कृति को जन्म देता है। जो
आवश्यक भी है और प्रशंसनीय भी। संग्रह की प्रथम कहानी 'देस-
विदेस' का कथाकार कलकत्ता महानगर के पार्क स्ट्रीट एवं देश क
राजधानी दिल्ली से जब राजस्थान के कस्बेनुमा शहर में आता तो उसे
बार-बार बाजरे की रोटी याद आती है। 'बाजरे की रोटी खाए हुए उसे
युग बीत गया था। माँ महीने दो महीने में बाजरे की रोटी और राबड़ी
बनाती थी। जिस दिन बाजरे की रोटी बनती थी उस दिन उसमें उमंग
रहती थी।' दाल-भात और मछली का झोल बंगाली संस्कृति की
पहचान है तो बाजरे की रोटी एवं राबड़ी राजस्थानी संस्कृति की पहचान
है।

अशोक जी की कहानियों का परिवेश व्यापक है एवं कथानक में
विविधता है। 'दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी' खेल जगत की कहानी
है जिसका परिवेश कलकत्ता महानगर है। 'रंदवू' कहानी में मुम्बई के
टिफिन बॉक्स का अच्छा खासा चित्रण है। 'मोटर पाटर्स का एजेंट'
में आकर कथाकार कलिम्पोंग पहुँच जाता है तो 'लेखकी' में पाठक
को नैनीताल की सैर कराता है। 'लेखकी' में लेखक की पीड़ा उजागर
होती है। लिखना कोई हँसी-खेल नहीं है बल्कि अत्यन्त श्रमसाध्य कार्य
है जो बहुत कुछ लेखक के मूड पर निर्भर करता है। लिखने के लिए
पहाड़ पर जाना ही पर्याप्त नहीं है लिखने की मनःस्थिति होना जरूरी
है। 'दीक्षा', 'बुद्धू' एवं 'गरीबी' कहानियाँ पुनः हमें कलकत्ता के पार्क
स्ट्रीट एवं कॉलेज स्ट्रीट की सैर करा देती हैं। तो 'विकल्प' हुगली के
डायमंड हार्बर की।

अशोक की कहानियों में कहीं अनावश्यक छटपटाहट अथवा
बेचैनी नहीं है। जीवन अपनी गति से चलता रहता है। व्यक्ति का दिशा
निर्धारण कई कारकों पर निर्भर करता है। वे कारक ही समस्या को बनाते
हैं और सुलझाते भी हैं। कारकों पर किसी का वश नहीं चलता। अशोक
जी की कहानियाँ स्थितिप्रज्ञता की अवस्था में पहुँच कर लिखी गई
कहानियाँ हैं। वे जो घटित हुआ जो हो रहा है और जो होने जा रहा है
उस पर वे निरपेक्ष भाव साधे हुए हैं।

कहानियों में कहीं दुहराव नहीं है और न ही भाषा में क्लिष्टता और
बोज़िलता। प्रत्येक कहानी का कथानक सौ प्रतिशत विशुद्ध और
हालमार्क जैसा प्रामाणिक लगता है। साथ ही यह संग्रह श्री इन वन का
आभास देता है जिसमें आत्मकथा, संस्मरण और कहानी की पावन
त्रिवेणी है।

हमारे गौरव : वर्ष 2016

डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी को गत 14 सितम्बर 2016 को उत्तर प्रदेश सरकार के हिंदी संस्थान की ओर से 'साहित्य भूषण सम्मान' से विभूषित किया गया। डॉ. चतुर्वेदी ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृति में स्नातकोत्तर उपाधि, कानून, चिकित्सा, संगीत आदि में सक्रिय रही हैं। शताधिक सम्मानों से अलंकृत, उक्त तीनों भाषाओं में अनेक पुस्तकों की रचनाकार के रूप में आप एक स्थापित लेखिका हैं। शोध निर्देशिका के रूप में भी अनेक विद्यार्थियों ने आपके मार्गदर्शन में शोधकार्य किए हैं। आप द्वारा विभिन्न विधाओं में लिखित अनेक पुस्तकों का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है। कई देशों की साहित्यिक यात्राएँ कर चुकी डॉ. चतुर्वेदी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति की आजीवन सदस्य हैं।



संभवतः विश्वा के आगामी अंकों में पाठकों को आपके साहित्य की बानगी पढ़ने को मिले।

आलोक मिश्र

- ❖ बहुमुखी प्रतिभा से युक्त एक सरल-सहज व्यक्तित्व
- ❖ हिन्दी के माध्यम से भारतीय संस्कृति के विदेशों में संरक्षण हेतु उत्तरीअमेरिका की प्रतिनिधि संस्था 'अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति' से विगत तीन दशकों से सक्रिय जुड़ाव के साथ कार्यरत
- ❖ हिन्दी के उन्नयन एवं प्रचार-प्रसार हेतु अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति में विगत तीन दशकों से निरंतर संलग्न। समिति के बोर्ड के चेयरमैन (2016-17), अध्यक्ष (2006-07), उपाध्यक्ष (2004-05), और कोषाध्यक्ष (2001-03) पद पर महत्वपूर्ण कार्य किया
- ❖ विगत 16 वर्षों से अमेरिका तथा कनाडा के दर्जनों शहरों में भारत से आमंत्रित शीर्ष कवियों के वार्षिक कवि सम्मेलनों का सफल आयोजन एवं पूर्ण प्रबंधन, जो कि आम हिन्दी भाषी को हिन्दी से जोड़ने और हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में बेहद सहायक सिद्ध हुए हैं। यह काम अभी भी जारी है और दिनानुदिन लोकप्रिय होता जा रहा है।
- ❖ अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति के पिछले पाँच अधिवेशनों के सफल संयोजन व सहप्रबंधन में सहभागिता
- ❖ 8वें विश्व हिन्दी सम्मेलन सन् 2007 न्यूयॉर्क में सक्रिय सहभागिता
- ❖ प्रवासी भारतीयों में भारतीय जीवन-मूल्यों तथा भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु एक इलेक्ट्रॉनिक साहित्यिक वैचारिकी त्रैमासिक पत्रिका 'ई-विश्वा' की 2007 में शुरुआत की, जिसका प्रकाशन एवं प्रबंधन 2011 तक किया और 52 देशों में वितरण।
- ❖ प्रेस और टीवी पर साहित्यिक विषयों पर समय समय पर साक्षात्कार व लेखन



- ❖ वेब-साइट तथा फेसबुक पर 'नमस्ते हिन्दी' पृष्ठ का सम्पादन
- ❖ नई पीढ़ी में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा अमेरिका के हिन्दी बहुल क्षेत्रों के स्कूलों में हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में स्थापित करने में प्रयत्नशील
- ❖ इंटरनेट पर गैर-हिन्दीभाषी व्यक्तियों को निःशुल्क स्तरीय हिन्दी पाठ उपलब्ध कराने हेतु एक अत्याधुनिक ऑनलाइन प्रणाली विकसित करने की योजना में कार्यरत, जोकि विश्व में कहीं से किसी के लिए भी सुलभ होगी।

मेजर शेर बहादुर सिंह अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति के प्रारम्भिक सदस्यों में से एक हैं जो आज 85 वर्ष की उम्र में भी अपनी ऊर्जा, हिंदी प्रेम, सहयोग और जिंदादिली से समिति और समाज के सभी सदस्यों को अपनी उपस्थिति से अवगत कराते रहते हैं।



1978 में 23 वर्षों के सफल अध्यापन के बाद 46 वर्ष की आयु में अपने बड़े भाई प्रवासी अमरीकी श्री राम आदरे सिंह के आग्रह पर अमरीका आए। यहाँ नौकरी की, व्यवसाय किया, स्वयं व्यवस्थित हुए और बच्चों परिवार को व्यवस्थित किया लेकिन इन सब कार्यों के बीच अपनी सामाजिक सक्रियता भी बनाए रहे।

तीन दशकों से भी अधिक समय से अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति के साथ अपने जुड़ाव के दौरान कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे और उत्साहपूर्वक हिंदी और हिंदी सेवियों की सेवा में योगदान देते रहे। इस समय आप सन 2018-2019 के लिए समिति के निर्वाचित अध्यक्ष हैं। आपके कार्यकाल में समिति को नई ऊँचाइयाँ छूने का विश्वास है।

सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि आपको 14 सितम्बर 2016 को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से 'प्रवासी हिंदी भूषण' सम्मान प्रदान किया गया।

चिंताजनक : अस्तित्व खोती भाषाएँ

'राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा में नहीं, बल्कि किसी अन्य भाषा में शिक्षा पाते हैं, वे आत्महत्या करते हैं। इससे उनका जन्मसिद्ध अधिकार छिन जाता है।' यह बात राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कही थी। लेकिन उनके आदर्शों पर हम कितना आगे बढ़े, यह इस तथ्य से समझा जा सकता है कि बीते 30-40 वर्षों में एक बड़ी आबादी की मातृभाषा गुम हो चुकी है। इस दौरान देश की 500 भाषा/बोलियों में से लगभग 300 पूरी तरह से खत्म हो चुकी हैं और 190 से ज्यादा अपनी आखिरी साँसें ले रही हैं।

जिस भाषा में यह लोक-संसार रचा-बसा है, वही भाषा/बोली अब खत्म होने जा रही है। उसके साथ ही शायद सब कुछ खत्म हो जाएगा। वर्ष 2010 में आई यूनेस्को की 'इंटरैक्टिव एटलस' की रिपोर्ट बताती है कि अपनी भाषाओं को भूलने में भारत अक्वल नंबर पर है, दूसरे नंबर पर अमेरिका और तीसरे पर इंडोनेशिया है।

प्रतिभा खंडेलवाल की दो कविताएँ

मोर और कबूतर

देख मोर के ठाठ कबूतर मन में हुआ उदास
मैं ही एक अभागा, तिल भर रूप न जिसके पास
कहा मोर से, 'सर से पर तक सजे हुए तुम भाई
और यहाँ देखो मेरे सर कैसी विपदा आयी!
'जाना है बरात में, पर क्या पहनूँ, समझ न आये
कुछ भी अच्छा मिले कहीं से काम ज़रा चल जाए
'पैर तुम्हारे दो उधार, मैं शादी में पहनूँगा
मत करना इनकार बंधु! आते ही लौटा दूँगा'
देख कबूतर की मजबूरी दया मोर को आयी
पैर बदल आपस में बोला, 'चिंता मत कर भाई!'
बीत गये कितने ही दिन पर लौटा नहीं कबूतर
मोर देखता राह थका, फिर गया कबूतर के घर
आँखें झपक कबूतर तमका, 'कैसे, किसके पैर?
तुम जैसे हैं कितने ऐरे, गैरे, नत्थू, खैर!'
यों स्वभाव-वश मेघ देखकर मोर मगन हो उठता
बहुत नाचता, नजर पैर पर पड़े अगर, रो पड़ता

मगरमच्छ और बगुला

मगरमच्छ बोला बगुले से, 'दर्द दाँत में भाई!
लगता, कल दावत में मैंने मछली ज्यादा खाई'
'देखो तो, क्या फँसा हुआ है, यदि तुम करो सफाई
कुछ इनाम दूँगा,' बगुले को सुन आशा हो आयी
लेट गया मुँह खोल मगर, बगुला आगे बढ़ आया
झुक-झुक, अन्दर देख, चोंच से करने लगा सफाया
मछली के अवशेष दाँत से चुन-चुन कर खा डाले
फँसे हुए थे हड्डी के टुकड़े जो सभी निकाले
मगरमच्छ ने तब बगुले पर यह आरोप लगाया
'देखो, बिना इजाज़त तुमने मेरा खाना खाया
'मेरे मुँह में घुसकर भी, तुम जीवित बाहर आये
जीवन से बढ़कर इनाम क्या, कोई मुझे बताये!'
समझ न आया बगुले को वह क्या दे इसका उत्तर
लौट गया चुपचाप बिचारा अपना-सा मुँह लेकर

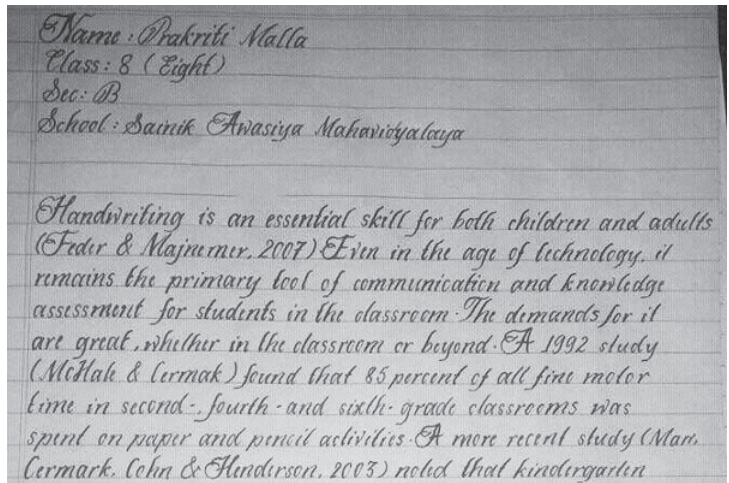
सबसे सुंदर लिखावट

पहली बार देखने पर ऐसा लगता है कि कंप्यूटर से प्रिंट आउट निकाला गया है, लेकिन ऐसा है नहीं।

नई दिल्ली। स्कूल के दिनों में लिखावट को सुधारने के लिए बच्चे कई प्रयास करते हैं। जहाँ कुछ स्कूलों में बच्चों को गर्मी की छुट्टियों में रोजाना लिखावट सुधारने के लिए गृहकार्य दिए जाते हैं, वहीं कुछ विद्यार्थी कर्सिव राइटिंग का अभ्यास तक करते हैं। हम आपको आज ऐसी लिखावट दिखाने जा रहे हैं जिसे देखकर आप यह मानने को ही तैयार नहीं होंगे कि इसे किसी आठवीं क्लास की बच्ची ने खुद अपने हाथों से लिखा है।



सैनिक आवासीय विद्यालय की आठवीं कक्षा की छात्रा प्रकृति माला की लिखावट देखकर आप कहेंगे कि इसे किसी ने अपने हाथ से नहीं लिखा बल्कि यह कंप्यूटर से प्रिंट किया गया है। हालांकि यह सच नहीं है, इस बच्ची की लिखावट कंप्यूटर फोन्ट से भी अच्छी है और पूरी दुनिया इस बात को मान रही है।



पहली बार देखने पर ऐसा लगता है कि कंप्यूटर से प्रिंट आउट निकाला गया है, क्योंकि प्रकृति शब्दों की बनावट इतने सलीके से करती है कि सारे शब्द एक जितने साइज के लगते हैं। उनकी लिखावट इस समय कई विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा बनी हुई है और विद्यार्थी अपनी लिखावट को सुधारने के प्रयास कर रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति यू.एस.ए. बिहार-झारखण्ड, भारत शाखा, पटना एवं बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, बेली रोड, पटना के संयुक्त तत्वावधान में 'बज्जिका शिवभक्ति लोकगीत' पुस्तक का लोकार्पण समारोह

दि. 08 नवम्बर, 2016 (मंगलवार) को 1:00 बजे अपराह्न में अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति यू.एस.ए. बिहार-झारखंड भारत शाखा, पटना एवं बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, बेली रोड, पटना के संयुक्त तत्वावधान में संभ्रात गृहिणी श्रीमती प्रभा कुमारी द्वारा संकलित 'बज्जिका शिवभक्ति लोकगीत' पुस्तक का लोकार्पण समारोह अभिलेख भवन, बेली रोड, पटना के सभागार में आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता बज्जिका एवं हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान, लेखक, कवि तथा लक्ष्मी नारायण कॉलेज, भगवानपुर, जिला-वैशाली के पूर्व प्राचार्य डॉ. हरेन्द्र सिंह 'विप्लव' ने की इस आयोजन के मुख्य अतिथि बज्जिका भाषा के स्तंभ पुरुष, हिन्दी के प्रकांड विद्वान, लेखक, समीक्षक तथा विश्वभारती, शांतिनिकेतन (प.बं.) के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. सियाराम तिवारी थे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में बज्जिकानुरागी, बज्जिकाभाषी डॉ. शैलेश्वर सती प्रसाद, पूर्व अंगरेजी विभागाध्यक्ष, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बज्जिका एवं हिन्दी भाषा के मूर्द्धन्य विद्वान डॉ. रामप्रवेश सिंह, पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, भीम राव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर की गरिमामयी उपस्थिति थी।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. सियाराम तिवारी एवं मंचासीन अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया तत्पश्चात अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति यू.एस.ए. बिहार-झारखंड भारत शाखा, पटना के संस्थापक अध्यक्ष, श्री वीरेन्द्र कुमार चौधरी एवं प्रगति कुणाल द्वारा पुष्प-गुच्छ एवं शॉल देकर आगत मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया गया डॉ. विद्या चौधरी, अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति यू.एस.ए. बिहार-झारखंड भारत शाखा की संयोजिका ने आगत अतिथियों का स्वागत सम्बोधन करते हुये 'बज्जिका शिवभक्ति लोकगीत' पुस्तक के संबंध में विषय प्रवेश कराया इन्होंने कहा कि लोकगीत में लोक-संस्कृति समाहित रहती है। समाज में प्रचलित लोकगीत अब विलुप्त होने के कगार पर हैं। श्रीमती प्रभा कुमारी जी ने बज्जिकांचल में विलुप्त होते शिवभक्ति परक लोकगीतों को संकलित कर 'बज्जिका शिवभक्ति लोकगीत' नामक पुस्तक का प्रकाशन कराया है। इससे शिव की भक्ति के बहाने लोक संस्कृति के संरक्षण को बल मिलेगा इसमें संकलित, संग्रहित लोकगीत समाज में प्रचलित रहेगे हिन्दी की भांति बज्जिका वैज्ञानिक भाषा है यह जैसे बोली जाती है, वैसे ही लिखी भी जाती है। इस पुस्तक से हिन्दी एवं बज्जिका भाषा के शोधार्थियों को काफी सहयोग मिलेगा।

शाखा समिति के उपाध्यक्ष श्री कैलाश चौधरी ने समिति का संक्षिप्त

परिचय देते हुए इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषायें भी हमारे यहाँ हैं उनमें से बज्जिका भी एक है यह बज्जी गणराज्य की भाषा है बज्जिकांचल क्षेत्र में बज्जिका लोकभाषा के रूप में प्रचलित है बज्जिकांचल की लोकभाषा एवं लोकसंस्कृति काफी समृद्ध है इस समृद्धि की झलक श्रीमती प्रभा कुमारी की पुस्तक 'बज्जिका शिवभक्ति लोकगीत' में है।

श्रीमती प्रभा कुमारी ने अपनी पुस्तक 'बज्जिका शिवभक्ति लोकगीत' के संकलन के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किये उन्होंने कहा कि लोकगीत समाज से विलुप्त हो रहे हैं, इसलिए उसके संरक्षण हेतु मैंने इसका संकलन एवं पुस्तक के रूप में प्रकाशन कराया है मैं चाहती हूँ कि यह जन-जन तक पहुँचे उन्होंने कहा कि लोकगीत संग्रहीत करने की प्रेरणा उन्हें माँ से मिली, संकलन को प्रकाशित कराने की प्रेरणा मामू (डॉ. विप्लव जी) से मिली उन्होंने कहा कि डॉ. विद्या चौधरी को पुत्रीवत मानती हूँ मैंने उनसे यह बात कही मैं नहीं सोच पाती थी कि प्रकाशन का काम हो पायेगा परन्तु विद्या जी ने मुझे लगातार प्रेरित, उत्साहित किया कि 'आप जुटाते जाइये', सब संयोजित हो जायेगा, समय पर निकल जायेगा इन्होंने बज्जिका में लोकगीत को पंक्तिबद्ध एवं छन्दबद्ध कर लिखना बताया, फिर लोकगीत के इस संग्रह ने पुस्तक का रूप लिया उन्होंने कहा कि डॉ. राम प्रवेश बाबू ने इस लोकगीत संग्रह को तराशा है इसके प्रकाशन का सम्पूर्ण दायित्व इन्होंने निभाया है डॉ. सियाराम तिवारी ने भी उत्साहवर्द्धन किया।

इस अवसर पर श्रीमती प्रभा कुमारी को बज्जिका लोकगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये अरुणादित्य ट्रस्ट तथा बज्जिका जन-जागरण मंच, मुजफ्फरपुर द्वारा वर्ष-2016 का 'महाकवि अवधेश्वर अरुण सम्मान' से सम्मानित किया गया यह सम्मान विशिष्ट अतिथि डॉ. रामप्रवेश सिंह, पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के कर-कमलों से प्रदान किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. सियाराम तिवारी ने बज्जिका भाषा में ही उद्घाटन भाषण दिया उन्होंने कहा कि 'बज्जिका अखनी न बोलब त कहिया बोलब' (बज्जिका भाषा अभी नहीं बोलेंगे तो कब बोलेंगे) इन्होंने अपने संबोधन में सर्वप्रथम ऐसे आयोजन के लिये आयोजकों की भरपूर सराहना की साथ ही श्रीमती प्रभा कुमारी के प्रयास एवं उनके द्वारा संकलित 'बज्जिका शिवभक्ति लोकगीत' पुस्तक की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्हें आगे भी लिखते रहने के लिये प्रेरित किया।

बज्जिका भाषा के प्रयोग के संबंध में उन्होंने कहा कि बज्जिका भाषी लोग अपने को अपनी भाषा में बोलने में हीनता का अनुभव करते

हैं, जबकि अन्य भाषा, जैसे— भोजपुरी, मगही, अंगिका, मैथिली भाषा के लोग अपनी-अपनी भाषा में वार्तालाप करते हैं उनके सम्बोधन से यह भी जानकारी मिली कि प्रकांड विद्वान, प्रख्यात लेखक एवं साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी जी बज्जिका में ही बोलते थे बेनीपुरी जी सार्वजनिक सभाओं में भी बज्जिका भाषा में ही भाषण देते थे इन्होंने अपना अनुभव बताया कि जब वे सराय उच्च विद्यालय में पढ़ाई कर रहे थे, तब सराय पेटिया (हाट) पर बेनीपुरी जी का सार्वजनिक भाषण बज्जिका में ही हुआ था इन्होंने अपने बारे में कहा कि बज्जिका भाषा में बोलने के लिए डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रेरित किया द्विवेदी जी ने इनसे कहा कि अपनी भाषा में बातचीत करने में कोई हीनता नहीं है उस समय डॉ. तिवारी जी लोक भाषा की एक प्रतियोगिता में सम्मिलित हुये थे, जिसमें बज्जिका भाषा में निबंध लिखा था इस कारण इन्हें सर्वाधिक सराहा गया और प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ इन्होंने संदेश दिया कि अभिभावकों को अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषा में ही बच्चों को बोलना एवं लिखना सिखाना चाहिये, ताकि वे बड़े होकर भी अपनी भाषा में बात करने में गर्व का अनुभव करें एवं संस्कृति को भूलें नहीं लोक साहित्य का बड़ा महत्व है यह व्यापक विषय है इसका गहराई से अध्ययन आवश्यक है लोक साहित्य में लोक कथा का भी बड़ा महत्व है इसका संकलन भी होना चाहिये इन्होंने श्रीमती प्रभा कुमारी जी को बज्जिका लोककथा संकलन के लिये प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि लोकगीत पर प्रभा कुमारी जी से पहले डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र ने काम किया है इनकी 'बज्जिका संस्कार गीत' नामक पुस्तक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना से प्रकाशित हुई है प्रभा कुमारी जी के प्रयास की जितनी सराहना की जाये, कम है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. शैलेश्वर सती प्रसाद ने भी बज्जिका भाषा में ही अपने विचार व्यक्त किये इन्होंने श्रीमती प्रभा कुमारी के संकलन कार्य की सराहना की।

विद्वान लेखिका डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र ने भी इस आयोजन एवं श्रीमती प्रभा कुमारी की पुस्तक की सराहना की इन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 'यह संकलित लोकगीत लोगों को ही समर्पित है'।

विशिष्ट अतिथि डॉ. राम प्रवेश सिंह ने भी इस आयोजन के लिये आयोजकों की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा उक्त पुस्तक को लोकोपयोगी बताया अन्य वक्ताओं, यथा— डॉ. राम विलास पासवान, निदेशक राजभाषा विभाग, बिहार, पटना, डॉ. ब्रह्मदेव प्रसाद कार्या, श्री रघुनाथ प्रसाद सिन्हा, डॉ. शाहिद ज़मील, राजभाषा पदाधिकारी (उर्दू), राजभाषा विभाग, बिहार, पटना इत्यादि ने भी बज्जिका के प्रति अपने-अपने विचार रखे एवं पुस्तक तथा ऐसे आयोजन के लिए आयोजकों की सराहना की इस अवसर पर सभा-भवन अनेक विशिष्ट-विद्वानों, हिन्दी एवं बज्जिका प्रेमियों से भरा हुआ था।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. हरेन्द्र सिंह 'विप्लव' ने बज्जिका भाषा में ही इस पुस्तक एवं प्रभा कुमारी जी के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किये तथा अध्यक्षीय भाषण दिया। अंत में डॉ. विजय कुमार, निदेशक, बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, पटना ने अपना विचार व्यक्त करते हुए

कहा कि बज्जिका भाषी होते हुए भी व्यावहारिक रूप में राज-काज की भाषा हिन्दी होने से अपनी मातृभाषा पिछड़ जाती है अतः अपने घर-परिवार में अपनी-अपनी भाषा का प्रयोग करें इन्होंने ने यह भी कहा कि अपनी भाषा को बोलने में हम सब को गर्व का अनुभव करना चाहिए तत्पश्चात इन्होंने आगत अतिथियों एवं मीडिया के लोगों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

बीच-बीच में वक्ताओं, सम्बोधनकर्ताओं के उद्बोधन से सभा-भवन तालियों की गड़गड़ाहट से गुँजता रहा।

मंच संचालन जाने-माने उद्घोषक डॉ. अशोक प्रियदर्शी ने किया कार्यक्रम के बीच में चाय, पानी वितरित किया गया अंत में सबों को अल्पाहार का पैकेट दिया गया अध्यक्ष की अनुमति से कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस आयोजन का समाचार हिन्दुस्तान, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, प्रभात खबर, आज एवं राष्ट्रीय सहारा इत्यादि दैनिक समाचार-पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित किये गये तथा दूरदर्शन के कुछ न्यूज़ चैनल, यथा— ई.टी.वी. बिहार, दर्श एवं कशिश पर समाचार प्रसारित किये गये।

डॉ. विद्या चौधरी
(संयोजिका)

भारत मूल के किशोर वैज्ञानिक

भारतीय मूल की जुड़वा बहनों और एक अन्य किशोर ने अपने मेडिकल प्रोजेक्ट के फलस्वरूप 'सीमेंस वार्षिक गणित और विज्ञान प्रतियोगिता' की 1 लाख डॉलर की छात्रवृत्ति जीती है।



अध्या और श्रिया बीसम को सिजोफ्रेनिया नाम की बीमारी के दिमाग के स्कैन और मनोरोग मूल्यांकन के जरिए जल्दी पता लगाने वाले मॉडल के लिए यह प्राइज दिया गया है। ये बहनें टेक्सास में रहती हैं और ग्यारहवीं क्लास की स्टूडेंट हैं।

वहीं एक अन्य भारतीय-अमेरिकी छात्र विनीत ने अकेले यह स्कॉलरशिप हासिल की है। विनीत को एक ऐसी बायोडिप्रेडेबल बैटरी तैयार करने के लिए यह पुरस्कार दिया गया है जिससे मेडिकल उपकरण चल सकते हैं। विनीत अमेरिका में ऑरिगन राज्य के पोर्टलैंड में रहते हैं और हाई स्कूल के छात्र हैं।

इनके अलावा भी तीन अन्य भारतीय मूल के छात्रों ने अलग श्रेणी में पुरस्कार जीता वहीं दो अन्य को टीम प्राइज मिला। सिमेन्स फाउंडेशन के सीईओ डेविड ने कहा कि बीसम बहनों और विनीत के मॉडल्स से दुनिया में लाखों लोगों के इलाज में मदद मिलेगी। इनके अलावा जिन छात्रों को पुरस्कार मिले हैं उनमें मनन शाह, प्रतीक कलाकुंतला, प्रणव शिवकुमार, निखिल चीरला और अनिका चीरला शामिल हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति की उत्तरपूर्व ओहायो शाखा का हिन्दी दिवस समारोह 2016

(द्वारा डॉ. शैल जैन, अध्यक्ष— अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति की उत्तरपूर्व ओहायो शाखा)

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति की उत्तरपूर्व ओहायो शाखा का हिन्दी दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। यह आयोजन शिव विष्णु मंदिर, पारमा, ओहायो में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति की उत्तरपूर्व ओहायो शाखा एवं ग्रेटर क्लीवलैंड शिव विष्णु मंदिर ने एक साथ मिलकर नियोजित किया। कार्यक्रम अपने निर्धारित समय 16 अक्टूबर 2016 को संध्याकाल 5.30 बजे से प्रारम्भ हुआ।

कार्यक्रम का आरम्भ पारम्परिक विधि से दीप प्रज्वलन कर किया गया। दीपप्रज्वलन में महाकवि गुलाब खण्डेलवाल, श्रीमती सुशीला मोहनका, पूर्व अध्यक्ष अ.हि.स., डॉ. स्नेह राज श्री अजय चड्ढा, उत्तरपूर्व ओहायो शाखा के निवर्तमान अध्यक्ष, श्री मनहर शाह, मन्दिर समिति की अध्यक्ष डॉ. शैल जैन, अ.हि.स. के उत्तरपूर्व ओहायो शाखा की अध्यक्ष ने मिल कर किया। मंच संचालन श्रीमती रेणु चड्ढा एवं श्रीमती ऋचा माथुर ने बड़ी ही अच्छी तरह किया।

मन्दिर समिति अध्यक्ष श्री मनहर शाह ने बताया कि हिन्दी भाषा एवं भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने में मन्दिर का हमेशा सहयोग रहा है और आगे भी रहेगा। डॉ. शैल जैन ने हिन्दी दिवस का इतिहास संक्षेप में बताया कि 1949 में 14 सितम्बर को ही हिन्दी को भारत के संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया था, तभी से हिन्दी प्रेमी संस्थाएँ 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाने लगी। 1953 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर पूरे भारत में 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। आगे उन्होंने बताया कि भाषा देश का सम्मान और अभिमान है। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति का लक्ष्य हिन्दी भाषा एवं भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाना, प्रचार-प्रसार एवं सुनियोजित करना है। अभी हमारी शाखा में हिन्दी का क्या काम हो रहा है तथा आगे की हमारी समिति की योजनाओं के बारे में श्रीमती किरण खेतान आपको बतायेंगी। किरण खेतान अभी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति के शिक्षण समिति की अध्यक्ष हैं साथ ही ये अभी उत्तरपूर्व ओहायो शाखा की शिक्षण समिति की संयोजिका भी है। किरण खेतान ने बताया कि हमारी शाखा की तरफ से हिन्दी भाषा एवं भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए दो मुख्य काम हो रहे हैं। पहला स्टार टॉक हिन्दी समर कैम्प अमेरिका की सरकार द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम है। इसका खर्च एवं पर्यवेक्षण भी अमेरिका की सरकार के द्वारा ही होता है। इसमें प्रतिवर्ष 50-60 विद्यार्थी रहते हैं और यह हिन्दी समर कैम्प 4 वर्षों से एकरन में चल रहा है। दूसरा सन्डे स्कूल है इसमें पिछले 30 वर्षों से हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति पढ़ाई जाती

है। आगे की योजना— यहाँ की स्थानीय स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई जाये। इसके लिए भी प्रयास हो रहा है। अभी 3 स्कूलों से बात चल रही है। डॉ. शैल जैन ने सभी से अनुरोध किया कि स्थानीय स्कूलों में हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में लाने में हमें आप सबका सहयोग चाहिए। आपकी आवाज उन स्थानीय स्कूलों में पहुँचे जहाँ आपके बच्चे पढ़ते हैं। अगर आप कम्प्यूटर का अच्छा ज्ञान रखते हैं तो आपके सहयोग की भी हमें आवश्यकता है, साथ ही इस शुभ काम के लिए आर्थिक सहयोग भी चाहिए।

हिन्दी दिवस का महत्व नाटक, गीत, कविताओं, छोटी कहानियों, भाषण आदि विभिन्न विधाओं के माध्यम से जनता जनार्दन के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रारम्भ श्रीमती सुगाता चटर्जी के द्वारा 'सरस्वती वंदना' एवं भजन से हुआ। श्री अमृत बृन्दा ने एक लघु कथा के माध्यम से बताया कि हिन्दी भाषा का ज्ञान क्यों आवश्यक है, विशेष कर महिलाओं के लिए। डॉ. चन्द्रकुमार जैन ने अपनी लघु कथाओं के माध्यम से दर्शकों को हँसाते हुए कई शुभ संदेश दिए।

श्री दिलीप भाटिया ने दो गाने अपनी मधुर ध्वनि में सुनाकर सबको मोह लिया। श्रीमती तस्मीन लोखन्डवाला ने औरत के जीवन के सच का वर्णन सरल कविता के द्वारा किया। श्री युगल चावला ने आदरणीय गुलाब खंडेलवाल की कविता गाकर सुनाई। डॉ. आदित्यनजी ने बड़ी लगन से कविता पाठ किया। दो बाल कलाकार अनुष्का दुबे तथा नीलाकाश नागपुर ने डॉ. अशोक लव की लिखी कविताओं का पाठ दोनों ने अलग-अलग अपने मधुर स्वर में किया।

दो नाटकों का सफल मंचन हुआ, पहला बड़े लोगों के द्वारा तथा दूसरा बच्चों के द्वारा किया गया। पहला नाटक श्रीमती प्रतिभा खंडेलवाल द्वारा लिखा और निर्देशित था। इस नाटक का शीर्षक 'भाषा बहता नीर' था। इसमें भाग लेने वाले कलाकार डॉ. शोभा खंडेलवाल, डॉ. आनंद खंडेलवाल, श्रीमती सोना लाहोटी, श्री सुनीत सेनगुप्ता तथा श्री बिमन घोष थे। दूसरा एक लघु नाटक बाल कलाकार क्रिश बंडी एवं माही बंडी ने प्रस्तुत किया। दोनों नाटकों में एक ही संदेश था कि हिन्दी भाषा के शब्दों का गलत उच्चारण होने से शब्द का तात्पर्य ही पूरा बदल जाता है। भाग लेने वाले सभी कलाकारों ने काफी सही तरीके से अभिनय किया तथा दर्शकों को हँसाया।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सुशीला मोहनका ने बताया कि यह शाखा सभी दृष्टि से अ.हि.स. की समितियों में प्रथम श्रेणी में आने की हकदार है। इस समिति में युवा-समिति

सदस्य एवं वार्षिक सदस्यों की संख्या और बढ़नी चाहिए।

एक सामूहिक गीत श्रीमती वंदना हरियानी के निर्देशन में हुआ। स्टेज पर गाने में उनका साथ देने वाली थी श्रीमती मनीषा जैन, श्रीमती अलका खंडेलवाल, श्रीमती सोनिया जैन तथा सुश्री नूपुर खंडेलवाल। गाने के बोल थे 'हम हैं हिन्दुस्तानी, हिंदी भाषा हमको प्यारी है'। अंत में श्रीगुलाब खंडेलवाल ने अपनी कुछ कविताओं से दर्शकों का मन मोह लिया।

अ.हि.स. की उत्तरपूर्व ओहायो शाखा के उपाध्यक्ष, श्री सुनीत जैन ने समिति की ओर से धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने कार्यकारिणी

समिति के सभी सदस्यों, सभी स्वयंसेवकों, मंदिर की प्रबन्धन समिति, इंडिया केफे को भोजन के लिए, टी.वी. एशिया को कवरेज करने के लिए तथा दर्शकों को जिनके कारण ही कार्यक्रम सफल हुआ सबको हृदय से धन्यवाद दिया।

175 से ज्यादा लोगों की उपस्थिति थी। कार्यक्रम के प्रारम्भ में चाय के साथ हल्का जलपान तथा अंत में रात्रि-भोज की व्यवस्था थी। कार्यक्रम लगभग दो घंटों का था। पूरे समय दर्शक प्रसन्न थे तथा मन से कार्यक्रम के साथ जुड़े हुए थे। तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल पूरे समय गूँजता रहा था।



कानपुर शाखा द्वारा कविगोष्ठी और सम्मान समारोह

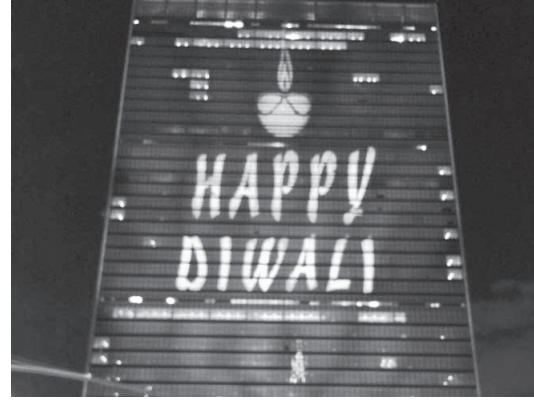
प्रवासियों को मिलाने वाली भाषा

कानपुर : हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर स्वरूप नगर स्थित उत्कर्ष अकादमी में मंगलवार को हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति यूएसए की उत्तर प्रदेश शाखा द्वारा संगोष्ठी हिंदी चेतना पर परिचर्चा की गई। बोस्टन अमेरिका से आए आलोक मिश्र, युवा आस्ट्रेलिया संस्था की सचिव अर्पिता सिंह, डॉ. राजीव राज आदि मौजूद रहे। आलोक मिश्र ने बताया कि हिंदी प्रवासियों को मिलाने का काम करती है। डॉ. प्रदीप दीक्षित ने प्रवासियों के लिए हिंदी को भाषा से बढ़कर जीवन्त संस्कृति बताया। इस दौरान इंग्लैंड से काव्यपाठ कर लौटे कवि सुरेश अवस्थी ने यात्रा संस्मरण सुनाये। इस दौरान राजीव चतुर्वेदी के साथ डॉ. कमल मुसद्दी, डॉ. राजीव राज आदि मौजूद रहे।

अर्पिता ने दिए सुझाव

युवा आस्ट्रेलिया संस्था की सचिव अर्पिता विदेश में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को जो सुविधा मुहैया करायी जाती है उसको लेकर केंद्रीय मंत्रियों के समक्ष अपने सुझाव दिये। अर्पिता ने कहा महँगी फीस, वीजा संबंधी दिक्कतों को लेकर कई एजेंसिज जालसाजी करती हैं। ऐसी एजेंसिज को सरकार द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिये। इसके अलावा एक वेबसाइट मदद है। अर्पिता के सुझावों पर केंद्रीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने कहा आगामी जनवरी माह में होने वाले प्रवासी भारतीय सम्मेलन में सभी सुझावों पर चर्चा होगी।

पहली बार : संयुक्त राष्ट्र संघ में दिवाली



इसे भारत की बढ़ती ताकत कहें या पूरी दुनिया में दीवाली की लोकप्रियता में लगातार हो रहा इजाफा, अब संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) में इस त्योहार को मनाया गया है। ऐसा पहली बार है जब दुनिया के इस प्रमुख संगठन ने दीवाली मनाई है। यूएन के इस कदम पर भारत की ओर से धन्यवाद कहा गया है।

सेलिब्रेशन के लिए शनिवार 29 अक्टूबर 2016 को संयुक्त राष्ट्र के न्यूयॉर्क स्थित हेडक्वार्टर की इमारत पर 'हैपी दिवाली' का संदेश लिखा गया। इस मेसेज के साथ एक दीपक भी दिखाई दिया। यह संदेश ब्लू रंग में लिखा लिया गया।

संयुक्त राष्ट्र में भारत के एंबेसडर और स्थायी प्रतिनिधि सैयद अकबरुद्दीन ने यूएन की इस पहल का स्वागत किया और ट्विटर पर इसकी तस्वीर साझा की। उन्होंने ट्वीट किया, 'हैपी दिवाली। संयुक्त राष्ट्र पहली बार दिवाली सेलिब्रेट कर रहा है। इस पहल के लिए UNPGA को धन्यवाद।'।

इससे पहले 2014 में भी संयुक्त राष्ट्र ने दिवाली के मद्देनजर एक अहम कदम उठाया था। तब इस संस्था ने दिवाली के दिन को नॉन-मीटिंग डे (इस दिन कोई बैठक नहीं) घोषित कर दिया था। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा की तरफ से बाकायदा एक प्रस्ताव को स्वीकार किया गया था।



सुधीश पचौरी

यथार्थ जी घर पर नहीं हैं

कहते हैं श्रेष्ठ रचनाकार वह है जो अपनी शैली ईजाद करे। इस मामले में कहा जा सकता है कि अपने खिलदंडे अंदाज़ वाली शैली के कारण डॉ. पचौरी बहुत दूर से पहचान में आ जाते हैं। आलोचना, व्यंग्य, निबंध और कविता आदि

साहित्य की कई विधाओं में एक साथ सक्रिय, कई प्रतिष्ठित पुरस्कार-प्राप्त सुधीश जी मजे-मजे में बड़ी और गम्भीर बात कर जाते हैं। बहुत बार तो उनका महीन व्यंग्य बड़े-बड़ों के सिर पर से गुजर जाता है। तो आप भी मजे-मजे में उनका एक व्यंग्य पढ़ें। संपर्क— B 1/7 हिन्दुस्तान टाइम्स अपार्टमेंट, मयूर विहार, दिल्ली-110092 (M) 09811713296 spachauri17@gmail.com

जब से सुना है कि कुछ कहानियाँ अपने समय के यथार्थ से टकराई हैं, तब से सोच रहा हूँ कि पता करूँ कि टकराने के बाद कहानियों का क्या बना और अपने यथार्थ भैया का क्या हाल है? मैंने कथाकार को फोन लगाया— हलो! सुना है कि तुम्हारी कहानियाँ कल यथार्थ से कुछ ज्यादा ही टकराई? क्या हाल है कहानियों का? सलामत तो हैं? कथाकार बोला— मेरी कहानियाँ यथार्थ की बाप हैं। उनका क्या बिगड़ना? पूछना है, तो यथार्थ से पूछो कि उसके क्या हाल हैं? मैंने यथार्थ जी के घर फोन किया और एक सांस में कह गया— हलो यथार्थ जी, मैं पचौरी बोल रहा हूँ। आप कैसे हैं? ठीक-ठाक तो हैं न? उधर से मिसेज यथार्थ की कड़क आवाज थी— हलो, ठीक-ठाक हैं जी। लेकिन भाई साब, आप ऐसी बात क्यों पूछ रहे हैं? मैं बोला— पता चला था कि कुछ कहानियाँ अपने यथार्थ भैया से टकराईं। इसलिए परेशान था कि पता तो करूँ कि यथार्थ भैया कैसे हैं? आपने बताया, तो कुछ तसल्ली हुई। तभी खुले रह गए फोन पर उधर से मैडम जी की आवाज सुनाई पड़ी— ये कौन है, जो आपके पीछे पड़ा है? कह रहा है कि किसी गोष्ठी में कुछ कहानियाँ आपसे टकराई हैं? ये आपने क्यों नहीं बताया? कौन थीं वे बदतमीज कहानियाँ, जो आपसे टकराईं? तुम्हारे पाँव भी इन दिनों घर में नहीं टिकते।

पता नहीं, कैसी-कैसी जगहों पर जाने का शौक चरता रहता है। पिछले तीस साल से सुनती आ रही हूँ, मेरे तो करम फूट गए। क्या मालूम था कि मेरे करम में ऐसा लूज कैरेक्टर लिखा है? आखिरी बार कहे दे रही हूँ— साहित्य में जाना बंद कर दो, वरना घर छोड़कर चली जाऊँगी। न माने, तो डोमेस्टिक वायलेंस का केस कर दूँगी। फिर रोते रहना। फोन में सीन क्लियर दिख रहा था। धमकी सुन यथार्थ ने माथा पकड़ लिया कि यह क्या आफत आई? बच्चों की कसम ले लो भागवान, जो मैं किसी से टकराया होऊँ।

मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि कोई कहानी टकराई है? मिसेज यथार्थ बोलीं— मुझे कुछ नहीं मालूम। वह आपका कलमुँहा दोस्त है

न पचौरी, वह बता रहा था कि टकराई हैं। कुछ हुआ होगा, तभी कह रहा है। मैंने फोन काट दिया और यथार्थ से मिलने उसके घर पहुँचा, तो वह कुरता-पाजामा पहने पैरों में चप्पल अटकाए आँखें मलता हुआ आया। मैं उसके सामने बैठ गया, तो वह बोला— यार, यह क्या मनगढ़ंत कहानी बना रखी है तूने, मुझे मरवाएगा क्या? मैंने यथार्थ की आँखों में आँखें डालकर पूछा— अच्छा सच बता, क्या गोष्ठी में कहानी नहीं टकराई तुझसे?

यथार्थ— यार, किसकी बात करते हो? कुछ घटिया सी कहानियाँ आपस में टकरा रही थीं। मैं तो सिर्फ बीच-बचाव कर रहा था। मैंने कहा कि छोड़ो भाई साब, लेकिन मेरी इतनी अरज जरूर मान लो कि आगे से गोष्ठियों में नहीं जाना है। आजकल का कानून बड़ा संवेदनशील है। आज की मनचली कहानी-कविता का कोई भरोसा नहीं। वे तो टकराने को तैयार बैठी रहती हैं।

अगर कोई कहानी-कविता टकरा गई, तो लेने के देने पड़ जाएँगे। वह बोला— मेरा नाम ले लेकर कइयों ने 'नोबेल' झटक लिए, कइयों ने 'बुकर' हड़प लिए। हिन्दी के कुछ नक्कालों ने तो 'अकादेमी' तक को नहीं छोड़ा। मैंने कहा— तुम ऐसा करो कि साहित्य से कुछ दिनों की छुट्टी ले लो, और गायब हो जाओ। मेरी यह सलाह उसे इतनी पसन्द आई कि वह देखते-देखते गायब हो गया। एक दिन अफवाह उड़ी— हिन्दी कथाकारों के डर से यथार्थ कई दिनों से गायब है। तब से अब तक हर साहित्यकार यथार्थ को ढूँढ़ रहा है और यथार्थ है कि छुट्टी के मजे ले रहा है।

कुछ हल्का-फुल्का

इंजीनीयरिंग का स्कोप

डॉक्टरी की पढ़ाई के बाद आप डॉक्टर ही बनते हैं। ...लेकिन इंजीनीयरिंग की पढ़ाई के बाद आप चपरासी से लेकर मुख्यमंत्री तक कुछ भी बन सकते हैं। और हाँ, भाग्य साथ रहा तो इंजिनियर भी। कहने का मतलब है? इंजिनियरिंग में बहुत स्कोप है।

तापमान का प्रभाव

टीचर : ऐसा कोई उदाहरण बताओ, जो साबित करे कि गर्मी से चीजें फैलती हैं और ठंड में सिकुड़ती हैं।

पप्पू : गर्मियों में दिन बड़े होते हैं और सर्दियों में छोटे।

नया पता

ग्राहक : एक स्मॉल पिज़्ज़ा एक्स्ट्रा टॉपिंग्स के साथ भेज दो।
डॉमिनोज : जी बिलकुल सर, प्लीज़ अड्रेस बता दीजिए।
ग्राहक : प्रीतमपुरा स्टेट बैंक की लाइन में 22वां नंबर है, ग्रीन शर्ट।

ठण्ड और फैशन

एक औरत को ठिठुरते देख पप्पू ने अपना कम्बल उसे दे दिया। उसने कम्बल फेंकते हुए कहा, 'गरीब नहीं हूँ, शादी में जा रही हूँ।'

ओबामा ने ओवल कार्यालय में जलाया था दिवाली का पहला दीया

अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने व्हाइट हाउस के ओवल कार्यालय में पहली बार दीया जलाकर दिवाली का जश्न मनाया और उम्मीद जताई कि उनके बाद आने वाले नेता भी इस परंपरा को जारी रखेंगे। वर्ष 2009 में, व्हाइट हाउस में निजी तौर पर दिवाली का जश्न मनाने वाले पहले अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा ने अपने ओवल कार्यालय में अपने प्रशासन के कुछ भारतीय-अमेरिकियों के साथ दीया जलाने के बाद इस शानदार क्षण का जिक्र फेसबुक पोस्ट में किया। ओबामा ने कहा, मुझे वर्ष 2009 में व्हाइट हाउस में दिवाली के जश्न की मेजबानी करने वाला पहला राष्ट्रपति बनने का गौरव प्राप्त हुआ था।

मिशेल और मैं कभी नहीं भूल सकते कि भारत के लोगों ने किस तरह बाँहें फैलाकर और दिल खोलकर हमारा स्वागत किया था और दिवाली पर मुंबई में हमारे साथ डांस किया था।

उन्होंने व्हाइट हाउस के फेसबुक पेज पर कहा, इस साल, मुझे ओवल कार्यालय में पहली बार दीया जलाने का सम्मान मिला। यह दीया इस बात का प्रतीक है कि किस तरह से प्रकाश हमेशा ही अंधकार पर विजय हासिल करता आया है। मैं उम्मीद करता हूँ कि भविष्य के राष्ट्रपति इस परंपरा को जारी रखेंगे। ओबामा की यह पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल हो गई।

ओबामा ने कहा, पूरे ओबामा परिवार की ओर से, मैं आपको और आपके प्रियजन को इस दिवाली पर शांति एवं खुशियों की शुभकामनाएँ देता हूँ। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, अमेरिका और दुनियाभर में जो भी लोग रोशनी के इस त्योहार को मना रहे हैं, उन्हें दिवाली मुबारक हो। चूँकि हिंदू, जैन, सिख और बौद्ध दीया जलाते हैं, प्रार्थनाओं में इन्हें शामिल करते हैं, अपने घर सजाते हैं और प्रियजन का स्वागत करने के लिए एवं जश्न मनाने के लिए अपने द्वार खोलते हैं हम मानते हैं कि यह दिन बुराई पर अच्छाई की और अज्ञान पर ज्ञान की विजय का प्रतीक है।

उन्होंने कहा, यह हमारे साझा अमेरिकी अनुभव के बारे में व्यापक सत्य भी बोलता है। यह इस बात की याद दिलाता है कि जब हम मतभेदों से परे देखते हैं तो कितना कुछ संभव हो जाता है। यह उन

उम्मीदों और सपनों की झलक है, जो हमें बाँधती हैं। ओबामा ने कहा कि यह समय इन संबंधों को गहरा करने के साझा कर्तव्य का नवीनीकरण करने का है, एक दूसरे की जगह खुद को रखकर देखने का और एक दूसरे की नजर से दुनिया को देखने का और दूसरों को भाइयों एवं बहनों और साथी अमेरिकियों की तरह अपनाने का है। राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार हिलेरी क्लिंटन भारतीय-अमेरिकी समुदाय में खासी लोकप्रिय हैं। उन्होंने हिंदुओं, सिखों, बौद्धों और जैन लोगों को दिवाली के अवसर पर मुबारक दी।



हिलेरी ने कहा रविवार को दुनिया भर के लगभग एक अरब हिंदू, जैन, सिख और बौद्ध समुदाय के लोगों ने रोशनी का त्योहार यानी दिवाली मनाया। इनमें 20 लाख से ज्यादा अमेरिकी शामिल हैं। इन धर्मों के अनुयायियों के लिए दीया जलाना इस बात का प्रतीक है कि प्रकाश अंधकार पर, ज्ञान अज्ञान पर और अच्छाई बुराई पर विजय प्राप्त करती है। रिपब्लिकन उम्मीदवार

डोनाल्ड ट्रंप की ओर से ऐसा कोई बयान नहीं आया लेकिन उनकी पुत्रवधू लारा ट्रंप ने पिछले सप्ताह वर्जीनिया के एक हिंदू मंदिर में दिवाली मनाई थी। रिपब्लिकन नेशनल कमिटी के अध्यक्ष रिन्स प्रीबस और सहअध्यक्ष शैरोन डे ने कहा कि रिपब्लिकन्स होने के नाते वे देशभर में धार्मिक स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं ताकि सभी अमेरिकी इन महान परंपराओं को समुदायों के साथ साझा कर सकें।

अध्यक्ष प्रीबस ने कहा, हिंदू, जैन और सिख धर्म के हमारे दोस्त और पड़ोसी रोशनी के इस त्योहार को मनाते हैं, ऐसे में दिवाली एक खास अवसर बन जाता है। उन्होंने कहा, इस जश्न के दौरान हमें यह तो स्मरण होता ही है कि इतने प्रवासियों द्वारा लाई गई परंपराओं ने हमारे देश को और अधिक मजबूत और विविध बनाया है, इसके साथ ही हमें यह भी याद आता है कि हम कितने खुशकिस्मत हैं जो हमें इतना आशीर्वाद प्राप्त है।



अध्यक्ष का संदेश

नमस्कार, पाठको !

विक्रम संवत् 2073 और दिवाली सन 2016 के पावन पर्व पर आप सबको अनेक शुभकामनाएँ।

क्या कहें, देखते-देखते एक और वर्ष बीत गया।

विश्व भर में सबकी नजरें भारत देश के विकास और उसकी अनेक गतिविधियों पर लगी हुई है। भारत में 'स्वच्छ भारत अभियान' और सरकार के संकल्प पूरे हो रहे हैं। तांत्रिक, औद्योगिक और आर्थिक क्षेत्र में नई मिसालें कायम हो रही हैं। क्रीड़ा, नाट्य और कला क्षेत्र में अनेक प्रयास अवलोकनीय हैं।

देश के विकास के साथ-साथ राजभाषा का गौरव भी सराहनीय है। भारत के प्रधान मंत्री की मातृभाषा गुजराती है लेकिन वे जिस कुशलता और सहजता से हिंदी का प्रयोग करते हैं वह आश्चर्यजनक प्रेरक और सुखद है। इनसे यदि हम प्रेरणा लें तो सभी हिंदी में संवाद करें। भाषा सिर्फ संपर्क का माध्यम ही नहीं है बल्कि आत्मीयता का प्रतीक भी है।

बदलाव की हवा सारे विश्व में फैली हुई है। हाल में ही अमरीका के राष्ट्रपति पद के चुनाव हुए जो अपने पूर्ववर्ती चुनावों से अलग रहे। जो व्यक्ति व्हाइट हाउस के लिए चुना जाता है तो वह बदलाव का प्रतीक होता है। एक तरफ प्रथम महिला अध्यक्ष के मोर्चे पर डेमोक्रेटिक सदस्य थी और दूसरी ओर प्रथम व्यापारिक अध्यक्ष जिन्हें न तो सेना का अनुभव था और न ही राजकार्य का। पूरे विश्व का ध्यान इस ओर लगा हुआ था। जो भी नतीजा निकले उसे सब स्वीकार करें यही लोकतंत्र का तकाजा है।

इस वर्ष के चुनाव में विज्ञापनों में दिखाई दी एक चीज अविस्मरणीय रहेगी। भारत में विगत आम चुनाव में बदलाव का एक मुख्य नारा था—

अबकी बार मोदी सरकार

इसे इस बार के अमरीकी चुनावों में रिपब्लिकन ने बार-बार घोषित किया।

अबकी बार ट्रंप सरकार।

क्या यह हिंदी और भारत के लिए सम्मान की बात नहीं कि अमरीका के राष्ट्रपति के चुनावों में एक उम्मीदवार इसे बार-बार दुहरा रहा है?

हिंदी का यह गौरव और आगे के प्रयास हम सब पर निर्भर हैं। इस कार्य में हम आप सब का साथ और सहयोग चाहते हैं। कोई भी सूचना और सुझाव हों तो हमें अवश्य लिखें।

भारत में 7-9 जनवरी 2017 को बंगलुरु में 'प्रवासी भारतीय दिवस' आयोजित हो रहा है। इस दौरान आपकी संस्था की ओर से अनेक कार्यक्रम और निदेशक कार्यरत रहेंगे। हमारी ओर से उन सबको बहुत-बहुत बधाई और कार्य की सफलता के लिए हार्दिक प्रार्थना।

सभी सदस्यों, कार्यकर्ताओं, संयोजकों, न्यासी मंडल और निदेशकों को अग्रिम धन्यवाद जिन्होंने वर्ष 2016 में हमारे साथ चलाकर संगठित कर दिया। 'विश्वा' के संपादक महोदय को भी उनकी हिंदी सेवाओं के लिए धन्यवाद।

प्रणाम, धन्यवाद।

आपका

स्वपन धैर्यवान

(2016-17)

सेल : (281) 382 0348

706 Overdell Dr, Sugarland, Texas 77479